बच्चों के नाना गुरु

©

राम चमक रहे भानु समाना

प्रकाशक :

साधुमार्गी पब्लिकेशन

अन्तर्गत – श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

ISBN : 978-93-86952-43-1

बच्चों के नाना गुरु

प्रथम संस्करण : मार्च 2019
प्रतियाँ : 5000

मूल्य : 70/-

प्रकाशक
साधुमार्गी पब्लिकेशन
अन्तर्गत - श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
श्री जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड
गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.)
दूरभाष : 0151-2270261

मुद्रक :
तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर
मो. 9314962474/75

प्रकाशकीय

अम्मा–दादी अब बच्चों को कहानियां नहीं सुनातीं। न उनकी रुचि रह गई है और न ही उन्हें ऐसी कहानियां याद हैं जो बच्चों को अपनी सभ्यता, संस्कृति, संस्कार और धर्म से जोड़े। बच्चे अब मोबाइल और वीडियो गेम के भरोसे हैं। नतीजा है बच्चों में पाश्चात्य संस्कृति के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। वह संस्कृति जिससे खुद वहां के लोग उब गये हैं और उससे बाहर निकलने के लिए उनकी आंखें भारत की ओर टकटकी लगाये हैं। पाश्चात्य संस्कृति बच्चों को भारतीय संस्कृति और संस्कार से दूर कर रही है, जिस पर विशेषज्ञ भी चिंता जाहिर कर रहे हैं।

जब बच्चों को कहानी सुनाने की प्रथा लुप्त हो चुकी है, तब कहानी द्वारा आचार्य श्री नानालाल जी के जीवन से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं को कहानी के माध्यम से इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। आचार्य श्री नानालाल जी ने अपना सारा जीवन धर्म, जीव दया और समाज हित के कार्यों में लगा दिया। अपने जीवन की दिशा बदलने का श्रेय हजारों लोगों ने आचार्य श्री को दिया है। आचार्य श्री नानालाल जी के विराट व्यक्तित्व के समक्ष सारे विशेषण गौण हो जाते हैं। उनकी विशेषताओं का वर्णन करना सही मायनों में सूर्य को दीपक दिखाने के समान है।

आपके व्यक्तित्व और कृतित्व को किसी एक पुस्तक में समेटना नामुमकिन है। तभी तो आपके जीवन पर पहले भी अनेक पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। पर कोई भी सम्पूर्ण नहीं। आगे भी लिखी जायेंगी। यह पुस्तक अब तक लिखी गई सभी पुस्तकों से अपनी शैली के कारण अलग है। इसकी प्रस्तुति रोचक और ज्ञानवर्धक है। प्रत्येक बच्चे के लिए उपयोगी साबित हो सकने वाली यह पुस्तक प्रकाशित करते हुए हम आशान्वित हैं कि यह पुस्तक अपने लक्ष्य को प्राप्त करेगी।

पुस्तक के प्रकाशन में पूरी सावधानी बरती गई है फिर भी यदि किसी स्तर पर कोई भी त्रुटि हो गई हो तो इसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं। हम उनके प्रति आभारी होंगे जो किसी भी प्रकार की त्रुटि से हमें अवगत करायेंगे।

संयोजक
साधुमार्गी पब्लिकेशन
अंतर्गत
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

इस पुस्तक में साधु-साध्वी सम्बंधित जितने भी चित्र हैं, वे काल्पनिक हैं। उनका इस कथा के पात्रों से कोई सम्बंध नहीं है। विषय को सरसतापूर्वक समझने के लिए काल्पनिक चित्रों का निर्माण किया गया है।

संघ के प्रति अहो भाव

हे पितृ तुल्य संघ! हे आश्रयदाता संघ!

संसार के प्रत्येक जीव की रक्षा के लिए सतत प्रयत्नरत संघ! तुम्हारी शीतल छांव तले हम अपने परिवार के साथ तप–त्याग से युक्त आध्यात्मिक, सुखद जीवन जी रहे हैं। तुम्हारे ही आश्रय मे रहकर हमने अपने नन्हें चरणों को आध्यात्मिकता की दिशा में बढ़ाया है। तुमने ही हमें आत्मा के अन्वेषण हेतु प्रेरित किया। तुम्हारी ही प्रेरणा से प्रेरित होकर हमने अपने जीवन को सन्मार्ग की ओर बढ़ाया है। इस हेतु हम संघ का अभिवादन करते हैं।

संघ ने हम अकिंचन को इस पुस्तक 'बच्चों के नाना गुरु' के माध्यम से सेवा का अनुपम अवसर प्रदान किया। इस हेतु हम अपने आपको सौभाग्यशाली समझते हैं। अन्तर्भावना से संघ का आभार व्यक्त करते हुए यह विश्वास करते हैं कि भविष्य में भी परम उपकारी श्री संघ शासन हमें सेवा का अवसर प्रदान करता रहेगा।

अर्थ सहयोगी

सुमति कुमार, अशोक कुमार, पुखराज सेठिया

दिनहट्टा/बीकानेर

।। सेवा है यज्ञकुण्ड समिधा सम हम जलें।।

अनुक्रमणिका

चमत्कार बनाम स्थानकवासी परंपरा..... 1
माँ : पहली पाठशाला..... 3
नाम की शक्ति..... 6
कर्म और उसके प्रतिफल..... 9
क्या वे जादू करते थे?..... 15
सेवाभावी..... 19
श्रद्धा का अद्भुत प्रभाव..... 21
चरण रज का महत्त्व..... 24
कल्पना को किया साकार..... 27
समीक्षण ध्यान..... 28
कालचक्र..... 30
निर्लिप्त नाना गुरु 34
इन्द्रिय विजेता नाना गुरु..... 37
नाना गुरु का अदम्य साहस..... 40
नाना गुरु की समता..... 42
श्रद्धा का प्रतिफल..... 47
नाम स्मरण का अचिन्त्य प्रभाव..... 50
नाना गुरु की करुणा..... 52
निराशा को उत्साह में परिवर्तित करने वाले नाना गुरु..... 54
संयमित वाणी..... 57
मोहातीत गुरु नाना..... 59

दृढ़ निश्चयी..... 61
अनासक्त..... 63
पूर्वाभास..... 65
सथारा : आत्मघात नहीं, आत्मोत्कर्ष..... 67
पैनी दृष्टि..... 69
यह मजाक नहीं है..... 71
क्या सजोड़े दीक्षा ले सकते हैं ?..... 74
भाग्यवानों के भूत कमावे..... 76
निर्देश नहीं स्वयं वैयावृत्य में संलग्न-सेवा भावी..... 78
अध्ययनशील..... 79
नाना गुरु की साहित्यिक कृतियाँ..... 81
जाति-सम्प्रदाय से उपरत..... 84
जहा पुण्यस्स-तहा तुच्छस्स..... 86
अछूतोद्धारक..... 88
नौ महीने केवल मट्ठा ही..... 90
गुरु मेरी भूल हो गई..... 92
मर्यादाओं के रक्षक..... 94
प्रभुता में लघुता..... 97
संयम की जागरूकता..... 99
क्या पाया..... 102

चमत्कार बनाम स्थानकवासी परंपरा

चमत्कार शब्द का सामान्य अर्थ है - आश्चर्य। जो कार्य भौतिक जगत में असंभव लगता है वह कार्य होते हुए दिखने पर उसे आश्चर्य माना जाता है। सामान्य लोग उसे चमत्कार नाम दे देते हैं।

साधु-साध्वी, आचार्य या तीर्थंकर कभी चमत्कार करते नहीं हैं। लेकिन जिसे सामान्य जनता चमत्कार कहती है, वह दो कारणों से उत्पन्न होता है - एक तो श्रद्धा, दूसरा सम्यक् दृष्टि देव द्वारा जिनशासन की प्रभावना एवं सुसाधु की सेवा हेतु किये जाने वाले कार्य।

श्रद्धा - श्रद्धा पतिव्रता धर्म के समान है। जैसे पतिव्रता स्त्री अपने पति के लिए पूर्ण समर्पित होती है तथा उसको हर स्थिति में श्रेष्ठ मानती है। जो कुछ उसके साथ अच्छा होता है उसे वह अपने पति की देन मानती है। उसे पूर्ण विश्वास रहता है कि पति के रहते मेरा कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता है। जैसे सेठ सुदर्शन - श्रीमद् अंतकृतदशांगसूत्र, अर्जुनमाली प्रकरण में।

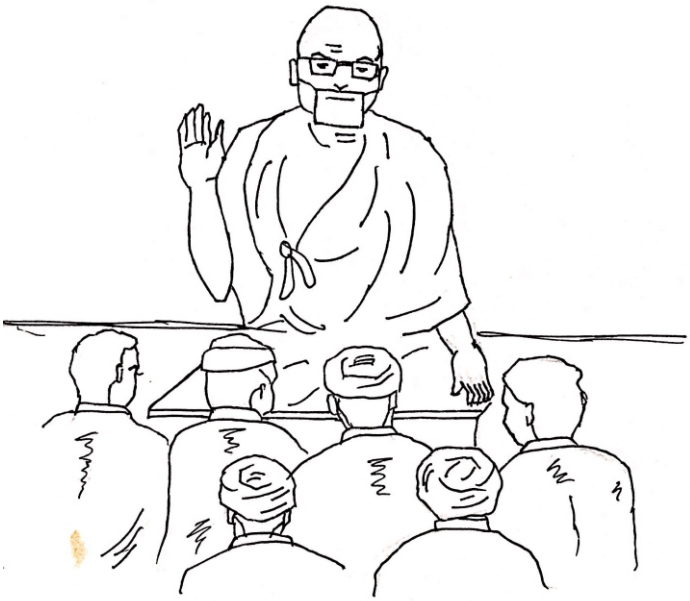

देवद्वारा - श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के प्रथम गाथा में कहा गया है जिसका मन तप, संयम रूपी उत्तम धर्म में रचा

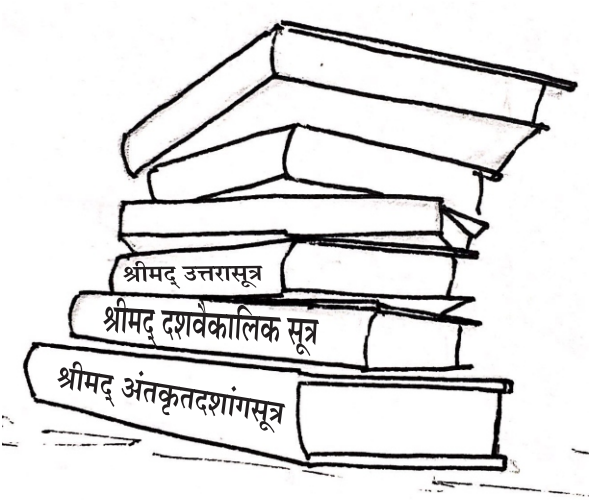

हुआ है उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। श्रीमद् उत्तरासूत्र अध्य. 12 हरिकेशी मुनि प्रकरण में तथा सीता सती, सुभद्रा, द्रोपदी आदि के प्रकरण में देवों के सहयोग से ही सत्य प्रकट हुआ है। ऐसे अनेक उदाहरण शास्त्रों में भरे पड़े हैं जहाँ देवों द्वारा जिनशासन की प्रभावना एवं सत्य के सहयोगरूप में आश्चर्य हुए हैं जिन्हें लोग चमत्कार कहते हैं। देवों द्वारा किए गए कार्य एवं श्रद्धा के फलस्वरूप होने वाले कार्य को भक्त अपने श्रद्धेय का चमत्कार नाम देते हैं।

यह पुस्तक विशेषकर बच्चों एवं जैनधर्म से अनभिज्ञ लोगों को लक्ष्यकर लिखने का प्रयास किया गया है। इसलिए गुरु महिमा को समझाने के लिए गुरु के गुणसागर में वे कुछ गुण रूपी बूंदें निकालकर रखी गई हैं, तथा श्रद्धेय को श्रद्धा के फल से भी परिचित कराने का प्रयास किया गया है। जिस घटना प्रसंग में चमत्कार हुआ है वह काल्पनिक नहीं है, सत्य है ऐसा हुआ है। लेकिन आचार्य श्री नानेश ने यह चमत्कार नहीं किया है, यह भक्तों की श्रद्धा का फल है अथवा उनकी सेवा में रहने वाले देवों द्वारा शासन प्रभावना के लिए हो सकता है।

* * *

माँ : पहली पाठशाला

व्यक्ति को अन्तरंग या बाह्य किसी भी प्रकार की स्वच्छता करनी हो तो उसके लिए उसी प्रकार के आदर्श की भी अपेक्षा होती है। बाह्य स्वच्छता के लिए दर्पण की आवश्यकता होती है जिसमें अपना प्रतिबिम्ब देखकर व्यक्ति अपनी बाहरी गंदगी को साफ कर लेता है, किन्तु आंतरिक जीवन में भरे राग, द्वेष, भय, मोह, विजय, कषाय की मनोमलिनता को स्वच्छ करने के लिए बाहरी आदर्श काम नहीं कर सकता है। उसके लिए उसी प्रकार के परिशुद्ध आदर्श की आवश्यकता होती है।

वह आदर्श कांच का टुकड़ा नहीं अपितु किसी संयमनिष्ठ महायोगी का जीवनवृत्त ही हो सकता है। ऐसे महायोगी हैं - आचार्य श्रीनानेश। आचार्यश्री जैन समाज के ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के और अध्यात्म जगत के एक दैदीप्यमान नक्षत्र थे, जिनके विचार और आवरण का समीक्षण समता से अनुरंजित और पूर्ण संयम-साधनानिष्ठ हैं। ये महायोगी उन विरल विभूतियों में है - जिनसे भव्य आत्माएँ लाभान्वित होती हैं। ऐसे महायोगी के जीवन संस्मरण निश्चय ही सरल आत्माओं के लिए एक आदर्श का काम करते हैं।

आचार्य श्री नानेश के व्यक्तित्व और कर्तृत्व को शब्दों की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। उनके विराट एवं भव्य जीवन की संपूर्ण छवि कोई भी अंकित नहीं कर सकता। क्या लोकोत्तर ? क्या सामाजिक ? क्या धार्मिक ? सभी दृष्टियों से उनका जीवन दिव्य है। हम जीवन निर्माण की दिशा में जब भी और कुछ भी पाना चाहें, उनके जीवन से पा सकते हैं। आवश्यकता है केवल देखने वाली दृष्टि की और उस दृष्टि की सृष्टि के रूप में अवतरित करने की।

एक माँ अपनी संतान के लिए संस्कार एवं जीवन पथ प्रदर्शन के लिए जन्मदात्री व प्रथम पाठशाला के रूप में होती है। वह कच्ची मिट्टी रूप अपनी संतान को एक दिव्य स्वरूप में गढ़ने के

लिए महापुरुष के जीवन को आदर्श रूप में प्रस्तुत करे तो संतान को धर्मनिष्ठ एवं कर्त्तव्यनिष्ठ नागरिक बनाकर स्वयं के भविष्य को भी सुरक्षित कर उसे कलयुग में समता से जीने की कला सिखा सकती है।

महापुरुषों के जीवन घटनाक्रम को बच्चों के सामने प्रस्तुत कर टी.वी. और मोबाइल जैसे विकृत मनोरंजन के साधनों से दूर हटाया जा सकता है तथा एक बच्चे के माध्यम से दूसरे बच्चे और उनके परिवार और अन्य व्यक्तियों को भी धर्म के सम्मुख किया जा सकता है। ऐसा ही एक काल्पनिक प्रयास किया है जिसे यदि हकीकत रूप दिया जाय तो वह एक संस्कार पाठशाला बन सकती है - शुरुआत की है एक बच्चे से -

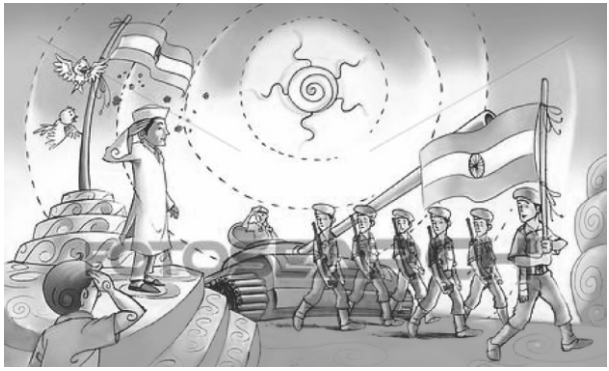

मम्मा! मम्मा! .....क्या आज 26 जनवरी या 15 अगस्त है? देखो-देखो बाहर जल्दी आओ कितनी बड़ी रैली है, सबने एक जैसी यूनिफार्म पहनी है। मम्मा! दादा-दादी और चाचा भी हैं। आप क्यों नहीं गये? क्या बच्चे भी जा सकते हैं?

8 वर्षीय बालक मौलिक एक ही श्वास में माँ की तरफ दौड़ता हुआ इतनी बातें बोल गया। उसकी बात सुनकर माँ मौलिक को साथ लेकर झरोखे में खड़े होकर रैली देखकर कहती हैं -

बेटा! आज आचार्य श्री नानेश की जन्म तिथि है। उसी उपलक्ष्य में यह रैली है। माँ कल तो आचार्य श्री रामेश पधारे। ऐसा दादी कह रही थी, तो क्या दो-दो आचार्य होते हैं?

नहीं, बेटा! आचार्य श्री नानेश तो आचार्य श्री रामेश के गुरु थे।

मम्मा! क्या आपने आचार्य श्री नानेश को देखा है? क्या आप मुझे उनके बारे में बताओगी?

मैं एग्ज़ाम देने जाते समय दादा के पैर छूने गया तो दादा ने कहा - पेपर शुरू करने से पहले जय गुरु नाना आँख बंद करके पांच बार बोलना, फिर लिखना शुरू करना। मैंने ऐसा ही किया था। मेरे सब उत्तर सही थे। तब से मैं हमेशा जय गुरु नाना बोलकर सब काम शुरू करता हूँ।

माँ उनके नाम में ऐसा क्या है? उन्होंने ऐसा क्या कार्य किया था? क्या सभी लोग उनका नाम लेते हैं? सण्डे को दादी कह रही थी कि - किसी के यहाँ चोर आये थे वह भी नाना गुरु के नाम से भाग गये। क्या यह सच है?

मम्मा प्लीज! मुझे सब बात नाना गुरु की बताओ ना।

(बच्चों के प्रश्नों से झुंझलाइये नहीं, बल्कि उन्हें शिक्षा देने का एक महान् अवसर समझकर उसकी जिज्ञासाओं को बढ़ाइए, उस समय वह एकाग्र होकर आपके उत्तर को सुनेगा तथा आपका संतोषप्रद और स्नेह भरे शब्दों में दिया गया उत्तर सफेद कागज पर सुंदर चित्रकारी का कार्य करेगा।)

बेटा! तुम मेरी एक बात मानोगे? हाँ मम्मा, मैं आपकी बात मानूंगा यदि आप मुझे नाना गुरु की बहुत सारी बातें बताओगी तो।

ठीक है! कल से आप खाना खाते हुए टी.वी. नहीं देखोगे तो मैं एक घंटा रोज तुम्हें नाना गुरु के बारे में बताऊंगी।

ओके मम्मा! थैंक्यु मम्मा!

चलो अब जल्दी से तैयार हो जाओ, स्कूल बस आने वाली है।

(मध्यान्ह 2 बजे मौलिक स्कूल से आ गया। थोड़ी देर खेलने के बाद-)

मम्मा! मुझे जल्दी से होमवर्क करवा दो..... फिर मेरे कोचिंग का टाइम हो जाएगा। कोचिंग से आकर खाना खाने के बाद मम्मा कहानी सुनाएगी....

(खाना खाने के बाद....)

मम्मा! जल्दी कहानी सुनाओ, मेरे सोने का टाईम हो जाएगा।

* * *

नाम की शक्ति

मम्मा ! क्या गुरु नाना के नाम से आतंकवादी भी भाग जाते हैं ?

हाँ बेटा।

कन्हैयालालजी भूरा कूच बिहार में रहते थे, एक दिन शाम को कुछ डकैत उनके घर में घुस आये। डाकुओं ने उनके पोते पवन को सिर के पास रिवाल्वर लगा दिया और भूराजी को धमकी दी - "चिल्लाना मत, नहीं तो इसको गोली मार दूँगा। सोना, चाँदी, नगदी जो कुछ हो हमें सौंप दो।"

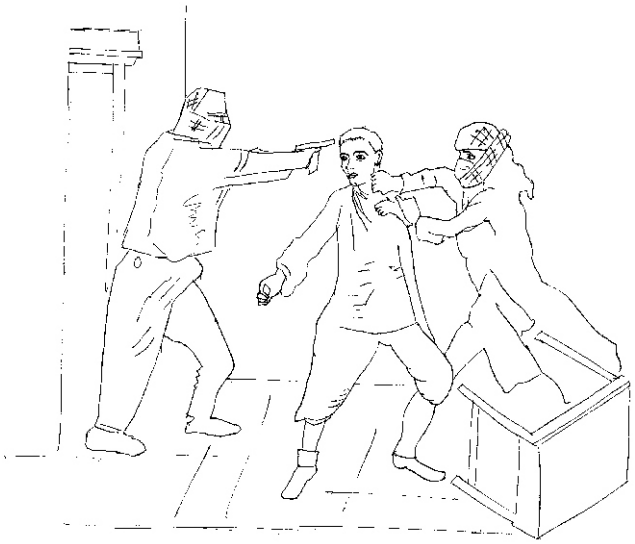

उन दिनों भूराजी और उनके एक बंगाली मित्र समता दर्शन और व्यवहार के बंगला अनुवाद में लगे हुए थे, वो चार दिन पूर्व ही भीनासर में गुरुदेव के दर्शन करके लौटे थे। उन्होंने भीनासर में गुरुदेव से समता समाज रचना की योजना ज्ञानस्थ की थी। उसी का प्रयोग कर उन्होंने डाकुओं से कहा - आपको जो लेना हो, ले लो, उसे छोड़ दो। ऐसा कहकर भूराजी बैठ गए। डाकुओं ने रिवाल्वर हटा ली। भूराजी और

उनकी धर्म पत्नी जय गुरु नाना का जाप जोर-जोर से करने लगे। उन डाकुओं ने गुरुदेव के नाम पर गाली देते हुए नाना को पुकारने की मनाही कर दी। भूराजी ने पूछा - क्या पुकारने से आ जायेंगे? 'डाकुओं ने कहा - सचमुच में आ जायेंगे।' भूराजी कुछ नहीं बोले और मन ही मन जाप करने लगे। थोड़ी देर में बाहर से उनके पड़ोसी आये। डाकुओं ने उसे पकड़ा परन्तु वह अपने को छुड़ाकर चिल्लाता हुआ भाग निकला। पड़ोस के लोग उनके घर की और दौड़ पड़े। जिससे डाकू डरकर भाग गये। इस प्रकार एक साथ कई चमत्कार हुए। प्रथम भूराजी के पोते की जीवन रक्षा हुई। दूसरे संपत्ति बच गई। तीसरा भागते हुए पड़ोसी बिहारीलालजी के पीछे उन्होंने जो दो बम फेंके थे वे फटे नहीं। और इस प्रकार उसके प्राणों की रक्षा भी हो गई। यह था नाना गुरु के नाम से अनोखा कार्य।

मम्मा! आपने बहुत अच्छी घटना सुनाई। अब तो मैं सभी दोस्तों को नाना के नाम से अनोखा कार्य की बात बता दूंगा। जिससे हमारे पास कभी भी आतंकवादी फटक भी नहीं सकेंगे। हम सब हमेशा जय गुरु नाना का जाप करते रहेंगे।

अच्छा। अब नवकार मंत्र गिनकर सो जाओ।

हाँ मम्मा! नवकार मंत्र भी गिनुंगा और जय गुरु नाना भी बोलूंगा।

(बच्चों को एक बार जिस कार्य में आनंद की अनुभूति होने लगती है उस कार्य के लिए उसे बार-बार प्रेरणा की आवश्यकता नहीं रहती है। अगले दिन सारी दिनचर्या बिना शर्त के व्यवस्थित करके

उसी टाईम माँ के पास अपनी जिज्ञासा लेकर बिना बुलाये ही उपस्थित हो गया।)

मम्मा! एक दिन मेरे दोस्त की मम्मा ने मुझे टॉफी देने के लिए पर्स खोला उसमें अंडे थे। मैंने उनसे कहा कि आप अंडे खाओगे तो आपको यमराज के डंडे खाने पड़ेंगे तो वे मुझसे कहने लगी - अंडे में तो एक ही जीव होता है, लेकिन तेरी मम्मा से पूछना - भिंडी, करेले, तुरई में कितने जीव होते हैं?

आप मुझे अच्छे से बताना। उनका कहना है कि अंडे खाने से कम जीव मरते हैं और सब्जी-रोटी खाने से ज्यादा जीव मरते हैं। क्या यह बात सही है? क्या नाना गुरु से आपने कभी पूछा है? यदि पूछा है तो उन्होंने क्या बताया?

* * *

कर्म और उसके प्रतिफल

बेटा! मैंने तो नाना गुरु से नहीं पूछा, किन्तु पालड़ी (अहमदाबाद) में दिनांक 2.1.1983 को एक भाई ने अपनी जिज्ञासा निवेदन की -

गुरुदेव! जब आत्मा-आत्मा एक समान है तो एकेन्द्रिय को मारने से अल्प पाप और पंचेन्द्रिय को मारने से बहुत पाप क्यों लगता है?

मम्मा! मुझे पहले वनस्पति और अंडे के उपयोग में पाप का अन्तर बताओ?

बेटा! करेला, भिंडी, तुरई आदि हरी सब्जी और फ्रूट वनस्पति हैं। वनस्पति सभी एकेन्द्रिय हैं। उसमें एक स्पर्शेन्द्रिय (शरीर) ही होती हैं। किन्तु अंडे पंचेन्द्रिया हैं। उसमें से निकलने वाले जीव के

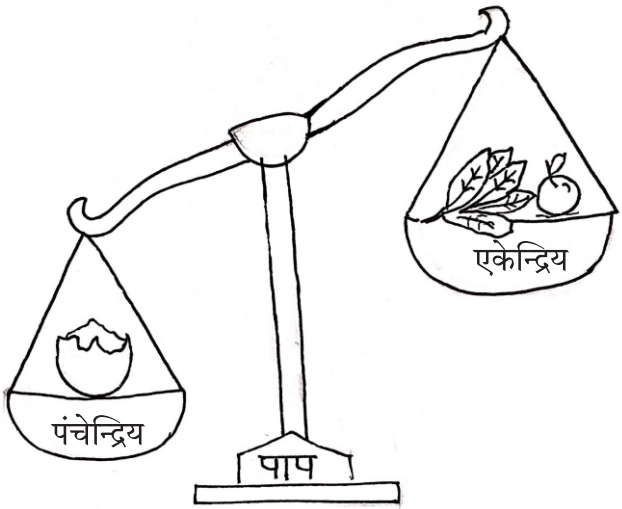

कान, आँख, नाक, जीभ और शरीर सभी होते हैं। अर्थात् वे पंचेन्द्रिय होते हैं। इसलिए मैंने तुम्हें एकेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय की हिंसा में लगने वाले पाप में अन्तर गुरुदेव से पूछे हुए प्रश्न का समाधान गुरुदेव द्वारा बताया गया, वह सुना रही हूँ -

गुरुदेव ने सहज भाषा में स्पष्ट किया कि देखो भाई, मनुष्य-मनुष्य समान हैं, फिर भी अन्तर होता है। जैसे - एक मनुष्य देहाती ग्रामवासी है। दूसरा नगर का अध्यक्ष है, तीसरा राज्य का राज्यपाल, चौथा राष्ट्र का मंत्री और पांचवा राष्ट्रपति है। अब यदि कोई व्यक्ति किसी देहाती को थप्पड़ मार देता है तो सरकार उसे क्या दंड देगी ?

श्रोता - कुछ नहीं और वह देहाती भी थोड़ा कुछ बोलता हुआ चला जायेगा।

यदि वह व्यक्ति नगर के अध्यक्ष को थप्पड़ मारता है तो उसमें उस व्यक्ति को कितना परिश्रम करना पड़ता है ? बहुत कुछ प्रयत्न करने के बाद वह अध्यक्ष को थप्पड़ मार पाता है। उसे मारने वाले व्यक्ति को सरकार क्या दण्ड देगी ?

श्रोता - सरकार उसे जेल भेजेगी। क्योंकि उसने अध्यक्ष को थप्पड़ नहीं मारा, अपितु पूरे नगर को थप्पड़ मारा है। नगर का अपमान किया है।

जो व्यक्ति राज्यपाल को थप्पड़ मारना चाहता है। उसके मन में कितने संकल्प-विकल्प आयेंगे, कितनी युक्तियाँ सोचेगा और कितना परिश्रम करना पड़ेगा, तब कहीं वह राज्यपाल को थप्पड़ मार सकता है। उसे सरकार पूर्व की अपेक्षा अधिक दण्ड देगी और जो व्यक्ति राष्ट्र के मंत्री या राष्ट्रपति को थप्पड़ मारना चाहता है, उसके मन में प्रबल द्वेष एवं ईर्ष्या के संकल्प उठेंगे। कषाय की भावना प्रबलतर होगी। कई महीने तक अवसर की प्रतीक्षा में रहेगा, तब वह मंत्री या राष्ट्रपति को थप्पड़ मार पायेगा। उस व्यक्ति को दण्ड का रूप क्या होगा ?

श्रोता - फांसी या आजीवन कारावास की सजा। क्योंकि उसने बहुत बड़ा अपराध किया है।

तो भाइयों ! मनुष्य वह देहाती भी है और राष्ट्रपति भी मनुष्य हैं। फिर इस दण्ड व्यवस्था में इतना

अन्तर क्यों? इसी परिप्रेक्ष्य में महावीर द्वारा दी गई है दण्ड व्यवस्था। एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक की व्यवस्था समझने का प्रयास करना चाहिए। अनंत पुण्यवाणी होती है तब जीव एकेन्द्रिय से द्वीन्द्रिय होता है, इसी प्रकार क्रमशः अनंत पुण्यवाणी के प्रवर्धमान होने पर जीव पंचेन्द्रिय बन पाता है। एकेन्द्रिय जीव उस देहाती की तरह है, जिसे थप्पड़ मार दी तो उसे साधारण-सा दण्ड, उसे बहुत अधिक पाप नहीं लगता तथा द्वेष कषाय की भावना भी प्रबल नहीं होती है। जैसे- चलते-चलते वनस्पति तोड़ दी तो उस समय आपको कोई विचार नहीं आता। किन्तु जब आपका पैर किसी लट आदि जन्तु पर पड़ जाता है तो आपको ग्लानि बहुत होती है कि अहो! मेरे पैर से लट मर गई। इसी तरह द्वीन्द्रिय से त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय से पंचेन्द्रिय को मारने से अधिकाधिक कषाय एवं आक्रोश की भावना बढ़ती है। तभी जीवों का हनन किया जा सकता है। द्वीन्द्रिय में एकेन्द्रिय का, त्रीन्द्रिय में द्वीन्द्रिय का, चतुरिन्द्रिय में त्रीन्द्रिय को और पंचेन्द्रिय में चतुरिन्द्रिय का प्रतिनिधित्व रहता है। इसलिए हिंसा का प्रमाण भी बढ़ता जाता है। इसी कारण से शास्त्रकारों ने एकेन्द्रिय के हिंसक को नरक का अधिकारी नहीं बताया। किन्तु पंचेन्द्रिय के हिंसक को नरकाधिकारी बताया है।

अच्छा मम्मा। आज आपने बहुत अच्छी बात बताई। अब मैं सभी दोस्तों को समझा सकता हूँ कि हरी वनस्पति से ज्यादा पाप अंडे में है। अब तो मैं अण्डे खाने वाले दोस्तों के घर बना हुआ कुछ भी नहीं खांऊगा। उनके टिफिन में भी शेअर नहीं करूंगा।

क्या कहा? क्या तुम अंडे और मांस खाने वाले बच्चों में टिफिन भी शेअर करते हो?

हाँ मम्मा! यदि कोई बच्चा मना कर देता है तो टीचर उसे सजा देते हैं और कहते हैं कि - भेदभाव नहीं करना चाहिए। अब तो मैं टीचर से भी पंगा ले लूंगा। मैं उनको अंडे छोड़ने के लिए मजबूर कर दूंगा। क्योंकि मुझे बहुत दुःख होगा यदि मेरे दोस्त को नरक में जाना पड़ेगा तो। मेरा कर्त्तव्य भी है कि मैं सच्चा दोस्त बनकर उनको गंदी चीजें खाने से रोकूं।

हाँ बेटा! ठीक है, यदि कोई गलत रास्ते जा रहा है तो हमारा कर्त्तव्य है कि हम उसे सही मार्ग दर्शन दें और महापुरुषों के उदाहरण देकर उन्हें समझायें और सही रास्ते पर लायें।

मयंक (मौलिक का दोस्त) की मम्मी (कविता बहन) मौलिक के घर .....

आइये-आइये भाभीजी! बहुत दिनों के बाद आज आपका आना हुआ और आज ये (मौलिक के पापा) भी घर हैं तो इनसे भी मिलना हो जाएगा।

हाँ रीना (मौलिक की मम्मी) आज मैं ऐसा ही टाईम देखकर आई हूँ। मुझे तुम दोनों से ही मौलिक की शिकायत करनी है-

(रीना चौकते हुए) क्यों? मौलिक ने कोई शैतानी की है क्या?

अरे, वो क्या शैतानी करेगा, आजकल तुम उसको क्या साधु बनने की शिक्षा दे रही हो? मैं तो उसकी बातें सुन-सुनकर हैरान हो जाती हूं। एक दिन मैंने उसको चॉकलेट देने के लिए पर्स खोला तो उसको उसमें अण्डा दिख गया, एक दिन उसने मुझे घर में लक्ष्मण रेखा लगाते हुए देख लिया। फिर तो उसके लेक्चर ही शुरू हो गये। आखिर उसने मुझे और मयंक को तो अंडे खाने छुड़वाकर ही चैन लिया। इतना सा बच्चा और इतनी युक्तियों से उसने मुझे निरूत्तर किया कि मैं तो उसका चेहरा ही देखते रह गई।

रीना बहन! थोड़ा तो सोचो। आज के युग में बच्चों को यदि ऐसा पाप भीरू बना दोगी तो बेचारे का जीना ही मुश्किल हो जाएगा।

"आज का युग तो मरने और मारने का है।" ये धर्म-कर्म की बातें तो बुढ़ापे में टाईम पास के लिए ठीक हैं और सब्जी-भाजी के भरोसे बच्चों में ताकत की आशा रखोगी तो बेचारा अभी से कमजोर हो जाएगा। थोड़ा-थोड़ा किसी भी तरह से उसको नॉनवेज दिया करो, नहीं तो बुजदिल हो जाएगा।

(रीना बीच में बोलते हुए....)

बस करो भाभीजी! बहुत हो गया। मुझे और मेरे पति दोनों को ऐसे ताकतवर बच्चे की

आवश्यकता नहीं है। क्या आप महात्मा गांधी को बुजदिल मानती हो ? जो स्वयं अहिंसक तरीके से जीते थे और उनके संपर्क में आने वाले सभी को उन्होंने शांति और अहिंसा का संदेश दिया। यहाँ तक कि ऐसे भीषण स्वतंत्रता संग्राम में भी उन्होंने किसी को भी हिंसात्मक तरीका अपनाने की सलाह नहीं दी तो मैं मेरे बेटे को कैसे ऐसी शिक्षा दे सकती हूँ ?

(रीना की सासूजी-) बहू.....

हाँ मम्मीजी ! पास वाली भाभीजी आयी हैं।

आओ-आओ ! बहुत दिनों बाद आना हुआ।

हाँ ! आज मैं रीना से मिलने आ गई थी।

कोई बात नहीं। मिलते-जुलते रहना चाहिए। मिलने से ही विचारों का आदान-प्रदान होता है।

हाँ दादीजी आपकी बहू तो बहुत धर्मात्मा है।

हाँ बेटी ! मैं तो तीनों ही बेटों की सगाई करने गई तो सबसे पहले उन्हें धार्मिक ज्ञान के बारे में ही पूछा और आज भी मेरे घर का नियम है - सभी बहुएं और बेटे रोज सामायिक करते हैं और छोटे-छोटे बच्चों को भी हम वैसे ही संस्कार देते हैं।

मैं तो कहती हूँ कि आज मेरे घर में जो एक-दूसरे के प्रति आत्मीयता और सेवा भावना है तथा हम दोनों पति-पत्नी के प्रति जो आदरभाव है वह सब धर्म के कारण ही है।

मैं तो बहुओं को यहां तक कहती हूँ कि - तुमको टाईम मिले तो पहले बच्चों में धार्मिक संस्कार देना, फिर स्कूली पढ़ाई करवाना। यदि धर्म के संस्कार होंगे तो वह स्वयं भी सुखी रहेंगे और परिवार में भी शांति रहेगी।

आजकल की पढ़ाई बच्चों को धन कमाना सिखा सकती है किन्तु मानवता नहीं सिखा सकती। मानव के बीच रहने वाले में यदि मानवता नहीं है तो वह किस काम का ?

देखो पड़ोस के हाल - कहने को तो जैन परिवार है, कितना पैसा है ? चार-चार बेटे हैं, सभी के

कार बंगले हैं किन्तु माता-पिता की क्या दशा है? बेचारे नौकरों के भरोसे। वो चारों भी कितने परेशान हैं कोई शराब पीता है तो कोई क्लब जाता है। बच्चों में भी संस्कार नहीं है।

ये सब बातें विनय और विवेक के अभाव में होती हैं। विनय और विवेक सिर्फ धार्मिक संस्कारों से ही आते हैं और इसके लिए माँ का संस्कारित होना सबसे आवश्यक है। मेरे आठ पोते-पोती हैं। पर कभी भी लड़ाई झगड़े का काम नहीं। चाहे पड़ोसी के यहां भी कुछ काम पड़े तो सब सेवा के लिए तत्पर हैं।

दादीजी! आज मैं रीना भाभी और भैया के पास जिस भावना से आई थी, वह भावना आज दोनों सास-बहू के विचार सुनकर बदल गई। वास्तव में आप लोग कितने आत्मविश्वास से बोल रहे हैं। मुझे आप से मिलकर ऐसा लगा कि आप लोगों के पास आत्मिक शांति है। आपको कोई एतराज न हो और जिस समय आप अपने बच्चों को संस्कार दें उस समय मैं भी अपने बेटे मयंक को भेजना चाहती हूँ।

आप नि:संकोच भेज देना। मैं मौलिक को बुलाने भेज दूंगी।

* * *

क्या वे जादू करते थे?

हम जो भी कार्य करते हैं उसमें यदि हमारी नियमितता और एकाग्रता बन जाती है तो वह कार्य हमारा गुण बने बिना नहीं रहता है। पुस्तक में लिखे सिद्धान्त और माता-पिता के आदेश का पालन करना आज के बच्चों के लिए मुश्किल है। किन्तु वही सिद्धान्त यदि महापुरुषों के जीवन वृत्तान्त या घटना के रूप में हो तो वह सहजता से व्यक्ति के जीवन को परिवर्तित कर देता है।

मौलिक को अब बुलाने की आवश्यकता नहीं रहती किन्तु मौलिक मम्मी को बुलाता है-

मम्मा! नाना गुरु को गुस्सा नहीं आता था क्या?

हाँ बेटा!

(मौलिक को दुलारते हुए....)

मम्मा! रुको-रुको।

क्यों? क्या याद आया?

कुछ दिन पहले मयंक की मम्मी मुझ पर गुस्सा हो रही थी और आज वही कह रही थी - तुम्हारी मम्मी जब कहानी सुनाती हैं तब मयंक को भी बुला लेना।

हाँ बेटा! जब तक व्यक्ति सत्य को नहीं पहचानता है तब तक वह सत्य से दूर भागता है। जब व्यावहारिक जीवन में उसे सत्य की महत्ता समझ में आती है तब उसे वह प्रिय लगता है। जाओ, मयंक को बुला लाओ....

हेलो ऑण्टीजी!

जय जिनेन्द्र मयंक!

क्या मतलब?

इसका मतलब है जिन्होंने राग-द्वेष को जीत लिया है, जो अपने-पराये के भेद से उपरत हो गये, जिनके समीप जाते ही जन्मजात शत्रु भी मित्र हो जाते हैं, ऐसे वीतराग भगवान् की हम जय बोलते हैं।

प्लीज आण्टीजी, मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है - आप किसकी बातें कर रही हो, क्या ऐसा भी कभी होता है?

हाँ बेटे! जब तीर्थंकर भगवान् का समवसरण लगता था तब उनकी सभा में शेर, गाय, चूहा और बिल्ली सब एक ही स्थान पर प्रेम से बैठकर उनकी वाणी सुनते थे।

आप लोग जब भी वहाँ जाओ, तब हमें भी ले चलना।

बेटा, हम लोग अभी वहां नहीं जा सकते हैं। लेकिन उनकी आज्ञा में चलने वाले आचार्य भगवन् की सेवा का हम लाभ ले सकते हैं। मैं मौलिक को प्रतिदिन उनके ही जीवन के बारे में बताती हूँ।

क्या आपके आचार्य भगवन् के पास अजैन भी जा सकते हैं?

हाँ बेटे! जैन धर्म में जैन-अजैन का भेद नहीं है। जैन कोई जाति नहीं है। जैन धर्म है। "जो भी जिन वितराग देव की वाणी पर श्रद्धा रखकर उसके अनुसार

आचरण करता है, वह जैन है।"

आचार्य श्री नानेश ने तो लाखों बलाई जाति के लोगों को जैन बनाया है।

तो क्या वे जादू करते थे ?

नहीं। वो कोई जादू-वादू नहीं करते थे। उनकी वाणी इतनी ओजस्वी और प्रभावी थी कि हर व्यक्ति उनकी बात सहर्ष स्वीकार करते थे। जो भी उनके पास जाता था वो दर्शन और कृपा दृष्टि का

वर्षण होने पर ऐसा महसूस करता था जैसे बरसों बाद पूजनीय दादाजी से मुलाकात हुई हो। वे वात्सल्यमूर्ति थे। उन्होंने शराब, शिकार, चोरी आदि दुर्व्यसनों में लिप्त बलाई जाति के लोगों को संगठित कर उपदेश दिया और हिंसक से अहिंसक बनाकर उन्हें जैन धर्मानुयायी बना दिया। वे लोग सामायिक-प्रतिक्रमण करते हैं, उनके हाथों में छुरियों के स्थान पर पूंजनी और माला रहने लगी, तथा उनके गांवों में समता भवन भी बन गये हैं, जैन पाठशालाएँ भी चल रही हैं। समय-समय पर सन्त सतियां भी विचरण करते हुए वहाँ पधारते हैं और वे लोग भी दर्शनार्थ जाते हैं।

नाना गुरु का लक्ष्य था अज्ञान के अंधकार में भटकते हुए लोगों को सन्मार्ग दिखाना और सन्मार्ग को आचरण में लाने के लिए प्रेरित करना।

मयंक! तुम्हें अच्छा लगे तो तुम यह मंत्र (नवकार मंत्र का कार्ड देते हुए) याद कर लेना और प्रात:काल उठते ही इसे 5 बार गिनना तथा जब भी घर से बाहर जाओ, एक बार इस मंत्र का स्मरण अवश्य करना।

हाँ आण्टीजी। मैं इस मंत्र को भी गिनूंगा और मुझे तो जब से मौलिक ने जय गुरु नाना - जय गुरु राम वाला मंत्र बताया तब से मैं कोई भी काम करते समय एक बार इस मंत्र को जरूर बोलता हूँ।

मयंक! तुम्हें आज की जानकारी अच्छी लगी हो तथा नाना गुरु के बारे में जानने की जिज्ञासा हो तो जिस समय आज आये उस समय रोज आ जाया करो।

जय गुरु नाना - जय गुरु राम

थैंक्यू आण्टी। बॉय मौलिक।

बॉय मयंक।

* * *

सेवाभावी

मम्मा! देखो - आज मयंक कितनी जल्दी आ गया।

जय जिनेन्द्र आण्टीजी, जय जिनेन्द्र मयंक!

जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र

आज हम दोनों ने होमवर्क भी कर लिया, खाना खाते हुए टी.वी. भी नहीं देखी और दूध भी पी लिया।

क्या गुरु नाना बचपन से ही सेवाभावी थे?

हाँ बेटा। तुमने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा, मुझे सोचना भी नहीं पड़ेगा। गुरु नाना का बचपन का नाम गोवर्धन था। उनके दो बड़े भाई और पांच बड़ी बहनें थीं। यूं तो नाम गोवर्धन था पर भाई-बहनों में सबसे छोटे होने से उनको प्यार से सब नाना बोलते थे। उनका जन्म दाँता गाँव में हुआ था। वो छोटे थे तब अपने दोस्तों के साथ खेलते हुए किसी भी वृद्ध व्यक्ति को काम करते हुए देखते थे तो तुरंत उनकी हेल्प करने पहुँच जाते थे। उनके घर के पास एक वृद्ध महिला रहती थी। वह जब भी पानी का घड़ा भरकर लाती तो गोवर्धन दौड़कर उनके सिर पर से घड़ा उठाकर घर तक पहुँचा देते थे। वृद्ध महिला उनको बहुत आशीर्वाद देती थी।

अच्छा मम्मा। मुझे अब समझ में आया कि वो बड़ों के इतने आशीर्वाद के कारण ही महान् बने होंगे। अब हम भी सबकी हेल्प करेंगे। हमें भी आशीर्वाद मिलेंगे।

कल तो संडे है। कल हमें दादाजी के साथ स्थानक जाना ही पड़ेगा।

देखो बेटा स्थानक जाने से बहुत फायदे हैं। इसलिए ऐसा नहीं बोलना कि जाना पड़ेगा। खुशी से ऐसा बोलना कि कल हमें स्थानक जाने मिलेगा। अभी तो राम गुरु भी यहीं विराज रहे हैं। देखो - डेली कितनी दूर-दूर से दर्शनार्थियों की बसें भर-भरकर आ रही हैं, रामगुरु के दर्शन करने के लिए।

ठीक है मम्मा। लेकिन हम क्या करें ? रोज उठते ही स्कूल, कोचिंग और होमवर्क में ही दिन पूरा हो जाता है। इसलिए हम नहीं जा पाते। कल तो बड़ा मजा आएगा - स्थानक चलने के लिए दीदी और भैया को भी बोलकर आता हूँ।

मौलिक अभी सो जाओ। सुबह सबको बोल देना।

हाँ मम्मा, मयंक और मैं दोनों मिलकर हमारे सब फ्रैण्ड्स को भी मैसेज कर देंगे।

(प्रात:काल बड़े उत्साह से मौलिक और मयंक ने अपने साथियों को स्थानक चलने के लिए तैयार कर लिया। प्रवचन के समय दादाजी के साथ मौलिक भी अपने साथियों को लेकर स्थानक पहुँच गया। प्रवचन अभी शुरू नहीं हुए थे, दादाजी ने बच्चों से कहा-)

बच्चों सुन लो - अभी यहाँ पर प्रवचन होगा, तुम बीच में उठकर नहीं जा सकोगे और चुपचाप बैठ सको तो मेरे पास बैठ जाओ। नहीं बैठ सको तो तुम्हारी मम्मी के पास पीछे चले जाओ।

सभी बच्चे - हम चुपचाप आगे ही बैठेंगे, पीछे हमको समझ में नहीं आता है।

(प्रवचन शुरू हुआ, बच्चे जब तक प्रवचन चला चुपचाप बैठे रहे। प्रवचन संपन्न होने पर बच्चे आपस में-)

मौलिक! ये सब लोग लाईन में क्यों लग रहे हैं ?

पहले तुम लोग जल्दी से लाईन में आ जाओ, नहीं तो हम सब पीछे रह जायेंगे।

अरे भाई! पहले ये तो बताओ लाईन में किस लिए लग रहे हैं,

सुनो - जो ऊँचे पाटे पर विराजे हुए हैं, वो गुरु राम हैं सब लोग उनके चरण में सिर लगाने के लिए लाईन में खड़े हैं।

चरण में सिर लगाने से क्या फायदा ?

ये तो मौलिक बताएगा -

हाँ मैं बताता हूँ - उनके चरणों में सिर लगाने से हमको बहुत शुद्ध ऊर्जा मिलती है। जिससे हमारी बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं और बुद्धि बढ़ती है।

क्या उनके चरण में कोई जादू है ?

हाँ। इसका कारण में तुम्हें घर चलकर बतांऊगा। अभी तो तुम लोग जल्दी से लाईन में आ जाओ।

सभी बच्चों ने कतार में लगकर चरण-स्पर्श किये और दादाजी के साथ घर आ गये।

* * *

श्रद्धा का अद्‌भुत प्रभाव

(दिन में बच्चे छुट्टी होने के कारण इकट्ठे होकर, मौलिक के घर पहुँच गये)

मयंक - हम सब चरण स्पर्श का कारण जानने के लिए आ गये हैं।

अच्छा हुआ, मैंने दादीजी से पहले ही बात कर ली थी कि - मेरे दोस्तों को आप चरण स्पर्श का कारण बताओगे। चलो दादीजी के पास -

(सब बच्चे दादीजी के आस-पास बैठ गये)

गुरु के शरीर में बहुत ऊर्जा होती है। उनकी वह ऊर्जा हमें भी प्राप्त हो इसके लिए हम उनके चरणों में सिर लगाते हैं। वह ऊर्जा हमारे मस्तक के माध्यम से पूरे शरीर में प्रवाहित होती है। उस ऊर्जा से हमारे भीतर एक नई स्फूर्ति का संचार होता है और हमारी श्रद्धाभक्ति के कारण उस ऊर्जा से हमारे रोग-शोक दूर होते हैं।

क्या ऐसा कभी हुआ है?

हाँ हुआ है। बहुतों के साथ हुआ है, उसमें से एक हैं -

'नाना गुरु' का वर्षावास जब ब्यावर था तब कि घटना है - वहाँ बीकानेर के सोनावत परिवार के श्री रूपचन्दजी के सुपुत्र श्री जतनलालजी सेनावत आचार्य भगवन् की सेवा में ब्यावर आये हुए थे।

उनके हाथों से पीव व रक्त रिसता रहता था। वे इस कारण आचार्य प्रवर के चरण स्पर्श भी नहीं कर पाते थे, फिर भी अत्यन्त श्रद्धा के साथ जहाँ गुरुदेव के चरण पड़ जाते वहाँ की धूलि को अपने हाथों पर जरूर लगाते, प्रति दिन उनका यही कार्यक्रम चलता रहा। आखिर श्रद्धा का अद्भुत प्रभाव हुआ। उनके हाथ से रिसने वाला पीव, खून आदि सब रुक गया। वे एकदम स्वस्थ हो गये। आज वे ही आचार्य भगवन् के शासन में आदर्श त्यागी श्री जितेन्द्र मुनिजी महाराज साहब के नाम से पहचाने जाते हैं। उनकी गृहस्थावस्था की पत्नी श्रीमती भंवराबाई, पुत्र विजयकुमार एवं पुत्री प्रभावतीजी भी आचार्य श्री नानेश के शासन में दीक्षित हुए।

(सभी बच्चे आश्चर्य से -)

अच्छा। इसीलिए सभी लोग इतनी लम्बी कतार में लगकर चरण स्पर्श करते हैं।

मयंक - देखो कल क्लास में मेरा कितना सिरदर्द हो रहा था, मैंने एक भी गोली नहीं खाई और आज गुरुदेव के चरण स्पर्श करके आया तो मेरा सिरदर्द गायब हो गया।

मौलिक - मेरे दादाजी तो जब तक गुरुदेव यहाँ बिराजेंगे प्रतिदिन चरण स्पर्श करने मुझे ले जायेंगे।

कल तो स्कूल जाना है।

कोई बात नहीं, तुम्हारी सबकी चलने की इच्छा हो तो तुम सब 7 बजे सुबह आ जाना। हम लोग प्रार्थना में जाते हैं। तुमको भी ले जायेंगे और तुम्हारी स्कूल बस के आने से पहले यहाँ छोड़ देंगे।

ठीक है। कल हम जरूर चलेंगे।

(सामने के रोड पर अमरूद बेचने वाले के ठेले को एक ट्रक ने टक्कर मार दी ठेला उलट गया। यह दृश्य देखकर मौलिक कहता है)

देखो-देखो बेचारे के सारे अमरूद बिखर गये। चलो सब मिलकर उसकी मदद करते हैं।

(बच्चों की टोली दौड़कर वहाँ पहुँचती है और सभी जल्दी-जल्दी अमरूद लाकर ठेले में रख देते हैं। ठेले वाला प्रसन्न होकर बच्चों को एक-एक अमरूद देते हुए -)

धन्यवाद। आप सबकी मदद से इस गरीब के अमरूद बच गचे। नहीं तो आज मेरे परिवार को भूखा ही रहना पड़ता।

(बच्चे अपनी-अपनी जेब से पैसे निकालकर देते हुए-) बिना पैसे हम आपके अमरूद नहीं लेंगे। आप ये पैसे रख लो। हमको आपकी मदद करते हुए बहुत आनन्द आया। हमारे गुरु भी बचपन में गरीबों की मदद करते थे।

मम्मा! आज के दिन तो बड़ा आनन्द आया। मुझे पहली बार इतनी खुशी मिली।

आज मेरे बेटे ने ऐसा क्या किया?

मम्मा! आज मैं दोस्तों के साथ स्थानक गया था, वहाँ मैंने दोस्तों के साथ प्रवचन सुने और हम सबने गुरुदेव के चरण स्पर्श किये। सबने मुझे चरण स्पर्श करने का कारण पूछा। मैंने उनको दिन में घर बुलाया। सबको दादीजी ने चरण-स्पर्श का कारण बताया। बताते हुए चरणरज का प्रभाव वाली कहानी सुनाई। कहानी सुनकर सबने कल प्रार्थना में चरण स्पर्श करने के लिए आने का कहा

दूसरा आनन्द हमको आपकी कहानी से आया - आपने नाना गुरु की गरीबों की हेल्प वाली घटना सुनाई थी। आज हमने भी ऐसा ही काम किया - (मौलिक ने अमरूद के ठेले वाली घटना सुना दी।)

वास्तव में मम्मा हमने जिसकी हेल्प की उसने हमको बहुत दुआएँ दीं।

(माँ ने प्रसन्न होकर मौलिक को दुलारते हुए कहा-) मेरा बेटा भी एक दिन महान् बनेगा।

* * *

चरण रज का महत्त्व

अगले दिन प्रात:काल 7 बजे -

मौलिक! मौलिक!....

दादाजी! जल्दी करो, मेरे सब दोस्त प्रार्थना में चलने के लिए आ गये हैं और हमको वापस जल्दी आना है, हमारी स्कूल बस का टाईम हो जायेगा।

हाँ। मौलिक गेट खोलो। देखो बाहर तुम्हारे पापा गाड़ी लेकर तैयार खड़े हैं, तुम सब बैठो हम दूसरी गाड़ी से पहुँच रहे हैं।

(सभी प्रवचन हॉल में पहुँचते हैं। प्रार्थना शुरू हो चुकी थी। सभी बच्चे बैठ गये और मस्ती से प्रार्थना करने लगे। सामने से गुरुदेव पधारते हैं-)

मौलिक! उधर देखो तुम्हारे गुरुजी आ रहे हैं। (दूसरा बच्चा - तुम्हारे दादाजी और तुम्हारे अंकल वह धूल, जहां तुम्हारे गुरुजी चल रहे हैं उनके पैर के नीचे की धूल को इकट्ठा करके नये रूमाल में क्यों ले रहे हैं?

अरे! वह 'धूल नहीं है वह तो चमत्कारी चरण रज है।'

क्या मतलब?

अभी तुम सब चुपचाप देखते रहे। शाम को 8 बजे घर आना। मयंक भी आता है। मेरी मम्मी तुम्हें सब बतायेगी।

(बच्चे मांगलिक सुनकर घर आ जाते हैं। अपनी दिनचर्या की समाप्ति के बाद अपनी-अपनी मम्मी से अनुमति लेकर सब बच्चे सण्डे की घटना और चरण रज की जिज्ञासा को अपनी मम्मी को बताकर मौलिक के घर पहुँचते हैं।)

इधर प्रात:काल बच्चों के उत्साह से प्रभावित होकर मौलिक के दादाजी मौलिक की मम्मी को मोहल्ले के जैन-अजैन बच्चों को बुलाकर संस्कार पाठशाला अपने घर चलाने के लिए प्रेरित करते हैं। मौलिक की मम्मी भी प्रसन्नता से इस कार्य हेतु स्वीकृति देती है। मौलिक के दादाजी बच्चों का उत्साह बढ़ाने हेतु कुछ उपहार आदि की व्यवस्था कर पाठशाला की शुरुआत करते हैं। शाम को बच्चों की टोली मौलिक के घर -

मौलिक अपने दोस्तों के साथ पाठशाला में -

जय जिनेन्द्र

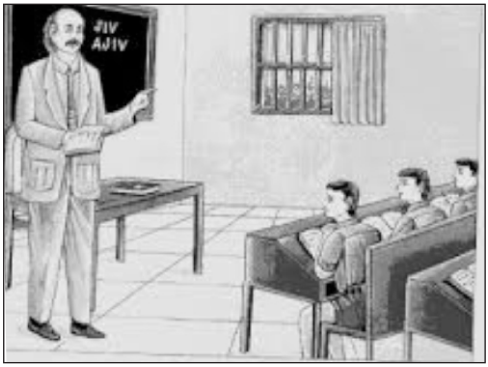

सभी बच्चे - जय जिनेन्द्र

मम्मा आज मेरे दोस्तों को सबसे पहले चरण रज की घटना बताना। आज सुबह सबके मुँह पर एक ही सवाल था। मैंने सबको आपके द्वारा बताने का कहा -

ठीक है। सभी बच्चों! ध्यान से सुनना। आज मैं तुम्हें नाना गुरु की चरण रज के महत्व की घटना सुना रही हूँ -

बीकानेर के सुखाणीजी का व्यापार पाकिस्तान के शेख कादिर खाँ के साथ है। एक बार शेख कादिर खाँ बीकानेर आये। तब भंवरलालजी सुखाणी उन्हें कर्मठ सेवाभावी धायमातृ पद विभूषित शासन प्रभावक श्री इन्दरचन्दजी महाराज साहब के दर्शनार्थ ले गये।

उन्होंने श्रद्धाभक्तिपूर्वक दर्शन किये और बहुत प्रभावित हुए। उन्हें साधु-जीवन की मोटी-मोटी बातें बताई तो वे आश्चर्य में पड़ गये कि - जैन साधु ऐसे होते हैं। नाना गुरु के बारे में भी उन्हें बताया, तो बोले - मैं ऐसे महात्मा के जरूर दर्शन करना चाहूंगा। लेकिन समय नहीं होने से दर्शन नहीं कर पाये। सुखाणीजी ने शेख को गुरुदेव की चरण रज दी और कहा - कि कभी इसकी परीक्षा करना। शेख ने श्रद्धा के साथ उस चरण रज को अपने बटुए (पर्स) में रख लिया।

तत्पश्चात् प्रसंग बना कि - बीकानेर निवासी श्री भंवरलालजी बांठिया के भी उस शेख से व्यापारिक संबंध थे और वे पाकिस्तान गये। वे शेख को साथ लेकर सी.ए.डी.ऑफिस में अपने परिपत्र की नौंध कराने के लिए गये, लेकिन अधिकारी ने नौंध करने से इनकार कर दिया, उसे बहुत समझाया, प्रलोभन भी दिये, लेकिन वह नौंध करने के लिए तैयार नहीं हुआ। अन्त में बांठियाजी और शेख दोनों वहां से बाहर निकले और चलने लगे। इसी बीच शेख ने अपने पर्स से चरण रज की पुड़िया निकाली और उसे देखकर पुन: पर्स में रख ली। ये लोग अभी दरवाजे तक आये होंगे कि, अधिकारी ने आवाज दी कि - वापस लौटकर आओ, आपके परिपत्र की नौंध कर देते हैं। बिना किसी प्रलोभन के अधिकारी ने कार्य कर दिया। यह देखकर बांठियाजी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि जो अधिकारी अब तक काम करने

के लिए तैयार नहीं था, प्रलोभन देने पर भी टस से मस नहीं हुआ, वह इतनी जल्दी कैसे तैयार हो गया, बिना किसी प्रलोभन के अधिकारी ने कार्य कर दिया। हाँ यह बात जरूर देखी कि - जिस समय हम चलने के लिए तैयार हुए थे कि शेख ने बटुए में से एक पुड़िया निकाली, निकालकर उसे देखा और देखकर वापस पुड़िया को बटुए में रख लिया था। लगता है शेख के पास कोई जन्तर-मन्तर है। कार्य पूरा हो जाने के बाद शेख के साथ बांठियाजी बाहर आये तो उन्होंने शेख से पूछ ही लिया कि यह सब कैसे हो गया ? आपने पर्स से क्या निकाला था ? शेख ने बांठियाजी की जिज्ञासा को शांत करने के लिए हंसते हुए कहा - मेरे पास कोई गंडा ताबीज नहीं है, यह तो तुम्हारे मुल्क के एक बड़े फकीर के पैरों की धूलि है, उसी का यह करिश्मा है। जब कभी मुझ पर कोई संकट आता है तो मैं इसको देखकर बंदगी करता हूँ, जिससे मेरा बिगड़े से बिगड़ा काम बन जाता है। इसका करिश्मा तुम अभी देख ही चुके हो। बांठियाजी ने कहा वे महापुरुष कौन हैं ? और आपको यह धूलि किसने दी ?

शेख ने बताया कि वे फकीर कौन हैं, यह तो मैं नहीं जानता, मेरी भी उनके दर्शनों की इच्छा थी ; लेकिन अभी तक उनके दर्शन नहीं कर पाया, किन्तु उनके चरणों की धूलि मुझे सुखाणीजी ने दी है। वही मेरे पास है। उसी से मेरे सब काम बन जाते हैं।

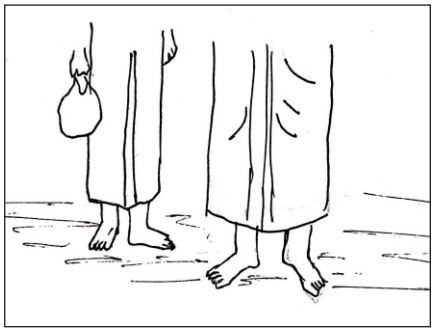

अच्छा-अच्छा मैं समझ गया, कहते हुए बांठियाजी ने पुड़िया में से थोड़ी सी रज ली और अपने मस्तक पर लगाई।

अरे-अरे ये क्या करते हो ? शेख ने कहा। बांठियाजी ने तब कहा - सुखाणीजी के गुरु हैं, वही मेरे भी गुरु हैं। उनका महत्व तुमने समझा इसलिए तुम्हारे सब काम बन जाते हैं।

सब बच्चे - ऑण्टीजी हमको भी वह चरण रज देना। हम भी हमेशा उसको अपने साथ रखेंगे और आवश्यकता होने पर उसका उपयोग करेंगे।

ठीक है। मैं सबको दे दूंगी। अब हम सब नानेश चालीसा करेंगे। मैं तुमको यह पुस्तक दे रही हूँ आज तुम इसमें से देखकर मेरे साथ बोलना। कल से इसे याद कर लेना।

(नानेश चालीसा के बाद बच्चे-)

ऑण्टीजी इसमें जो बातें आई हैं वह हमें विस्तार से बताना।

हाँ रोज मैं तुम्हें एक-एक घटना सुनाऊंगी और तुम यहाँ जो कुछ पढ़ सीखकर जाओ वह तुम अपने घर पर सभी को बताना।

जय गुरु नाना - जय गुरु राम

* * *

कल्पना को किया साकार

अब यह प्रतिदिन का क्रम बन गया। बच्चे नई-नई जिज्ञासाओं के साथ समय से पहले ही पहुँच जाते। मौलिक के परिवार जन भी उत्साह से बच्चों को प्रतिदिन प्रभावना आदि से प्रोत्साहित करते और अपने अपने तरीके से बच्चों को जैन धर्म का प्रारम्भिक ज्ञान के साथ नाना गुरु के जीवन दृष्टांत सुनाते-

बच्चे - ऑण्टीजी! जय जिनेन्द्र। जय जिनेन्द्र -

आज हमको आप नाना गुरु के बचपन के बारे में बताना-

आचार्य श्री नानेश बचपन से ही सेवाभावी, विनयवान, जिज्ञासु, अनुशासनप्रिय, मेधावी और हर चीज देखकर उस पर गहन चिंतन करते थे। उन्होंने बाल्यकाल में प्रथम बार ट्रेन देखी, विविध कल्पनाओं के साथ उनको सबसे बड़ा आश्चर्य हुआ उसके संचालक पर। वो सोचने लगे इस पर घोड़े, बैल कुछ भी तो नहीं जुड़े हैं, फिर एक ही आदमी इतनी बड़ी दैत्याकार गाड़ी को कैसे खींचता होगा ? उन्होंने बाहर से इंजन को देखा और कल्पना की - दोनों ओर लोहे की रॉड आगे-पीछे जाती है और इसके पहिये घूमते हैं, गाड़ी चलती हैं। कितनी शक्ति से ये घूमते हैं, कितना वजन खींचते हैं, इन्हें आगे-पीछे चलाने वाला कितना बलशाली होगा। वो चिंतन सरिता के प्रवाह में बहने लगे और निष्कर्ष पर पहुँचे, मुझे भी ऐसा ही संचालक बनना है। यह विचार उनके जीवन में अज्ञान रूप से आकार पाने का मार्ग ढूंढ रहे थे।

कालान्तर में वह समय आया और उनकी कल्पना को साकार रूप मिला। वे संघ रूपी ट्रेन के कुशल संचालक बने।

समीक्षण ध्यान

(मयंक की मम्मी, मौलिक के घर में प्रवेश करते हुए-)

जय जिनेन्द्र भाभीजी!

अरे आप। जय जिनेन्द्र! आइए-आइए। आपके मुँह से जय जिनेन्द्र सुनकर बड़ी खुशी हुई।

बेटे के साथ माँ को भी जैन बनना पड़ेगा।

यह तो बड़ी खुशी की बात है।

आजकल तो हमारे घर में उठते ही जय जिनेन्द्र शुरू हो जाता है। आपने तो मयंक को इतना ट्रेन्ड कर दिया है कि हमारी तो दिनचर्या ही बदल गई। आज मैं आपके पास विशेष प्रयोजन से आई हूँ।

कहिये - क्या प्रयोजन है ?

देखो कल मेरे हाथ से मोबाईल टूट गया, इधर मेरी मम्मी सीरियस हैं, मयंक के पापा की भी छुट्टियाँ नहीं हैं, मेरे जेठ को भी कैंसर हो गया। मुझे समझ में नहीं आ रहा है, मैं क्या करूं? कहां जाऊँ ? रातभर नींद नहीं आई, सिर भी चकरा रहा है।

अच्छा-अच्छा मैं समझ गई। आप अपने आपको बहुत तनाव ग्रस्त समझ रही हैं।

हाँ, आपने बिल्कुल सही समझा।

आप घबराइये नहीं। हमारे गुरु आचार्य श्री नानेश ने संघर्षपूर्ण जीवन और तनावग्रस्त लोगों के लिए सबसे सरल उपाय बताया है और उनकी विश्व को सबसे बड़ी देन है - समीक्षण ध्यान

सामान्य व्यक्ति और दिमागी पेसेन्ट में भी इससे निर्णय क्षमता उत्पन्न होती है और वे अपने जीवन की उलझी हुई गुत्थियों को सुलझाने और समस्या का समाधान खोजने में सक्षम बनते हैं।

बस-बस। मुझे वही उपाय बताओ।

समीक्षण-ध्यान एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे हमारे शरीर की बिखरी हुई ऊर्जा को संग्रहित कर सहज समाधान प्राप्त किया जा सकता है तथा सहज योग साधना से मानसिक तनाव को दूर किया जा सकता है। आपको प्रात:काल 6 से 6.30 बजे के बीच समय मिले तो आ जाना मैं प्रतिदिन करती हूं। इसके लिए आचार्य श्री नानेश की कई पुस्तकें निकली हुई हैं। जिसमें कषाय समीक्षण बहुत अच्छी (पुस्तक देते हुए) पुस्तक है। इसे आप जरूर पढ़ना। कुछ दिन आप प्रात:काल मेरे साथ प्रेक्टिकल करो और कभी आपका दाँता गाँव जाने का काम पड़े तो वहाँ ध्यान शिविर लगता है। यह गाँव आचार्य श्री नानेश की जन्मभूमि है। यहाँ की मिट्टी इतनी पवित्र है कि वहाँ जाते ही मन शांत हो जाता है।

ठीक है। मैं यह पुस्तक ले जाती हूँ और कल से मैं प्रात:काल छ: बजे आने की कोशिश करूंगी।

हाँ। आप कम-से-कम एक सप्ताह भी यदि समय निकाल लोगी तो अवश्य आपको शांति मिलेगी और आपका तनाव दूर होगा।

हाँ और एक बात के लिए तो आपको धन्यवाद देना ही भूल गई कि - आपने मेरे बेटे के स्वभाव में बहुत परिवर्तन कर दिया है। अब वह बहुत समझदार हो गया है।

इसमें धन्यवाद की क्या बात है ? मेरे ससुरजी ने तो पूरे मोहल्ले के बच्चों के लिए पाठशाला की व्यवस्था कर दी है और उसमें कई बच्चे आ रहे हैं।

अच्छा! ये तो बहुत अच्छी बात बताई आपने। वास्तव में आपके परिवार में बहुत उदारता है और आप अपने बच्चों के साथ परोपकार में भी पीछे नहीं रहते हो।

* * *

कालचक्र

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र ऑण्टीजी।

एक बच्चा-ऑण्टीजी! आपने बताया था कि नाना गुरु घर में सबसे छोटे और लाड़ले थे, फिर उन्होंने दीक्षा क्यों ली ?

दीक्षा वे नहीं लेते जो परिवार से तिरस्कृत होते हैं, दीक्षा वे लेते हैं जिन्हें धर्म एवं जीवन का सही स्वरूप समझ में आ जाता है।

नानागुरु अपने परिवार के ही लाड़ले नहीं थे। वे पूरे गाँव के लाड़ले थे। बचपन में उन्हें धर्म में विशेष रुचि नहीं थी, किन्तु वे बहुत इन्टेलीजेन्ट थे। एक बार उनकी बहन ने 5 उपवास किये थे। तब नानागुरु को माताजी ने भादसोड़ा (बहन की ससुराल) उनको साड़ी ओढ़ाने भेजा। उनके जीजाजी उन्हें प्रवचन में ले गये। प्रवचन में छः आरों का विस्तृत वर्णन चला।

बच्चे - छः आरा क्या होता है ?

समय (काल) का एक चक्र होता है। उसके दो पार्ट्स होते हैं - उनके नाम हैं - अवसर्पिणी और उन्सर्पिणी। अभी अवसर्पिणी काल चल रहा है। दोनों के छः-छः पार्ट्स होते हैं।

(ब्लेक बोर्ड पर चित्र बनाकर समझाते हुए)

अभी पंचम आरा चल रहा है, इसके बाद छठा आरा आयेगा - उसमें मनुष्य की उम्र अधिकतम 20 वर्ष और लम्बाई दो हाथ जितनी होगी।

मौलिक बीच में बोलते हुए - वो तो कार्टून लगेंगे।

हाँ बेटे। उनकी हालत बहुत दयनीय होगी। उन्हें मानव की तीन मूलभूत आवश्यकता - रोटी, कपड़ा और मकान, ही नहीं मिलेगा।

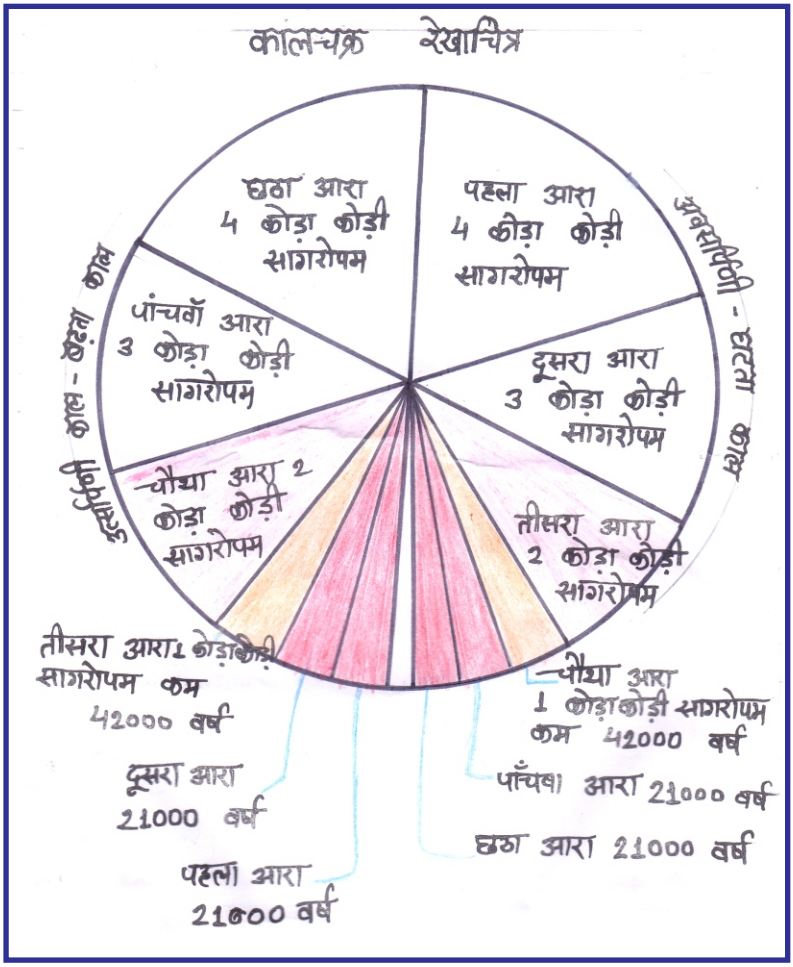

तो वह जियेंगे कैसे ?

उस समय गंगा-सिंधु जैसी महानदियाँ, नाले जैसी छोटी हो जायेंगी। उन नदियों में से वे लोग मछलियाँ निकालकर किनारे की रेत में गाड़ (दबा) देंगे। वह रेत तवे जैसी गरम रहेगी। गर्मी से वह मछलियां उसमें पक जाएंगी। सुबह दबाई मछली शाम को खा लेंगे और शाम को दबाई हुई मछलियाँ सुबह खायेंगे। उसमें से जो हड्डियां आदि निकलेंगी वह वहां रहने वाले पशु-पक्षी खायेंगे। लोग गुफा में रहेंगे। मकान, दुकान आदि कुछ नहीं होंगे। आज की तरह पेड़-पौधे,

यातायात के साधन, बिजली आदि कुछ भी नहीं होंगे। सब तरफ वीरान और भयावह रेगिस्तान तपता हुआ होगा।

बच्चे - वो लोग राशन कहां से लायेंगे ?

राशन-वाशन कुछ नहीं होगा। सिर्फ मच्छ-कच्छ से ही भूख शांत करनी होगी। छः वर्ष का बच्चा मम्मी-डैडी हो जाएगा। एक-एक महिला के 10-12 बच्चे होंगे। उनके नाक-कान आदि हमेशा बहते रहेंगे। स्नान आदि कुछ नहीं होगा। जीवनभर गंदगी में ही रहना होगा। उनकी बनावट विभत्स (कुरूप) होगी। वे मरकर प्रायःनरक और तिर्यंच में जायेंगे।

बस करो ऑण्टीजी। हमको तो सुनकर ही डर लग रहा है। क्या हमको भी वहाँ जाना पड़ेगा ?

(मौलिक बीच में बोलते हुए-)

मम्मा! मैं जीवों को कष्ट नहीं देता हूँ-

बेटा! मोबाइल, टी.वी., लैपटॉप आदि भी चलाने से जीवों को कष्ट पहुँचता है। तुमने देखा होगा महाराज साहब गोचरी (खाना-पानी लेने) पधारते हैं तब जिसके पास मोबाइल, सेल की घड़ी, पानी, कच्ची वनस्पति या बीज सहित फल या अन्य कोई सचित वस्तु-फ्रीज आदि को जो छू (स्पर्श कर) रहे हों, उनके हाथ से गोचरी-पानी आदि नहीं लेते। क्योंकि उन जीवों को कष्ट पहुँचता है।

जो किसी जीव को नहीं सताते, सभी की सेवा के लिए तत्पर रहते, सभी को अपनी तरफ से सुख पहुँचाने का प्रयास करते हैं तथा हमेशा अच्छे विचार रखते हैं उन्हें छठे आरे में जन्म नहीं लेना पड़ता है। जो अण्डा, मांस, शराब आदि नहीं खाते-पीते तथा शिकार, चोरी आदि बुरे कार्य नहीं करते वे भी छठे आरे में जन्म नहीं लेते।

बच्चे - हमें भी छठे आरे में जन्म नहीं लेना है।

जिस-जिसको छठे आरे में जन्म नहीं लेना है वे सब अपना हाथ ऊपर करो और हमेशा के लिए अंडे और मांस खाने के तथा अनावश्यक टी.वी., मोबाइल, लेपटॉप आदि का प्रयोग नहीं करने का नियम ले लो।

सभी बच्चे खड़े होकर नियम लेते हैं।

मयंक - अरे ऑण्टीजी हम तो भूल ही गये - नानागुरु ने प्रवचन सुना फिर क्या हुआ ?

'नानागुरु' प्रवचन सुनकर घोड़े पर बैठकर भादसोड़ा से अपने घर आ रहे थे (चित्र दिखाते हुए) रास्ते में उनके कानों में प्रवचन चल रहे थे। उनका छठे आरे के लोगों के जीवन पर गहन चिंतन चल रहा था। सोचते-सोचते उनकी आँखों से आंसू बहने लगे। उन्होंने मन ही मन संकल्प कर लिया मुझे छठे आरे में जन्म नहीं लेना है। और इस संकल्प को पूर्ण करने के लिए उन्होंने निर्णय लिया कि - कुछ भी हो मुझे अब दीक्षा लेनी है।

घर आकर उन्होंने अपना निर्णय परिवार के सामने बताया और उन्हें दीक्षा की अनुमति के लिए तैयार करके समय आने पर दीक्षा ली।

सब बच्चे - ऑण्टीजी! आज हमको बहुत अच्छी और नई जानकारी दी आपने। हमको बहुत अच्छा लगा।

अजैन बच्चे-आज तो आपकी बातें सुनकर हमारे मन में उथल-पुथल मच गई। आज आपने जो बताया वह हम मम्मी-डैडी को भी बतायेंगे। हम तो आज ही आपसे संकल्प लेते हैं कि अंडे-मांस और मांस से बनी कोई भी डिश जीवन में कभी नहीं खायेंगे।

थैंक्यू। वे प्राणी हमसे रक्षा की अपेक्षा रखते हैं और हम उनके भक्षक बन जाएं, यह कार्य मानवता के विरूद्ध है। हमें प्रत्येक प्राणी की रक्षा करनी चाहिए।

* * *

निर्लिप्त नानागुरु

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र -

(सभी बच्चों से पाठ सुनकर नया पाठ याद करने के लिए देती हुयी रीनाजी -)

आज मयंक नहीं आया ?

मौलिक - हाँ, वह आज नहीं आयेगा।

क्यों ?

वह कह रहा था - "मेरी मम्मी का स्वास्थ्य बिगड़ गया है, मैं बड़े धर्म संकट में हूँ। एक तरफ मम्मी की सेवा तो दूसरी तरफ नानागुरु के जीवन प्रसंग सुनने का अवसर। लेकिन मैंने मम्मी की सेवा को प्राथमिकता दी। क्योंकि मुझे उसी में सुनने की सार्थकता लगी।"

बहुत अच्छा। सभी बच्चों ने मयंक के विचार सुने ?

हाँ ऑण्टीजी।

यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। मेरा सुनाना सार्थक हुआ। तुम सब भी इस बात को ध्यान रखना।

हाँ ऑण्टीजी। मौका आने पर आप हमारी परीक्षा कर लेना। हम सब सेवा के लिए तैयार रहेंगे।

(एक बच्चा) ऑण्टीजी! आपने कल कहा था कि नाना गुरु ने दीक्षा ले ली। तो क्या उन्हें नये-नये कपड़े पहनने का शौक नहीं था ?

सब बच्चे ध्यान से सुनना - महेश ने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है - नाना गुरु दीक्षा से पहले वैराग्य में थे (दीक्षा लेने की ट्रेनिंग में थे) तब की घटना है -

एक दिन उदयपुर से श्री राजमलजी बाफना के भाई साहब वैरागीजी (नाना गुरु) को अपने घर ले गये, भोजन के लिए। भोजन के पश्चात् उन श्रावकजी ने एक बहुमूल्य वस्त्रों की पेटी खोल कर

आपके समक्ष रख दी और कहा कि - "इसमें से जैसी पसन्द हो, शेरवानी और मोटडा (पगड़ी) ले लो। यह टोपी ठीक नहीं लगती।" तब वैरागीजी का सहज उत्तर था, "मुझे मेरे गुरुदेव का पदानुसरण करना है। मुझे फैशनेबल वस्त्रों से क्या प्रयोजन?" यह बात श्रावकों में काफी फैल चुकी थी कि वैरागीजी किसी प्रकार के प्रलोभन में न आकर खादी के वस्त्र ही पहनते हैं। कुछ दिनों बाद श्री चान्दमलजी बरड़िया जो कि प्राय: खादी ही पहनते थे, वैरागीजी को अपने घर पर भोजन कराने ले गए और अपने पास बढ़िया खादी के जो वस्त्र थे, पेटी खोलकर दिखाते हुए कहने लगे कि आपको जो चाहिये, ले लो। वैरागीजी ने कहा - "अभी मेरे पास पर्याप्त वस्त्र है। अत: मुझे कुछ नहीं चाहिये। बस आप तो मुझ पर कृपा बनाये रखे और साधना के मार्ग पर बढ़ने के लिए शुभाशीर्वाद प्रदान करें।"

सुने आपने नाना गुरु के विचार ? उनकी निर्लिप्तता और सादगी कैसी थी। आज तो वस्त्रों के नाम पर मनुष्य पागल हो रहा है। विशेषकर लड़कियाँ, पारदर्शी और अर्द्धनग्न शरीर दिखे इस तरह के वस्त्र पहनती हैं। सब पिक्चरों और पाश्चात्य संस्कृति की नकल में लगे हैं। उन्हें यह भी भान नहीं रहता है कि वो लोग ऐसे कपड़े क्यों पहनते हैं ?

पिक्चर में तो नाचना,

गाना और शरीर प्रदर्शन करके लोगों को आकर्षित करना उनका लक्ष्य है, यह उनका धंधा है। और विदेशियों को भारतीय मौसम गर्म लगता है तथा उनके देश का रहन-सहन ही ऐसा है। वहाँ चरित्र का विशेष महत्व नहीं है। इसलिये वे लोग ऐसे वस्त्र पहनते होंगे। लेकिन आपके जीवन का ऐसा कोई उद्देश्य नहीं है; अत: हम उनकी नकल क्यों करें?

हमारी संस्कृति, हमारी परंपरा, हमारा रहन-सहन आदि सभी देश, काल के अनुसार व्यवस्थित है। लेकिन हमने जो नकल करके रहन-सहन बदला है वह हमारी संस्कृति के विरूद्ध तो है ही साथ ही शारीरिक और मानसिक दोनों तरह से हानिप्रद है। वस्त्रों के कारण ही हमारे देश में चरित्रहीनता बढ़ी है। चरित्र का जीवन में बड़ा महत्व है। जैसा कि -

If wealth is lost nothing has lost.
If health is lost something has lost.
If character is lost everything has lost.

धन तो पुरुषार्थ करके पुन: प्राप्त किया जा सकता है, शरीर भी इलाज से कुछ ठीक हो सकता है किन्तु चरित्र तो कांच के समान है जिसमें एक बार दरार होने पर दाग नहीं हटाया जा सकता है। अत: हमें चरित्र बचाना है, इसके लिए हमें पारदर्शी और अधूरे वस्त्र नहीं पहनना चाहिए। हमारा शरीर ढका रहता है तो प्रदूषण के साथ बुरी नजरों से भी हमारी सुरक्षा होती है।

मेरी बात किस-किस को पसंद आई ? कौन-कौन व्यवस्थित वस्त्र पहनने का संकल्प कर सकता है।

सब बच्चे हाथ खड़ा करके संकल्प लेते हैं।

* * *

इन्द्रिय विजेता नानागुरु

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र-

क्या आज मौलिक नहीं है?

मौलिक रोते हुए प्रवेश करता है -

क्या हुआ बेटे ?

मैं खाना खा रहा था तो दादी ने मुझे खीर पीने को कहा - मैंने एक घूंट पी, उसमें आपने शक्कर नहीं डाली थी। मैंने दादी से कहा - मुझे नहीं पीना, इसमें शक्कर नहीं है, तो दादी कहने लगी - तू रोज नाना गुरु की कहानी सुनता है, क्या तूने ये बात नहीं सुनी कि नाना गुरु किसी भी चीज का स्वाद लेकर नहीं ग्रहण करते थे? क्या दादी सही कह रही थी ?

हाँ बेटा। (सभी बच्चों को सम्बोधित करते हुए)

जिस प्रकार पनिहारिन पानी

का घड़ा भरकर घर की ओर चलती है, तब वह चलते-चलते दूसरी बहिनों से बात भी करती जाती है, यदि पैर में कांटा चुभ गया हो तो उसे भी निकाल लेती है और गोदी में शिशु हो तो उसे भी दुलार करती रहती है। इतना सब कुछ करने के बाद भी उसका ध्यान घड़े की ओर केन्द्रित रहता है।

ठीक इसी प्रकार आचार्य श्री जी विशाल संघ की सारणा-वारणा-धारणा और संचालन करते हुए भी आत्मस्थ रहते हैं। एक बार का प्रसंग है - प्रात:काल गुरुदेव दुग्धपान करने विराजे थे। दुग्धपान करने के बाद संतों ने सहज ही पूछ लिया - दूध फीका था या मीठा ? गुरुदेव ने फरमाया - "भाई इस ओर तो मैंने ध्यान ही नहीं दिया।" ऐसे एक नहीं अनेक अवसर गुरुदेव के साथ जुड़े हुए हैं, जिनमें गुरुदेव की ऐन्द्रियक वृत्तियों से उदासीनता झलक उठती है।

ऑण्टीजी! स्वाद लेने से क्या होता है ? क्या उसमें भी पाप लगता है ?

हाँ, हम किसी भी चीज को बार-बार चख-चखकर खाते हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं तो हमारे बहुत कर्म बंध जाते हैं।

अच्छा मम्मा! मैं भी कोशिश करूंगा, आप और दादीजी जैसा खाना खिलाओगे वैसा मैं खा लूंगा।

ऑण्टीजी! ये काम तो बड़ा कठिन है। मैं बिना शक्कर का खाना खा सकता हूँ, किन्तु बिना नमक या कम नमक का खाना नहीं खा सकता हूँ। मेरी मम्मी का ब्लड-प्रेशर हाई रहता है, इसलिए सब्जी में रोज ही कम नमक रहता है। मैं अपनी कटोरी में डाल लेता हूँ।

बेटा! नाना गुरु इन्द्रिय विजेता थे। आप ऐसा नहीं कर सकते हो। किन्तु पापा से बचने का कुछ तो प्रयास किया जा सकता है। कैसे ?

कई लोग सम्पूर्ण संचित खाने का त्याग करते हैं, वे नमक को सेंककर रखते हैं। इससे बार-बार नमक में जन्म-मरण करने वाले जीवों की विराधना से हम बच सकते हैं। चार स्थावर (पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय और वायुकाय) में एक अंतर्मुहूर्त में उत्कृष्ट 12,824 बार जीव जन्म-मरण करते हैं। जन्म-मरण की वेदना भयंकर होती है। अचित होने के बाद यह जन्म-मरण उसमें नहीं होता है। अन्यथा जब-जब उसका स्पर्श होता है, तब-तब स्पर्श करने वाले के द्वारा उन जीवों को कष्ट पहुँचता है। भगवान् ने एक चीरमी जितनी (एक चिमटी नमक) पृथ्वीकाय में असंख्यात जीव बताए हैं। यदि वे जीव बाहर निकलकर एक भँवरे जितना बड़ा शरीर बनायें तो एक जंबूद्वीप में नहीं समाये।

फिर एक डिब्बे भर नमक में तो कितने सारे जीव होते हैं। हम सचित नमक को बार-बार स्पर्श करेंगे तो पूरे नमक के डिब्बे के जीवों को कष्ट पहुँचेगा। सेंकने के बाद पुन: जीवों की उत्पत्ति नहीं होती है। अत: इतने जीवों को कष्ट देने से हम बच सकते हैं।

थैंक्यू ऑण्टीजी! हम घर जाकर हमारी मम्मी को सारी बातें बताते हैं।

एक बच्चा - क्या सण्डे को अपनी मम्मी को भी यहाँ ला सकते हैं ?

हाँ! सभी बच्चे अपनी-अपनी मम्मी को इस सण्डे जरूर लाना।

एक बच्चा - मेरी मम्मी पूछ रही थी - "नयनहीन एक वृद्धा माई, दर्शनकर ज्योति प्रगटाई। देव नौका को उल्टी किना, भक्त उबार अभय वर दीना।" इसका क्या अर्थ है ?

सण्डे को अपनी मम्मी को ले कर आओगे तो हम उनको सब के साथ बतायेंगे।

ठीक है।

ऑण्टीजी! विजय गिर गया।

(विजय को उठाकर सहलाते हुए रीनाजी-)

हमें नीचे देखकर धीरे-धीरे चलना चाहिए। एक बार नाना गुरु का भी पैर फिसल गया था ?

फिर क्या हुआ ? उनको हॉस्पीटल ले गये ?

नहीं। मैं तुम्हें कल बताऊंगी।

* * *

नानागुरु का अदम्य साहस

खरियाल रोड में अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर जिनवाणी की अक्षय धारा से जन-जन के हृदय को अभिसिंचित एवं अतृप्त कर आचार्य देव पुन: बागबहरा, महासमुंद, आरंग आदि क्षेत्रों को पावन करते हुए, रायपुर की ओर अग्रगामी हुए।

अशुभ कर्मोदयजनित एक दुर्घटना घटित हो गई। प्रात:काल आरंग से रायपुर की ओर प्रस्थान किया। लगभग ढाई मील पर मार्गवर्ती ग्राम रसनी में ग्रामवासियों के आग्रह को देखते हुए लगभग आधे घंटे तक धर्मामृत का पान कराया, वहां से नवागांव के लिए प्रस्थान कर दिया। बीच में वर्षा के कारण थोड़ा रुककर पुन: विहार किया। लगभग एक मील चले होंगे कि सामने से आते हुए ट्रक से उड़ने वाले पानी के छीटों से बचने हेतु सड़क को छोड़कर एक ओर बढ़ रहे थे कि मिट्टी की चिकनाहट एवं सड़क के ढलान के कारण अचानक पैर फिसल गया और संपूर्ण शरीर का भार दाँए हाथ पर आ गिरा। परिणामत: दाँए हाथ की कलाई की हड्डी दो जगह से टूट गई तथा लगभग आधा इंच हड्डी चमड़ी सहित ऊपर निकल आई।

आचार्य देव (नाना गुरु) ने तत्काल जिस अदम्य साहस का परिचय दिया, वह वर्णनातीत है। गुरुदेव ज्यों ही बाएं हाथ का सहारा लेकर खड़े हुए और दाएं को देखा तो लगभग एक डेढ़ इंच हड्डी कलाई से ऊपर चढ़ आई। गुरुदेव ने तुरन्त साथ वाले संतों से कहां - "हाथ को दोनों ओर से पकड़कर जोर से खींचो।" संतों ने वैसा ही किया, जिससे बाहर निकली हुई हड्डी अंदर बैठ गई। और ऊपर से कपड़े की पट्टी कसकर बांध दी।

उस असह्य वेदना के क्षण में भी नाना गुरु की सौम्य मुद्रा में तनिक भी अंतर नहीं आया। उसी शांति एवं सहज मुद्रा में एक मील का विहार कर नवागांव पहुँचे। राजपुर श्रावक संघ को जानकारी मिलने पर तत्काल डॉक्टर को लेकर उपस्थित हुए।

किन्तु धैर्य की प्रतिमूर्ति आचार्य भगवन् ने सूर्यास्त हो जाने के कारण डॉ. साहब को हस्त स्पर्श के लिए सर्वथा निषेध कर दिया कि "मैं रात्रि में कुछ भी उपचार नहीं ले सकता। यदि आप कुछ समय पूर्व पहुँच जाते तो उपचार लिया जा सकता था।"

रात्रि में वेदना असह्य हो गई। हाथ कोहनी तक सूज गया। सामान्य से आघात पर असह्य पीड़ा का अनुभव होता है, किन्तु गुरुदेव के मुख कमल पर झलकने वाली सस्मित सौम्य भाव में कहीं कोई परिवर्तन परिलक्षित नहीं हो रहा था। दूसरे दिन उसी वेदना में वहाँ से 6-7 मील का विहार कर जोरा गाँव पधारे। तब मध्यान्ह तीन बजे के लगभग चिकित्सक आए और अस्थि को व्यवस्थित कर पक्का प्लास्टर बाँध दिया। वहां से दूसरे दिन राजपुर पधार गये।

ऐसा था नाना गुरु का अदम्य साहस।

(नानेश चालीसा का सामूहिक पाठ करने के बाद मयंक-)

थैंक्यू वैरी मच ऑण्टीजी।

किस बात के लिए ?

मेरी मम्मी के स्वभाव में पिछले सप्ताह से काफी परिवर्तन हुआ है। वो बहुत चिड़-चिड़े स्वभाव वाली हो गई थीं। किन्तु जब से आपके पास आने लगीं, तब से उन्होंने मुझे डांटना बिल्कुल बंद कर दिया। पहले मैं कुछ भी पूछता था तो मम्मी डांट कर ही जवाब देती थी। किन्तु अब तो बड़े प्रेम से मुझसे बातें करती हैं।

एक और आश्चर्य की बात यह है कि - मम्मी-डैडी का झगड़ा भी बंद हो गया। पहले तो दो-चार दिन भी निकलने मुश्किल होते थे और दोनों के झगड़े के बाद गुस्सा मुझ पर उतरता था।

यह तो नाना-गुरु के समीक्षण ध्यान का प्रभाव है। मैं तो सिर्फ माध्यम हूँ।

* * *

नानागुरु की समता

(संडे मध्यान्ह में सभी बच्चे अपने पेरेन्ट्स के साथ-)

आइए-आइए - सभी का संस्कार पाठशाला में स्वागत है।

आज आप सबको यहां पधारने का कष्ट करने के लिए धन्यवाद।

एक महिला - धन्यवाद के पात्र तो आप हैं जो हमारे बच्चों को आप इतना अच्छा मार्गदर्शन दे रही हैं। हम तो सोच भी नहीं सकते हैं कि आप जैन लोग हम अजैनों के बच्चों को भी अपने साथ अपने धर्म स्थान पर आने देते हो।

रीनाजी - अरे बहन आप कैसी बात कर रही हो। हमारा धर्म जाति-पाति का भेद नहीं सिखाता है। हमारे गुरु आचार्य श्री नानालालजी महाराज साहब ने लाखों बलाई समाज के लोगों का उद्धार कर उन्हें जैन धर्मानुयायी बनाया है।

Mandir, Masjid, Church तीनों में 6-6 अक्षर हैं।

Geeta, Kuran, Bible तीनों में 5-5 अक्षर हैं।

जब अक्षर के अंकों में समानता है तो हमारे नजरिये में असमानता क्यों ? इन अक्षरों का गणित कहता है - 6 - 5 = 1, God बचा है।

आज के युग में धार्मिक संस्कार जरूरी हैं -

"बचपन में संस्कार नहीं मिले तो जवानी बिगड़ जाती है, जवानी में गुरु नहीं मिले तो बुढ़ापा बिगड़ जाता है और बुढापे में धर्म नहीं मिला तो, गति बिगड़ जाती है।"

आपने बिल्कुल सही बात कही है। गुरु तो जीवन में बहुत जरूरी हैं। आप बच्चों को जिन गुरु के बारे में बता रही हो क्या वे गुरु वही हैं - जिनके नाम का बैनर मुसलमानों ने फाड़ दिया था फिर कुछ झगड़ा हुआ था। मुझे जहां तक ध्यान है ये 1965 की बात है हम लोग रायपुर के रहने वाले थे। सर्विस के कारण यहां आना हुआ।

हाँ बहन आपने बहुत अच्छा याद रखा।

नानागुरु बहुत समताशील थे, उनकी समता ऐसी थी कि बड़े-से-बड़ा दंगा होने की जहाँ संभावना लगती वहाँ भी उनकी क्षमा सबको भाईचारा सिखा देती है।

मुसलमानों की रैली निकलते हुए

यह घटना रायपुर में 1965 के चार्तुमास के समय की है - ईद मिलादुन्नबी के जुलूस में सम्मिलित शोर मचाते हुए ट्रक पर बैठे युवकों ने 'नाना गुरु' के नाम का बैनर जिसमें प्रवचन सम्बन्धी सूचना अंकित थी, फाड़ दिया। जिससे क्षुब्ध हुए जैनियों ने जुलूस को आगे नहीं बढने दिया। सारे हिन्दू भी उसमें सम्मिलित हो गये। घटनास्थल पर पुलिस आ गई। आखिर मौलाना साहब बोले, मैं कल बैनर नया लगाकर व्याख्यान में माफी मांग लूंगा। अभी जुलूस को जाने दीजिये।

दूसरे दिन व्याख्यान स्थल पर अपार भीड़ थी, अवांछित हादसा न हो जाये इसलिए पुलिस इंस्पेक्टर साहब भी आ गये। मौलाना साहब अपने साथ बैनर लेकर उपस्थित हुए। प्रवचन सभा में आचार्य श्री को संबोधित कर मौलाना हामिद अली ने कहा - कि कल बैनर फाड़ने की घटना से आचार्यजी के नाम की तौहीन हुई एवं जैन समाज के लोगों को क्षोभ हुआ है। जिसका मुझे हार्दिक दु:ख है। उक्त घटना के प्रति मुस्लिम समाज की ओर से खेद व्यक्त करते हुए उन्होंने जैन समाज से माफी मांगी एवं आशा व्यक्त की, कि अब जैन बंधु सद्भावना बनाये रखेंगे। क्षमायाचना करते हुए एक नया बैनर भी भेंट किया।

इसके उत्तर में जैनाचार्य श्री नानालालजी महाराज साहब ने कहा - बैनर फाड़े जाने की घटना को मैं अपना अपमान नहीं समझता और बैनर फाड़ने से मेरे नाम की तौहीन होने का प्रश्न नहीं उठता। आचार्य श्री ने कहा - मैं लोगों के दिलों को जोड़ने आया हूँ, तोड़ने नहीं। हम सब भाई-भाई हैं इसे मानकर आप चलें। मैं भाई-भाई का झगड़ा पैदा करने नहीं बल्कि समता का संदेश देने आया हूँ। मैं पर्दे में नहीं मन में रहता हूँ।

आपश्री का वक्तव्य सुनकर सभी गद्गद हो गये। मौलाना ही नहीं, पूरा मुस्लिम समाज प्रशंसा के स्वर में बोल उठा - 'वाह रे! आपकी गजब की समता और सहनशीलता।'

पुलिस इंस्पेक्टर के दिल पर तो ऐसी छाप पड़ी कि वो प्रवचन पश्चात् वहीं पर खड़े होकर कहने लगे - मुझे नहीं मालूम था कि यहां इतने सुंदर इंसानियत भरे भाषण होते हैं, आप तो वस्तुत: विश्व शांति के मसीहा हो, दूसरे दिन से स्वयं अपनी इच्छा से व्याख्यान के समय पर आवागमन पर प्रतिबंध लगा दिया। कई श्रावक पहले इस कार्य के लिए कोशिश कर-करके थक गये पर आवागमन

पर प्रतिबंध न लगा सके, किन्तु गुरु नाना की समता प्रतिबंध लगाने में सक्षम बनी।

एक महिला - वाह! बहन धन्य है ऐसी क्षमाशीलता। उपदेश तो सब देते हैं पर प्रसंग उपस्थित होने पर आचरण करना कठिन होता है।

ऐसी बात नहीं है बहन! जो महापुरुष होते हैं वे पहले आचरण करते हैं फिर उपदेश देते हैं। इसीलिए तो उनके उपदेशों का प्रभाव होता है।

आपकी बात सही है। किन्तु ऐसे गुरु का सानिध्य भी तो मिलना चाहिए। उनके गुरु ऐसे महान् होंगे।

हाँ बहन, उनके गुरु की महानता तो शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। उनके गुरु आचार्य श्री

गणेशलालजी महाराज साहब ने उन्हें शिक्षा दी थी कि - "तुम्हें जितने भी सच्चे साधु और योग्य श्रावक मिलें, सबसे यही कहना - मेरे में कोई त्रुटि दिखाई दे तो उसे कृपा करके मुझे अवश्य बतावें। कोई त्रुटि बतावे तो उस पर गुस्सा कभी मत करना एवं संशोधन यथार्थ हो तो सविनय स्वीकार कर लेना।

वाह! कितना कठिन कार्य है ? यही तो नहीं हो सकता है।

नाना गुरु फरमाते थे - मैंने गुरुदेव की यह शिक्षा विनयपूर्वक हृदय में धारण की है और इसको सदा याद रखता हूँ - चाहे मैं युवाचार्य हुआ या आचार्य, संघ और समाज के उत्तरदायित्व का वहन करते हुए भी यह शिक्षा मेरे लिए पूर्ण उपयोगी सिद्ध हुई है।

धन्य है उन महापुरुष को, अपने लिए तो बहुत कठिन हैं।

जब तक हम पक्का संकल्प नहीं करते तब तक बुरी आदतें छूटती नहीं हैं। इसलिए हम ऐसा संकल्प करें कि यदि मुझे गुस्सा आयेगा तो मैं उस दिन मोबाइल नहीं चलाऊंगा, टी.वी. नहीं देखूंगा आदि।

ठीक है हम आज से ही प्रयास करते हैं - बच्चे-बूढ़े सभी संकल्प करेंगे कि यदि हमें आज किसी प्रसंग पर गुस्सा आयेगा और हम उस पर कंट्रोल नहीं कर पायेंगे तो पूरे दिन मोबाइल का उपयोग नहीं करेंगे।

हम सब संकल्प करते हैं। अब नानेश चालीसा....

आपकी गुरु चालीसा सुनकर हमारे मन में बहुत से प्रश्न उठते हैं। लेकिन आज तो आपके यहाँ से जाने की इच्छा ही नहीं हो रही किन्तु जाना तो पड़ेगा। आप भी गृहिणी हैं आपको भी काम होंगे। आप यदि हमें समय दे सकें तो हम भी बच्चों के साथ....

आप सहर्ष बच्चों के साथ जरूर आयें।

धन्यवाद। हमको बहुत अच्छा लगा। अब आपने स्वीकृति दे दी है तो हम कल अवश्य पूछेंगे।

* * *

श्रद्धा का प्रतिफल

कुछ पंक्तियां - नयन-हीन इक वृद्धा माई।
दर्शन की ज्योति प्रकटाई॥
हाँ बहन। यह बात बिल्कुल सही है।
तो क्या वो कोई चमत्कार करते होंगे ?

नहीं नहीं। यह तो व्यक्ति की श्रद्धा और भक्ति का चमत्कार है।

वह अप्रतिम भाग्यशालिनी महिला थी। नोखामण्डी निवासी स्व. श्री खीमराजजी लुणावत की धर्मपत्नी श्रीमती पन्नी बाई। 85 वर्षीय पन्नी बाईजी की विगत 11 वर्षों से नेत्र ज्योति समाप्त हो गई थी। नेत्र ज्योति के संपूर्ण अभाव के साथ ही वृद्धावस्था एवं अन्यान्य शारीरिक रुग्णताओं के कारण वे चलने-फिरने में भी अशक्त थीं। उनका पूरा समय चारपाई पर ही व्यतीत होता था। इतना होने पर भी श्रद्धानिष्ठ पन्नीबाई की धार्मिक आस्था अचल थी और वह परमात्म स्मरण में लीन रहती थीं।

संवत्सरी पर्व के दूसरे दिन श्री चतुर्भुजजी सेठिया के यहाँ दर्शन हेतु नाना गुरु का पदार्पण हो रहा था। उक्त भाग्यशालिनी माँ साहिबा का निवास भी उसी मार्ग पर था। कुछ जयनाद के स्वर माँ साहिबा के कानों में गये, तो उनसे रहा नहीं गया और अपने पुत्र तोलारामजी लुणावत से कहा कि - "आचार्य महाराज का इस तरफ पदार्पण हो रहा है। अब तो गुरु महाराज से प्रार्थना कर दो कि मुझे मांगलिक सुना दें। मैं दो महीने से दर्शनों के लिए तरस रही हूँ।" श्री तोलारामजी ने विचार किया - माँ बार-बार कहती रहती हैं और इधर आचार्य श्री जी का आना भी हो गया है। सहज ही दर्शन हो जायेंगे। तद्नुसार श्री तोलारामजी एवं माँ जी के पौत्रादि अपने मकान के बाहर खड़े हो गए। और आचार्य भगवन् के उस मार्ग से गुजरने पर निवेदन कर माँ साहिबा को दर्शन देने हेतु ले गए।

अपने आराध्य के दर्शन कर माँ साहिबा का हृदय उल्लास से भर उठा। चेहरे से ही श्रद्धाजन्य अपार प्रसन्नता झलक रही थी। गुरुदेव ने मंगल पाठ सुनाया और कहा - "मुझे पूर्व में किसी ने संकेत नहीं किया अन्यथा मैं पहले भी आ जाता।" त्याग प्रत्याख्यान करवाकर आचार्य भगवन् स्थानक पधार गये।

इधर वे वृद्धा माँ जी डण्डे के सहारे अपनी खाट से उठकर खड़ी हुईं और दो कदम आगे बढ़कर सम्मुखस्थ पुत्र-पौत्रों से कहने लगीं - यह लोटा रास्ते में क्यों रखा है ? अमुक वस्तु यहां क्यों रखी हुई है ? यह सब सुनकर सम्मुखस्थ व्यक्तियों ने साश्चर्य कहा - "आपको दिखाई देने लगा है ?" वृद्धा ने उत्तर दिया, "हाँ, दिख रहा है, तभी तो बता रही हूँ।" पुत्र ने अत्यन्त विस्मय की मुद्रा में पूछा - "यह कब से और कैसे दिखने लगा ?"

वृद्धा माँ जी ने अत्यन्त श्रद्धाप्लावित स्वर में कहा - "गुरुदेव मांगलिक सुनाकर गए और इधर दिखने लगा, गुरुदेव की मुझ पर असीम कृपा है।" दूसरे दिन तो अपनी समस्त वेदना, पीड़ाओं को विस्मृत कर अथवा उनसे मुक्त हो वह 85 वर्षीय महाभाग महिला गुरुदेव के दर्शनार्थ धर्मस्थान में आ गई।

(आश्चर्य से) क्या यह सच है ?

हाँ बहन। ऐसे एक नहीं कई श्रद्धालु लाभान्वित हुए।

साधु-महात्मा तो वैसे ही बहुत तंत्र-मंत्र जानते हैं।

ये वैसे तंत्र-मंत्र वाले साधु बाबा नहीं हैं। ये तो अकिंचन, पंच महाव्रतधारी साधु हैं। और यह जो कुछ भक्तों को फल मिलता है वह उनकी श्रद्धा भक्ति का फल है।

अच्छा। हम और कुछ तो कर सकेंगे या नहीं, पर आज से मैं नियमित नानेश चालीसा जरूर करूंगी।

जिस-जिस की इच्छा हो वह श्रद्धा से यह बुक (नानेश चालीसा) ले सकते हैं (सभी बच्चे और महिलाएं) हम जरूर करेंगे। हमको भी एक-एक बुक दे दो। किन्तु हमको इसमें आई हुई बातें अवश्य समझाना।

हाँ-हाँ। हमारी पाठशाला में रोज नानेश-गुरु के ही प्रसंग चलते हैं। चलो अब नानेश चालीसा.....

धन्यवाद।

* * *

नाम स्मरण का अचिन्त्य प्रभाव

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

आज हमको सबसे पहले -

देव नौका को उल्टी कीन्हा।

भक्त उबार अभय वह दीन्हा॥

गाथा का अर्थ बताइये -

यह प्रसंग है सिल्चर (आसाम) का। उदयरामसर निवासी श्री नथमलजी सिपानी व्यावसायिक दृष्टि से आसाम में कार्यरत थे। एक दिन बाढ़ पीड़ितों के लिए अपने अन्य बंगाली सहयोगियों के साथ श्री सिपानीजी खाद्य-सामग्री लेकर नौका द्वारा बराक नदी पार कर रहे थे। नौका ज्यों ही नदी के बीच में पहुँची, जल के तीव्र प्रवाह के कारण सहसा उलट गई। चारों बंगाली बंधु तो तैराक थे, किन्तु सिपानीजी को तैरना नहीं आता था। वे पानी की लहरों के बीच गोता खाने लगे। जीवन और मृत्यु के बीच होने वाले इस संघर्ष में उन्हें अपने आराध्य गुरुदेव का पुनीत स्मरण हो आया और सहसा तीव्र संकल्प जगा - "गुरुदेव आपकी ही शरण है, मैं पुण्य कार्य के लिए जा रहा था, फिर ऐसी विकट परिस्थिति कैसे बन गई ? भगवन् इस संकट से बच गया तो तुरन्त आप श्री के दर्शनार्थ उपस्थित होऊंगा और यथाशक्ति तपस्या करूंगा।"

इस संकल्प के साथ ही सहसा एक आटे का बोरा उनके सीने के नीचे आकर टिक जाता है और वे उस पर चढ़कर बैठ जाते हैं।

इधर वे बंगाली भाई नदी के किनारे पहुँचकर सोच रहे थे कि वह सेठ तो आज मर गया। तब तक उन्होंने देखा कि सेठ तो पानी पर बैठा है, वे आश्चर्य चकित रह गए और शीघ्र ही दूसरी नौका द्वारा

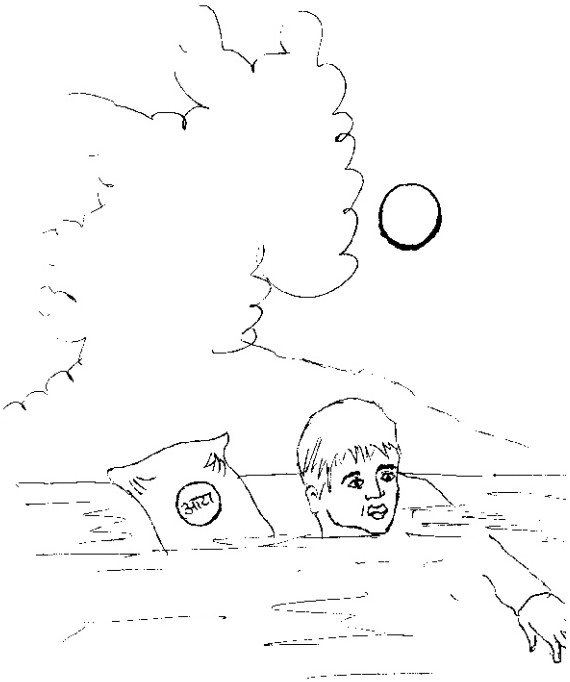

उन्हें जल प्रवाह से बाहर निकाल लाये।

सिपानीजी का शरीर इतना भारी था (मोटा) कि नदी के वेग पूर्ण प्रवाह में एक आटे के बोरे पर नहीं टिक सकता था, नाम स्मरण का अचिन्त्य प्रभाव ही उन्हें मृत्यु के मुख से बचा लेता है। इसके पश्चात् श्री सिपानीजी अपने गाँव न जाकर वहीं से तपश्चरण (उपवास) प्रारम्भ करके नानागुरु के चरणों में नोखामण्डी पहुँच गए और 16 दिनों का निराहार तप किया।

यह गुरु नाम पर श्रद्धा का प्रभाव था।

ऐसे प्रसंग सुनकर मेरा मन तो ऐसा हो रहा है कि आज ही दर्शन करूँ।

ऐसी भावना होना स्वाभाविक है, आज वो हमारे बीच नहीं हैं किन्तु उनकी साधना से परखा हुआ ऐसा कोहिनूर हीरा वो संघ-समाज के विकास के लिए दे गये हैं जो सम्पूर्ण भारत में ही नहीं बल्कि उनके नाम का डंका चारों दिशाओं में फैला रहे हैं।

यदि आपकी दर्शन की इच्छा होगी तो हम लोग आप सबको ले जाने के लिए तैयार हैं। आप सब आपस में विचार करके एक दिन निश्चित करके बता देना।

ठीक है हम लोग जल्दी ही विचार करके आपको बतायेंगे।

* * *

नाना गुरु की करुणा

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

क्या उनको करुणा का मसीहा भी कहा जाता है ?

हाँ बहन उनकी करुणा के बारे में सुनोगी तो आपको आश्चर्य होगा प्राणी मात्र के प्रति उनके मन में दया थी।

बम्बोरा का प्रसंग है -

एक बार गुरुदेव बम्बोरा (राज.) के आस-पास विचर रहे थे। शाम को शौच के लिए जंगल में पधारे। दूर से किसी पशु के कराहने की आवाज आई। भगवन् उस आवाज के सहारे वहाँ तक पहुँच गये जहाँ एक छोटा-सा मेमना झाड़ियों में फंसा जीवन और मृत्यु से जूझ रहा था। उनकी करुणा ने इस दृश्य को देखकर हृदय को झकझोर दिया। एक चींटी की रक्षा के लिए रजोहरण रखते हैं और यहाँ पंचेन्द्रिय जीव की रक्षा का प्रसंग है। क्या गाँव में जाकर ग्रामवासियों को बताऊँ ? लेकिन उनको साथ लेकर इस स्थान पर पुनः आऊंगा तब तक सूर्य अस्त हो

जाएगा। मन को रोक नहीं पाये और मेमने को आहिस्ते से निकालकर अपने साथ गाँव तक ले जाये और गाँव वाले को संभला दिया।

कैसी थी उनकी करुणा। मर्यादा अपनी जगह और करुणा अपनी जगह है।

मर्यादा अहिंसा के पालन हेतु है और यहाँ पंचेन्द्रिय की साक्षात् हिंसा दिख रही थी।

करुणा के मसीहा आचार्य नानेश अपने आपको नहीं रोक पाये और बचा लिया एक पंचेन्द्रिय जीव को।

बच्चे : अब हम भी किसी जानवर को नहीं सतायेंगे। हमारी मम्मी चींटियों को भगाने के लिए लक्ष्मण रेखा लगाती हैं, मच्छर भगाने के लिए भी कई उपाय करते हैं। अब हम संकल्प करते हैं कि किसी भी जीव को नहीं सतायेंगे।

* * *

निराशा को उत्साह में परिवर्तित करने वाले नाना गुरु

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

कल मैंने आपको नाना गुरु की करुणा का उदाहरण बताया था। आज नोखामण्डी वर्षावास में नाना गुरु की अनन्त करुणा का ज्वलन्त उदाहरण सुनिये

बीकानेर क्षेत्र के विश्रुत अभिभावक (एडवोकेट) श्री धर्मपालजी अपने अग्रज श्री प्रकाशचन्द्रजी को लेकर नोखामण्डी उपस्थित हुए। अपने अग्रज का परिचय देते हुए श्री धर्मपालजी ने कहा - ये मेरे बड़े भ्राता हैं साठ वर्ष की इनकी उम्र है। लगभग 40 वर्ष तक स्व. श्री आत्मारामजी महाराज साहब के सानिध्य में संयमाराधना कर चुके हैं। अब वृद्धावस्था होने के कारण कोई भी मुनि इनकी सेवा नहीं करना चाहते हैं। सबसे मैंने सानुरोध निवेदन किया। अंत में विवश हो मैंने गृहस्थ का वेश पहना दिया और रेल द्वारा बीकानेर ले आया।

अब वे गृहस्थ में रह रहे हैं, किन्तु इन्हें गृहस्थ जीवन असह्य-सा लग रहा है। इतनी दीर्घ संयम पर्याय के धूमिल हो जाने से इन्हें अत्यधिक पश्चाताप हो रहा है। इस स्थिति में इन्हें आप श्री के चरणों में लेकर उपस्थित हुआ हूँ। आप करुणामूर्ति हैं, उचित समझें तो इन्हें पुनः संयम प्रदान कर अपनी शरण में लें।

"यद्यपि मैं इनकी सम्पूर्ण व्यवस्था के लिए तत्पर हूँ, घर पर इन्हें कोई कष्ट नहीं है। अपनी बहुत बड़ी कोठी (भवन) है, पर आप श्री के चरणों में आना पड़ा। अब आप श्री जैसा उचित समझें, परामर्श देने की कृपा करें।"

करुणामूर्ति नाना-गुरु ने कहा - "संयम साधना में सहयोग देना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। जब इन्होंने चालीस वर्ष तक संयम पर्याय का अनुशीलन किया है, तब तो इन्हें सहयोग प्रदान करना और भी महत्व रखता है। किन्तु अभी मैं तो भ्रमण करता रहता हूँ, यदि इनकी विहार करने जैसी

स्थिति होती तो मैं अपने पास रखकर इनकी सेवा का दायित्व अपने ऊपर ले लेता। फिर भी हमारे संघ में अनुशासनबद्धता व सेवा की व्यवस्था सुदृढ़ है। आप चाहे तो अभी इन्हें कर्मठ सेवाव्रती श्री इन्द्रचन्दजी महाराज साहब के पास बीकानेर में रख दें। अनन्तर इनके विचार-व्यवहार के परिज्ञात होने पर दीक्षा के विषय में भी चिन्तन किया जा सकेगा।"

इस प्रकार विचार-विमर्श कर दोनों बंधु पुन: बीकानेर चले गये। इधर नोखामण्डी वर्षावास संपन्न कर आचार्य प्रवर का भी उपचारार्थ गंगाशहर भीनासर पर्दापण हुआ। इस अन्तराल में कर्मठ सेवाव्रती श्री इन्द्रचन्दजी महाराज साहब श्री प्रकाशचन्दजी की प्रकृति आदि से अच्छी तरह परिचित हो चुके थे, अत: गुरु देव से निवेदन किया - "इन्हें आप श्री दीक्षा दिलावें, सेवा का भार तो आपश्री की कृपा से मैं संभाल लूँगा।"

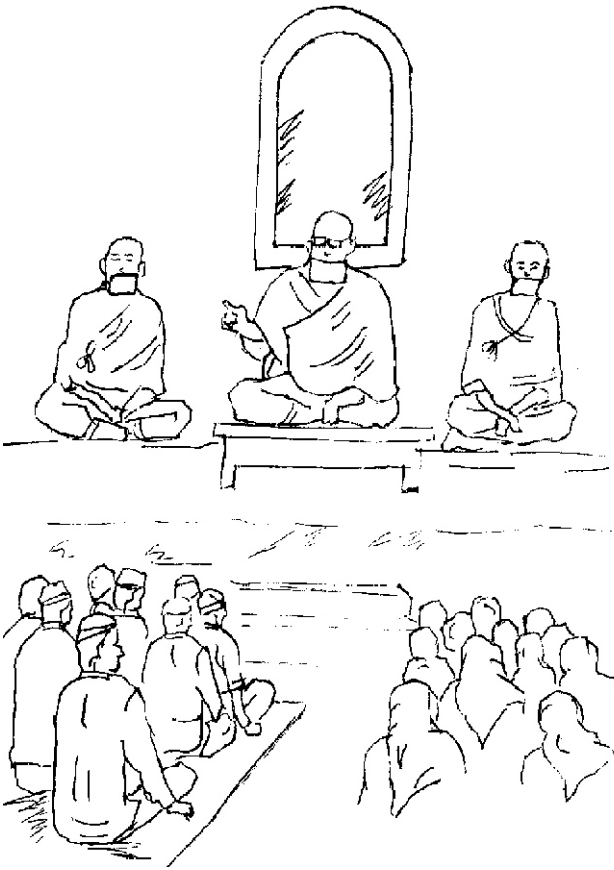

इस प्रकार भारी-भरकम शरीर वाले वृद्धकाय श्री प्रकाशचन्दजी को अनन्त करुणामूर्ति नाना गुरु ने अपनी संघीय व्यवस्थानुसार संयम प्रदान किया और प्रमुदित भाव के आधार पर प्रमोदमुनि संज्ञा (नाम) प्रदान किया।

इस करुणा के प्रतिफलन के रूप में चमत्कार तो तब हुआ जबकि आभ्यन्तर तपस्वी कर्मठ सेवाभावी श्री इन्द्रचन्दजी महाराज साहब की अनुकम्पापूर्ण समीचीन परिचर्या से स्वस्थ होते ही श्री प्रमोदमुनिजी के जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन हो गया। उन्होंने चालीस वर्ष की दीर्घ दीक्षा पर्याय में उपवास से अधिक तप नहीं

किया, अब अपने शरीर को तप की भट्टी में झोंक दिया। केवल गर्म जल के आधार पर बीस दिन का तपश्चर्ण तथा निरन्तर बेले-बेले, तेले-तेले आदि नौ-नौ तक की कठोरतम तपश्चर्या के साथ 108 आयंबिल, 108 नींवी, 108 एकासन व्रत आदि तपश्चरण से उन्होंने अपने शरीर को इतना साध लिया कि दूसरों की सेवा लेने वाले श्री प्रकाशचन्द्रजी अब दूसरों को सेवा करने वाले श्री प्रमोदमुनिजी बन गए।

जो लघु-पात्र उठाने में भी अक्षम थे, भिक्षावृत्ति में पानी के पात्र उठाने लगे। दस मील तक के पाद विहार की क्षमता अर्जित कर ली। इतना ही नहीं, अपना अधिकांश समय स्वाध्याय एवं ध्यान में ही व्यतीत करने लगे।

वाह! बहन, धन्य है ऐसी करुणा। आज एक पुत्र भी अपने वृद्ध माता-पिता को नहीं रखना चाहता है तो पराये की तो बात ही निराली है। नि:स्वार्थ भाव से किसी की टूटती आशा को उत्साह में परिवर्तित कर गति ही सुधार दी। वास्तव में वह इनसान नहीं, इनसान के रूप में धरती के लोगों का उद्धार करने वाले फरिश्ते थे।

बच्चे और उपस्थित बहनें - इस प्रसंग को सुनकर हम सब यदि यह संकल्प करते हैं कि हमें ऐसा मौका मिले तो हम भी पीछे नहीं रहेंगे और कम-से-कम माता-पिता या घर का कोई भी आश्रित व्यक्ति हो हर तरह से उनकी सेवा के लिए तन-मन-धन से तैयार रहेंगे।

सभी बच्चे और बड़े सहर्ष संकल्प लेते हैं।

रीना बहन - आपके संकल्प को यदि आप आचरण में उतारेंगे तो मेरा सुनाना सार्थक हो जायेगा।

धन्यवाद। नानेश चालीसा.....

* * *

संयमित वाणी

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

एक बच्चा - जो बड़े महाराज साहब होते हैं वो दिनभर बोल-बोलकर थक जाते होंगे?

हाँ बेटा! उनको सबसे बोलना पड़ता है। लेकिन वे कभी-भी व्यर्थ नहीं बोलते हैं। वे सुनते ज्यादा हैं और बोलते कम हैं। नाना गुरु के लिए तो महान् अध्यात्म साधक स्थविर पद विभूषित 'श्री घासीलालजी महाराज साहब' तो अल्पभाषी के कारण आपको कई बार घंटाघर की उपमा से उपमित करते हुए फरमाया करते थे - "मुनि श्री, हम तो मंदिर की झालर के समान हैं जो कितनी बार अनवरत बोलती रहती है, जिसका कोई मूल्य नहीं। अर्थात् हम बिना कारण बार-बार बोलते रहते हैं। हमारी वाणी की कोई कीमत नहीं है, किन्तु तुम तो घंटाघर की घड़ी के समान हो, जो समय पर नियमित-परिमित बोलते हो, तुम्हारी वाणी सुनने के लिए छोटे-बड़े सभी सन्त लालायित रहते हैं।"

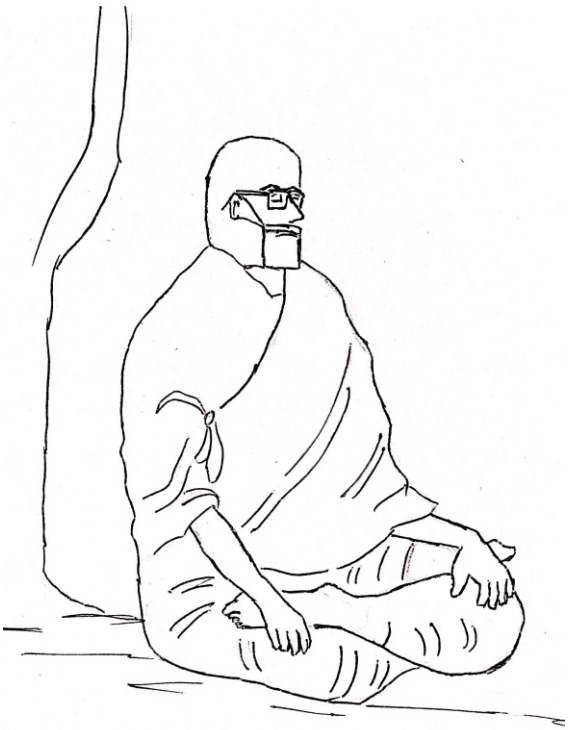

इसी गुण के कारण आपसे केवल दो

मिनिट बातें हो जाने में ही हर व्यक्ति अपने को गौरवशाली समझता था।

बहुधा होता यह है कि व्यक्ति विद्वता, पद, प्रतिष्ठा आदि में जितना ऊँचा उठता जाता है, उतना अहं उसके भीतर पल्लवित होता जाता है। धीरे-धीरे उसकी विनम्रता छूमन्तर हो जाती है। किन्तु आपके विकास का पथ इसका अपवाद रहा है। नाना गुरु वृक्ष के विकास की तरह ऊपर से ज्यों-ज्यों महान् यशस्वी, प्रख्यात एवं प्रतिष्ठित होते गए, त्यों-त्यों उनकी विनम्रता वृक्ष के भीतर की जड़ों की तरह पूरे विकास की ओर बढ़ती गई।

एक बच्चा - मुझे तो आज पहली बार पता चला कि - कम बोलने वाले को अच्छा समझा जाता है। मैं तो सोचता था कि, जो ज्यादा बोलता है वह बुद्धिमान समझा जाता है।

नहीं। यह तुम्हारा भ्रम है। बुद्धिमान अनावश्यक बोलना पसंद नहीं करते, और मूर्खों से तो बिल्कुल भी बोलना पसंद नहीं करते हैं। ज्यादा बोलने वाला अनर्गल बोलता है। भगवान् महावीर आदि तीर्थंकर - तो जब तक केवल ज्ञान नहीं होता है, तब तक अनावश्यक बिल्कुल नहीं बोलते थे। मौन रहते थे।

हमें भी सोच-समझकर बोलना चाहिए। बोलने से पहले Time, Person and Place अर्थात् समय, व्यक्ति और स्थान का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। कब, कहां और किससे बोल रहे हैं, इसका अच्छी तरह चिंतन करके ही मुँह खोलना चाहिए। बोलने से हमारी एनर्जी व्यर्थ होती है। कम बोलने वाले की बात लोग ध्यान से सुनते हैं।

हम भी संकल्प करें प्रतिदिन एक घंटा मौन अवश्य करेंगे।

* * *

मोहातीत गुरु नाना

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

मौलिक! क्या हुआ ? आज आप सुस्त क्यों हो ?

आज मुझे दीदी की बहुत याद आ रही है।

दीदी तो पढ़ने के लिए गई है, जब छुट्टियाँ होगी तब वापस आ जायेगी।

क्या नाना गुरु की भी दीदी थी ?

हाँ बेटे! मैंने पहले भी बताया था आपको कि नाना गुरु की पांच बहनें थीं। दो बहनों ने दीक्षा ली थी। लेकिन नाना गुरु तुम्हारे जैसे दीदियों के लिए रोने वालों में से नहीं थे। वे मोहातीत थे।

आपको कैसे पता ?

सरखेज नामक ग्राम में दिनांक 05.01.1983 का प्रसंग है -

पूज्य गुरुदेव की संसार

पक्षीय बहिन सरल स्वभिविनी महासती श्री धापूकंवरजी महाराज साहब, बीकानेर विराज रहे थे। उनकी सेवा में शासन प्रभाविका विदुषी महासती श्री इन्द्रकंवरजी महाराज साहब के पास की सतियां विहार कर रही थी। वे आचार्य प्रवर के दर्शनार्थ सरखेज पधारी। मध्यान्ह में गुरुदेव से विनम्र प्रार्थना की - भगवन्! हम बीकानेर जा रही हैं, आपश्री अपनी संसार पक्षीय बहिन महासती श्री धापूकंवरजी महाराज साहब के लिए दो शब्द लिख दीजिए - जिससे उनको बहुत संतुष्टि होगी। गुरुदेव ने प्रत्युत्तर में फरमाया - महासतीजी मैं किसी के लिए भी कुछ नहीं लिखता हूँ। साधु जीवन अंगीकार करने के बाद गृहस्थी का सम्बन्ध नहीं रहता है। अब तो आप सभी मेरी बहिनें हैं। जब किसी के लिए नहीं लिखता तो फिर उनके लिए कैसे लिख सकता हूँ। सभी संतों और महासतियों के बार-बार आग्रह करने पर भी गुरुदेव ने एक शब्द भी लिखकर नहीं दिया।

देखो, बच्चों! गुरुदेव ने तो सबको अपनी बहन माना और स्वयं की बहन के लिए एक पत्र भी नहीं लिखा। एक मौलिक को देखो जो सुबह से स्कूल भी नहीं गया और अभी तक रोना चालू है।

मम्मा, मुझे रोना तो अभी भी आ रहा है, किन्तु मुझे तो नाना गुरु जैसा बनना है। इसलिए अब मैं नहीं रोऊंगा। क्या रोने से भी पाप लगता है ?

हाँ बेटा रोने से बहुत पाप लगता है। हमें मोहनीय कर्म बंधता है।

हम भी कोशिश करेंगे - किसी के मिलने पर खुश नहीं और किसी के वियोग में दु:खी नहीं होंगे।

* * *

दृढ़ निश्चयी

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

नाना गुरु को तो ज्योतिष का भी बहुत ज्ञान था ?

उनके ज्ञान के बारे में तो थाह पाना कठिन है, उनको ज्योतिष शास्त्र का बहुत अच्छा ज्ञान था। वे वचन के पक्के थे। ऐसा ही एक बार का प्रसंग है -

आचार्य श्री गणेशलालजी महाराज साहब (नाना गुरु के गुरु) की महायात्रा के बाद गुरुदेव को विहार करना अनिवार्य था। वह विहार लगभग चार वर्ष बाद हो रहा था तथा आचार्य पद के बाद का प्रथम विहार था। अतः शुभ मुहूर्त में विहार होना चाहिए था किन्तु-

नाना गुरु ने संघ अध्यक्ष महोदय की विनती पर उनके बंगले की तरफ विहार की स्वीकृति दे दी थी। यह बात लोगों को मालूम होने पर लोगों ने ज्योतिषाचार्य से मुहूर्त पूछा - जिस दिशा में उनका बंगला था उस दिशा में दिशाशूल था तथा विहार के लिए मुहूर्त भी उपयुक्त नहीं था। लोगों ने उस दिन उस दिशा में विहार नहीं करने के लिए बहुत आग्रह किया तथा इस हेतु ज्योतिषाचार्य को भी ले गये - पण्डित जी ने युक्तियों से ज्योतिष विज्ञान का महत्व समझाने का प्रयास किया, किन्तु नाना गुरु का उत्तर यही रहा -

आपका कथन किसी अपेक्षा से यथार्थ है, मैं ज्योतिष विज्ञान को न तो असत्य कह रहा हूँ और न उसका विरोध ही कर रहा हूँ। आप सबकी प्रशस्त भावना मेरे साथ है। आपकी सद्भावना का मैं सत्कार करता हूँ। आपके आग्रह पर कुछ विचार कर मैं कार्यक्रम बदल भी देता, किन्तु साधु भाषा में कुछ आश्वासन सा दे दिया है, अत: मैं उसके लिए बाध्य हूँ। हमारी साधु भाषा लौह लकीर होती है। एक बार जो मुख से निकल गया, उसे पूरा करना हमारा परम कर्त्तव्य है।

ज्योतिषज्ञ नाना गुरु के आत्मबल भरे स्वर सुनकर, वन्दन करके यह कहते हुए चले गये कि - वास्तव में अति उत्साही के लिए सभी मुहूर्त श्रेष्ठ होते हैं। आपके लिए मुहूर्त नहीं, आत्मबल अधिक महत्वपूर्ण है और यह ठीक भी है।

मुहूर्त, शकुन आदि से भी उत्साह का महत्व है। नाना गुरु के लिए तो उत्साह से भी ज्यादा वचन का महत्व था।

हमें भी अपने वचन का पक्का होना चाहिए। जो वचन का पक्का होता है, उसकी बात पर लोग विश्वास करते हैं। उसकी वाणी भी प्रभावी होती है।

बहन - उनका इतना अच्छा व्यक्तित्व था तो उनके प्रवचन भी अच्छे होंगे और उनके प्रवचनों से प्रभावित होकर बहुतों का जीवन बदला होगा।

हाँ, बहन। उनके सिर्फ जैन ही भक्त नहीं थे। पूरे विश्व में उनको जैन-अजैन सभी भक्त समता विभूति के नाम से जानते थे।

* * *

अनासक्त

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

कल मैं आपको उनकी वाणी के प्रभाव की बात बता रही थी। उनकी वाणी में ऐसा प्रभाव था कि अहमदाबाद और ब्यावर में एक साथ 15-15 दीक्षायें, बीकानेर में एक साथ 21 दीक्षायें तथा रतलाम में तो स्थानकवासी संप्रदाय में सैकड़ों वर्षों का रिकॉर्ड टूटा। एक साथ 25 दीक्षाओं का प्रत्याख्यान हुआ। इस तरह आपश्री के आचार्य काल में सवा तीन सौ से ऊपर मुमुक्षुओं ने प्रव्रज्या अंगीकार की। प्रथम दीक्षित संत श्री सेवंतमुनिजी महाराज साहब और प्रथम दीक्षित साध्वी श्री सुशीलाकंवरजी महाराज साहब की दीक्षा के साथ ही दीक्षाओं का यह क्रम चला। उसमें एक के बाद एक सुदृढ़त्तर कड़ियाँ जुड़ती चली गई। राजनाँद गाँव में भी एक साथ 6, बड़ी सादड़ी में सात दीक्षाएं सम्पन्न हुईं। इस तरह भव्य कीर्तिमान बने। 60 चातुर्मास हुए।

जो भी भव्य आत्मा उनके प्रवचन सुनती वह संसार से विरक्त होने का प्रयास करती-

राजनांदगाँव वर्षावास के प्रारम्भिक दिनों में नाना गुरु की चारित्रिक गरिमामय सौरभ से आकृष्ट एक दंपति श्री धर्मीचन्दजी धोका सपत्निक, जिन्हें विवाह किये अभी दो-ढाई माह ही हुए थे, मद्रास से राजनांद गाँव उपस्थित हुए और अपने परिचित, संघ सेवा में तल्लीन, मूकसेवी पंड़ित श्री लालचन्दजी मूणोत से मिलकर अपनी दीक्षा लेने की भावना व्यक्त करने लगे। पंडितजी के साथ वे एक दिन नाना गुरु के चरणों में उपस्थित हुए और निवेदन किया - "गुरुदेव हमें आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत की प्रतिज्ञा करवा दीजिए।" श्री धर्मीचन्द्रजी के उपर्युक्त शब्दों को सुनकर वहां उपस्थित संत एवं नाना गुरु आश्चर्यचकित थे। अभी विवाह हुए दो-ढाई माह ही हुए हैं और सहसा इतनी विरक्ति का क्या कारण हो सकता है ? संभव है दोनों के आपस में मनोभेद हों, एक-दूसरे के विचार मेल नहीं खा रहे हों, दांपत्य जीवन विघटन के द्वार पर खड़ा हो और इन मनोभेद से खिन्न होकर शीलव्रत लेने को तत्पर हो गए हों।

अत: शिष्यव्यामोह वृत्ति से अनासक्त आचार्य श्री ने प्रतिज्ञा न करवाकर उन्हें कुछ समझाते हुए कहा - अभी यहां संतों के पास रहकर अध्ययन करिए एवं विचारों को परिपक्व बनाइये। विचारों के परिपक्व होने पर दृढ़ प्रतिज्ञा भी हो सकेगी एवं साधना में भी कदम बढ़ा सकेंगे।

नाना गुरु के इस अनासक्त योग से प्रभावित हो अध्ययन में लीन हो गए। संत सतियों ने रात्रि में चर्चा के दौरान दोनों के दांपत्य जीवन की खोज की। किन्तु दोनों आत्माओं के गंभीर उत्तर एवं आंतरिक वैराग्य को देखकर नानागुरु ने प्रतिज्ञा करवा दी और समय आने पर आदर्श त्यागी बनकर जोड़े से दीक्षा ली।

ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण हैं। आज तो समय हो गया फिर कभी मैं इसी विषय में आपको उदाहरण बताऊंगी।

नानेश चालीसा.....

* * *

पूर्वाभास

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

क्या उन्हें भविष्य पहले ही दिखता था ?

वे महायोगी थे, उनका ज्ञान और संयम निर्मल था। उसी निर्मल ज्ञान से उन्हें पूर्वाभास हो जाता था।

कानोड में वयोवृद्ध महासतियांजी श्री भूराकंवरजी महाराज साहब जीवन की सांध्यवेला में मृत्यु से जूझ रही थीं। संथारा चल रहा था। महाश्रमणीरत्ना श्री पानकुंवरजी महाराज साहब आदि वीतरागता की ओर उनके भावों की अभिवृद्धि करने में सहायक बने हुए थे। उसी दौरान बड़ी सादड़ी चातुर्मास संपन्न करके कानोड की दिशा में आचार्य भगवन् का विहार हुआ। बीच में डुंगला के श्रद्धालुभक्तगण आग्रह करने लगे - आपश्री हमें गोचरी -पानी से लाभान्वित कर कानोड पधारेंगे तो बड़ी कृपा होगी। संघ का भावपूर्ण आग्रह देखकर मुनिराजों को आहार पानी लेकर बाद में पधारने का निर्देश देकर तथा कुछ संतों को साथ लेकर आचार्य भगवन् शीघ्रगति से कानोड पधार गये।

कानोड में महासती श्री भूराजी महाराज साहब पलक पांवड़े बिछाकर प्रतीक्षारत थे। उसी स्वर्णिम वेला में आचार्य भगवन् का पदार्पण हुआ। चौकी (बैठने का पाटा) की आज्ञा लेकर आचार्य श्री बिराजे और फरमाया - भूराजी महाराज साहब मैं आ गया हूँ। भूराजी महाराज साहब ने हाथ जोड़कर सामने देखा - भगवन् ने मांगलिक फरमाई, तीसरी मांगलिक सुनते हुए भूराजी महाराज साहब ने इस पार्थिव देह को छोड़ दिया।

ये था भगवान् के निर्मल ज्ञान से पूर्वाभास। यदि आचार्य भगवन् डुंगलासंघ के आग्रह पर एवं अपने शरीर की क्षुधा-पिपासा शांत करने के लिए तनिक भी विलंब करते तो शायद महासतीजी को

अंतिम पाथेय नहीं दे पाते।

उन्होंने स्वयं के शरीर से भी ज्यादा महत्व अपने कर्त्तव्य और संघ सेवा को दिया। हर समय उनकी पैनी दृष्टि संघ हित में ही टिकी रहती थी।

एक बहन - वाह! रीना बहन आप तो एक-से-एक घटना सुनाती हो मेरा मन तो भाव विभोर हो जाता है। धन्य है आपकी पुण्यवानी को जो आपको ऐसे गुरु मिले और उनके साक्षात् दर्शन किए आपने।

रीना - अरे बहन! आप भी अपनी पुण्यवानी को धन्य बना सकती हो। उनके उत्तराधिकारी भी महान् हैं। तुम एक बार उनकी सेवा का लाभ अवश्य लेना।

बहन मैं तो कहाँ जाऊं, तुम्ही हमको वहाँ तक ले जा सकती हो।

ठीक है। मैं आप सबकी यह इच्छा भी समय आने पर पूरी करूंगी।

अब नानेश चालीसा.....

जय नानेश - जय रामेश

* * *

सथारा : आत्मघात नहीं, आत्मोत्कर्ष

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

प्रश्न - आपके यहां वृद्ध लोगों को भोजन-पानी और इलाज देना बंद कर देते हैं उसे आप संथारा कहते हैं। यह हमें समझ में नहीं आया - क्या यह आत्मघात नहीं है ?

प्रश्न बहुत अच्छा है। इसका उत्तर यह है कि आत्मघात में निराशा, ऊब, कषायों की तीव्रता आदि मुख्य कारण होते हैं। क्रोध-मोह आदि विकारों से ग्रस्त होकर या स्थूल जीवन की निराशा से ऊबकर अविवेकी जीव आत्महत्या जैसी गलतीकर बैठते हैं। परन्तु जैन धर्म में जिसे संलेखना संथारा कहा है उसमें विकारों को कोई स्थान नहीं है। संलेखना मरण को आमंत्रित करने की विधि नहीं है, अपने आप आने वाली मृत्यु के स्वागत के लिए निर्भयतापूर्वक तैयारी है।

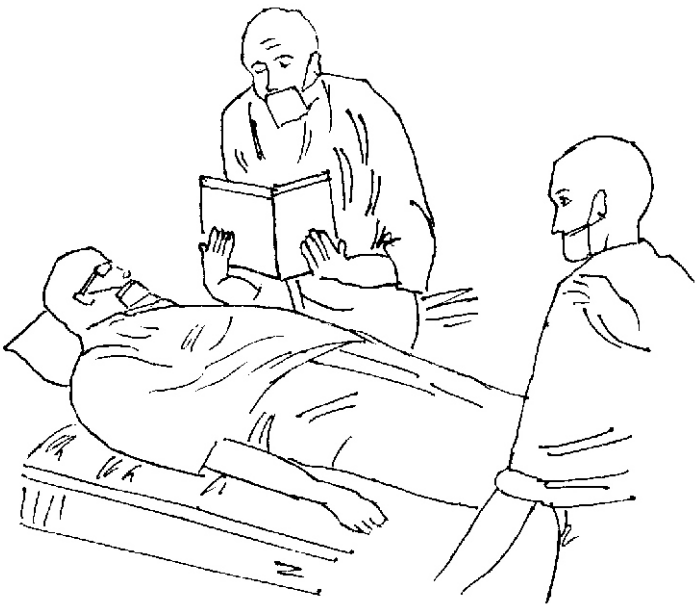

यह जबरन किसी को नहीं करवाया जाता है। करने वाला स्वयं को कृत-कृत्य समझता है, अपने जन्म को सफल मानता है। यह मुक्तिपुरी तक सकुशल पहुँचने के लिए

समाधि और बोधरूप पाथेय है जिससे यात्रा सानन्द पूर्ण होती है।

इसीलिये जैन धर्म अनुयायी लोग इस तरह संलेखना संथारा पूर्वक मरण को श्रेष्ठ मानते हैं।

बहुत अच्छी बात बताई आपने। हम तो इसके महत्व को समझते नहीं हैं इसलिए यह विवाद जब पेपरों और टी.वी. में सुनते-देखते थे तो हमको कुछ समझ में नहीं आता था। जैन धर्म रहस्यमय धर्म है। यहां हर कार्य के पीछे आत्मकल्याण छुपा रहता है। आपने हमको बहुत सरल शब्दों में समझाया है। धन्यवाद।

नानेश चालीसा.....

जय नानेश - जय रामेश

* * *

पैनी दृष्टि

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

एक बहन - रीना बहन आप बता रही थीं कि नाना गुरु से प्रभावित होकर कई लोगों ने दीक्षा ली। इतने शिष्य-शिष्याएं थी तो वे सबका ध्यान नहीं रख पाते होंगे ?

बहन उनकी नजर बहुत पैनी थी - आचार्य श्री नानेश देवगढ़, राणावास चातुर्मास संपन्न करके पधारे, सेवा में लगभग 20-25 साध्वियां थीं। दोपहर सेवा में सभी सतियां जी पहुंच गई। एक

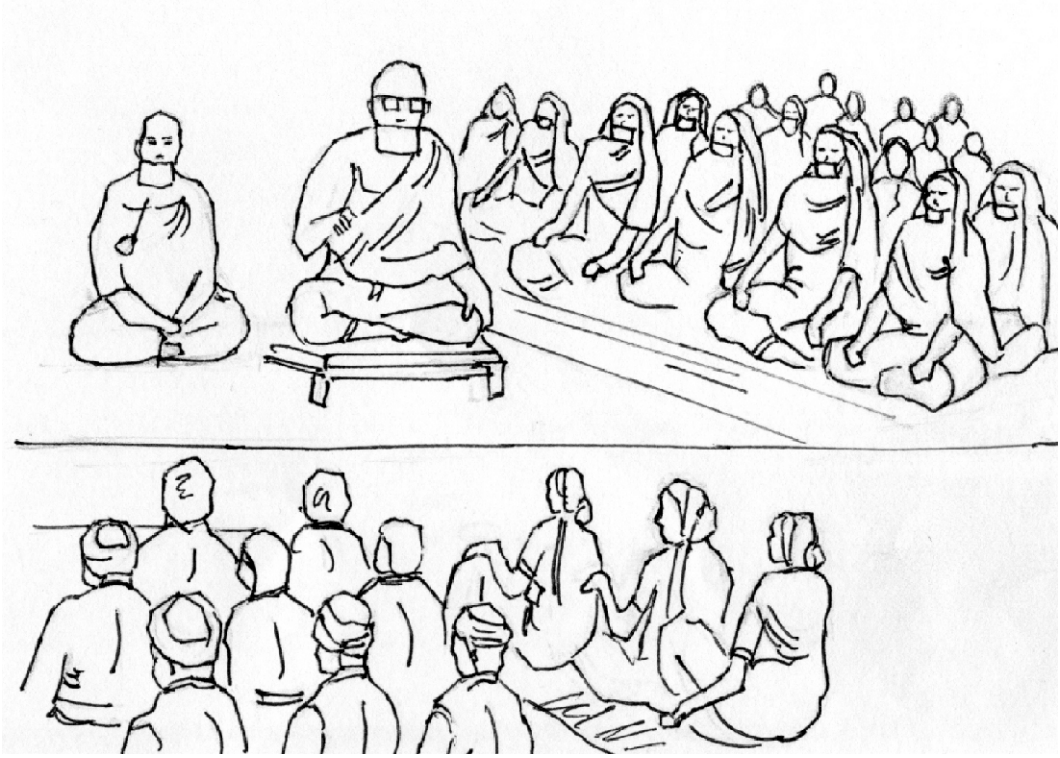

वयोवृद्ध महासती श्री वल्लभकंवरजी महाराज साहब नहीं पधार पाये। गुरुदेव की पैनी नजर जान गई - कि वल्लभकंवरजी महाराज साहब अकेले विराज रहे हैं, उनकी सेवा में कोई नहीं रुका। सतियांजी बोले - हम रुक रहे थे पर महाराज साहब श्री ने फरमाया अभी कोई काम नहीं, आप सब पधार जाओ, भगवान् की सेवा मत छोड़ो। अत: हम सब आ गये हैं। तब आचार्य भगवन् ने फरमाया - वृद्धावस्था है, अचानक कोई काम आ जाय तो कह नहीं सकते, मेरी सेवा जरूरी नहीं, आप पहले उनकी सेवा में पधारें। देखिये - अपने शासन की एक-एक सती के प्रति कितनी आत्मीयता और बहुमान था उनके मन में। समिति गुप्ति का आराधक कब मोक्ष चला जाय। कुछ ही वर्षों बाद उसी साध्वी ने 72 दिन के संलेखना संधारे के साथ जिनशासन की भव्य प्रभावना करके महाप्रयाण किया।

इस प्रकार उन्हें बच्चे से वृद्ध तक सभी का ध्यान रहता था। जैसे एक माता के चार पुत्र होते हैं और वह चारों का समान रूप से सर्वांग विकास चाहती है, उसी प्रकार आचार्य श्री नानेश भी अपने सभी शिष्य शिष्याओं को उत्पत्ति से निष्पत्ति तक पहुँचाने के लिए पुरजोर प्रयासरत रहते थे।

नानेश चालीसा.....

जय नानेश - जय रामेश

* * *

यह मजाक नहीं है

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

क्या शादी के बाद भी दीक्षा ले सकते हैं ?

दीक्षा के लिए ऐसी कोई पाबन्दी नहीं है और न ही उम्र का बन्धन है। कम-से-कम आठ वर्ष होनी चाहिए। अधिक में जब चाहो। एक घटना-नागदा जंक्शन की है। वहाँ 2017 में शासनदीपिका श्री विचक्षणाश्रीजी आदि ठाणा का चार्तुमास था। वहाँ एक बहन कोठारी परिवार से थी। वह कई दिनों से अस्वस्थ चल रही थी। महासतियांजी का जब भी गोचरी-पानी के निमित्त उनके घर जाना होता तो उन्हें मांगलिक सुनाने का प्रसंग बन जाता था। एक दिन उनकी हालत सीरियस हो गई। महासतियांजी को मांगलिक के लिए बुलवाया और बाईजी ने संथारे की इच्छा व्यक्त की। परिजन की स्वीकृति होने पर उन्हें संथारे के प्रत्याख्यान करवा दिए। अगले दिन उन्होंने दीक्षा की इच्छा व्यक्त की। धर्म के मर्म को समझने वाले परिवार ने महासतीजी के समझाने पर स्वीकृति प्रदान कर दी। वर्तमान आचार्य श्री रामलालजी महाराज साहब जो आचार्य श्री नानालालजी महाराज साहब के ही पाट पर बिराजे हैं, नानागुरु ने उन्हें अपने ही हाथों से उत्तराधिकारी बनाया, परिवारजनों ने उनकी स्वीकृति मंगवाकर अमोलकबाई कोठारी को स्थानक में ले जाकर सविधि

महासतियांजी ने गुरु आज्ञा से दीक्षा के प्रत्याख्यान करवा दिये। महासतियांजी उनकी वैयावृत्य करते हुए उन्हें जिनवाणी सुनाते रहे। अगले दिन उनकी आयु पूर्ण हो गई और महासतीश्री अमोलकश्रीजी अपने जीवन का अंतिम काल सुधारकर सुगति को प्राप्त हुई।

एक बहन - यह क्या मजाक है ?

नहीं। यह मजाक नहीं है। समझने की बात है।

हम हमेशा अपने शरीर, परिवार, अपनी धन-संपति, जेवर, वस्त्र, मकान आदि सभी जो यहीं रहने वाले हैं उनमें आसक्त बनकर जीते हैं। उनमें से किसी का भी वियोग होने पर हम दु:खी हो जाते हैं। हम किसी को भी छोड़ना नहीं चाहते। येन-केन प्रकारेण उसमें वृद्धि चाहते हैं।

आपने कई बार ऐसा प्रसंग देखा होगा कि व्यक्ति के शरीर में भयंकर व्याधि है। वह बुरी तरह तड़प रहा है। ऐसी दशा में भी यदि उससे पूछा जाय कि - आपको मरने का इंजेक्शन लगवा दें तो क्या वह हाँ कहेगा ?

नहीं, कभी नहीं हाँ करेगा। वह तो ठीक करवाने की ही चाह करेगा।

बिल्कुल सही कहा आपने।

लेकिन संपूर्ण परिवार से धन, संपति, घर में प्राप्त सुख-सुविधा सबको छोड़कर साधु बनना कोई मजाक नहीं हो सकता है। चाहे कोठारी बाईजी ने अन्तिम समय भी छोड़ा, लेकिन अन्तिम समय भी कई व्यक्तियों के मुंह से सुना जाता है - मेरी बेटी को समाचार दिये की नहीं, मेरा बेटा कहां है, उसे बुला दो, मेरी अमुक वस्तु उसको दे देना आदि-आदि बातें करते हैं, उन्हें धर्म की बातें अच्छी नहीं लगती हैं। ये सब बातें संसार में हमारी आसक्ति व्यक्त करने वाली हैं।

इन सबको वही छोड़ सकता है जो इन सबसे विरक्त बन कर अपनी आत्मा में रमण करता है और हृदय से यह जानता है कि यह सब नाते-रिश्ते झूठे हैं और सब यहीं रहने वाले हैं। कोई भी हमारे बांधे हुए कर्मों को भोगते समय सहभागी नहीं बन सकता और न ही उन कर्मों से बचा सकता है। हाँ, उन सबके मोह में फंसकर हम और ज्यादा चिकने कर्म बांध लेते हैं।

एक बहन - आपने बिल्कुल सही बात कही है। कुछ भी साथ नहीं जाता है। लेकिन हर व्यक्ति दीक्षा नहीं ले सकता है। क्या घर पर रहकर हम कुछ धर्म क्रिया नहीं कर सकते ?

हम घर पर रहकर भी धर्म क्रिया कर सकते हैं। लेकिन पूर्ण रूप से छ: काय के जीवों को

अभयदान नहीं दे सकते हैं। कुछ विवेक एवं यतना से यदि हम गृहस्थी का कार्य करें तो काफी अंशों में हम पाप के बंध से बच सकते हैं। इसके लिए 12 व्रत एवं प्रतिदिन 14 नियम ग्रहण करेंगे तो हमारा जीवन मर्यादित होगा एवं हमारी वृत्ति त्यागमय बनेगी।

एक बच्चा - क्या आप हमको इनके बारे में बताओगे ?

हाँ। (रीना बहन ने सबको 12 व्रतों एवं 14 नियम के बारे में सविस्तार समझाया एवं इससे सम्बन्धित पुस्तकें वितरित कर सबको यथायोग्य नियम ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया।)

मौलिक और मयंक - हम तो दीक्षा लेंगे।

अन्य बच्चे - दीक्षा तो समय आने पर ही ले सकेंगे। तब तक के लिए हम यह नियम करेंगे तो हमारे ज्यादा कर्म नहीं बंधेंगे।

आप सबके बहुत अच्छे विचार हैं। धन्यवाद।

नानेश चालीसा.....

जय नानेश - जय रामेश

* * *

क्या सजोड़े दीक्षा ले सकते हैं ?

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

क्या नानागुरु के पास और भी सजोड़े दीक्षा हुई ?

पिपल्यामण्डी में आदर्श दीक्षा हुई। वैरागी बंधु अमरचन्दजी एवं वैराग्यवती कस्तूरबाई की दीक्षा की छटा पिपल्यामण्डी के इतिहास में अभूतपूर्व एवं अनूठी थी। विशाल वटवृक्ष के नीचे लगभग 15 हजार की जनमेदनी के समक्ष आचार्य श्री के करकमलों से दीक्षा सम्पन्न हुई। उन आदर्श पति-पत्नी ने 11, 9 एवं 3 वर्ष के बच्चे (दो लड़के एवं एक लड़की) को अन्य भ्राता, पारिवारिकजनों को सौंपकर तथा लाखों की संपति को तिलांजलि देकर दीक्षा ग्रहण की।

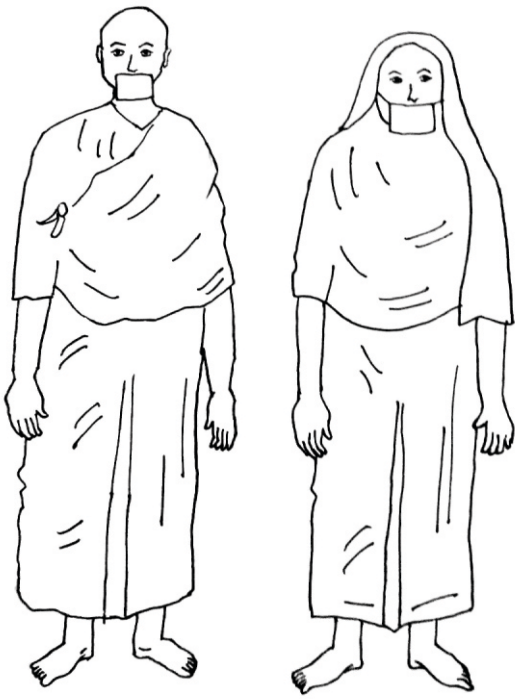

सब कुछ छोड़ना आसान है लेकिन एक माँ के लिए इतने छोटे बच्चों को छोड़ना तो...

अभी कुछ ही दिन हुए 23 सितम्बर 2017 को नीमच के राठौर परिवार के पति-पत्नी दोनों ने लगभग दो-ढाई साल की बच्ची को छोड़कर दीक्षा ली।

क्या बात कर रही हो आप ? इस कलयुग में और वह भी इतनी छोटी उम्र में। मुझे तो.....

मेरी बात पर विश्वास नहीं हो तो जो पेपर पढ़ते हैं, व्हाट्सएप देखते हैं उनसे पूछ लेना।

कुछ बच्चे और बहनें - हाँ आप बिल्कुल सही कह रहे हो। वे लोग विदेश में सर्विस करते थे और करोड़ों की संपत्ति थी। लोगों ने रोकने के लिए बहुत हंगामा किया। लेकिन पति-पत्नी दोनों अपने निश्चय पर दृढ़ रहे।

वाह! बहन, तुम तो कमाल की घटनाएँ बता रही हो और वह भी इस कलयुग में। महावीर, कृष्ण के जमाने में कहो तो कोई आश्चर्य नहीं। लोग तो कहते हैं चारों तरफ पाप छा रहा।

ऐसी बात नहीं है। सब तरह के लोग होते हैं। तभी तो मरकर आत्माएँ चारों गति में जाती हैं।

क्या आज भी देवलोक में जा सकते हैं ?

हाँ जा सकते हैं और आज भी देवता मनुष्य लोक में आते हैं। आपकी बातें सुनकर तो मेरा माथा काम नहीं कर रहा है। एक बच्चा - ऑण्टीजी! आप बताइये, हमको बहुत आनन्द आ रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे कोई पिक्चर चल रही है। हम तो भाव-विभोर हो रहे हैं।

बहुत अच्छा बेटा। महापुरुषों की घटनाएँ सुनने में तो आनन्द की अनुभूति होनी ही चाहिए। लेकिन आज समय हो गया अब।

नानेश चालीसा....

जय नानेश - जय रामेश

* * *

भाग्यवानों के भूत कमावे

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

कल मैं आपको पिपल्यामण्डी की आदर्श दीक्षा के बारे में बता रही थी। उसी दिन का आश्चर्य सुनो -

इस दीक्षा के उपलक्ष्य में पामेचा परिवार को इतना अनुमान नहीं था कि 15 हजार व्यक्ति एकत्रित हो जायेंगे। उन्होंने भोजन की सीमित व्यवस्था की थी। जनता को देखते हुए वे सोचने लगे कि इतनी सी भोजन सामग्री में किस प्रकार, कहाँ और कैसे भोजन व्यवस्था की जायेगी। किन्तु आगत सभी दर्शनार्थी उस सीमित सामग्री से तृप्त हो गये और नगर के जैन-अजैन सभी को भोजन करवा दिया। इसके अतिरिक्त समीपवर्ती गाँवों में भी टोकरे भर-भरकर मिठाईयां भिजवाई गईं।

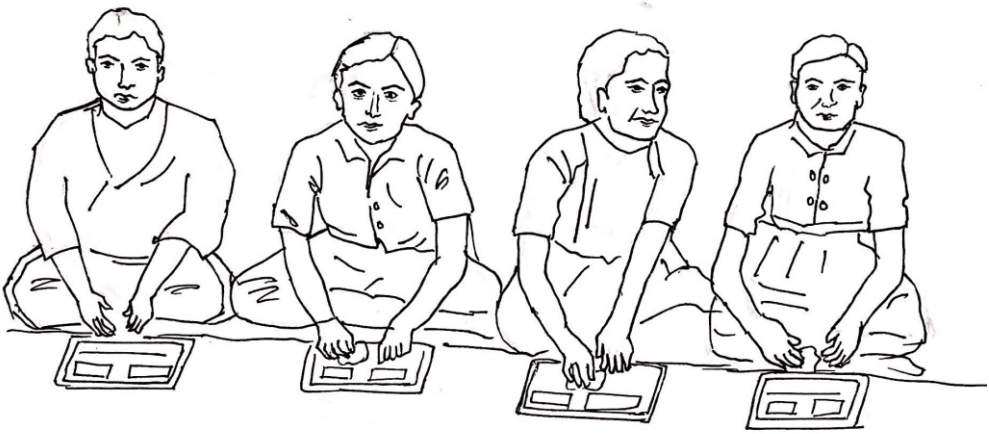

व्यवस्थित भोजन व्यवस्था

ऐसा ही प्रसंग बड़ी सादड़ी चातुर्मास के प्रवेश पर हुआ। प्रवेश के दिन स्थानीय संघ ने आतिथ्य सत्कार हेतु अनुमान के आधार पर 1200 व्यक्तियों का भोजन बनवाया। उसमें लगभग 1300 व्यक्तियों ने भोजन किया और बची हुई सामग्री में दूसरे दिन 350 व्यक्ति और जीम गये और प्रत्येक घर में (लगभग 300 परिवार में) मिठाई बाँटी और बढ़ गई तो स्कूल में विद्यार्थियों को भी मिठाई बाँटी। इसको कहते हैं - 'भाग्यवान के भूत कमावे'। ऐसा प्रसंग बखतगढ़ आदि क्षेत्रों में भी गुरुदेव के विचरण के समय हुआ। यह सब महापुरुषों के अतिशय और पुण्यवाणी से होता है।

उनकी इतनी पुण्यवानी और अतिशय था तो उन्हें काम तो कुछ भी नहीं करना पड़ता होगा।

नाम है नाना काम विशाला है। उनके पास संघ-समाज के बड़े-बड़े कार्य थे फिर भी वे छोटे-से-छोटा कार्य भी करने में नहीं चूकते थे।

* * *

निर्देश नहीं स्वयं वैयावृत्य में संलग्न-सेवा भावी

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र.....

आप कल उनके काम के बारे में पूछ रहे थे -

आचार्य श्री नानेश (नाना गुरु) का ग्रामानुग्राम विचरण हो रहा था। रात्रि में अकस्मात एक शिष्य अस्वस्थ हो गये। पेट दर्द से कराहने लगे। अस्वस्थ शिष्य का कराहना सुनकर गुरुदेव अपने संस्तारक (साधु की शय्या विशेष) से उठे, समीप पधारे और परिचर्या में जुट गये। अस्वस्थ मुनिश्री को उल्टी हो गई। कुछ अंश जमीन पर और कुछ अंश कपड़ों पर। गुरुदेव ने पहले रोगी को संभाला, पोंछकर शरीर को स्वच्छ किया और फिर स्थान आदि की सफाई की। फिर उनको दस्त की शंका हुई। उन्होंने सहयोगी संतों को जगाना चाहा, किन्तु गुरुदेव ने मना करते हुए कहा - आज बहुत समय बाद तो यह सेवा-परिचर्या का अवसर मिला है फिर दूसरे संतों के शयन में क्यों विघ्न डाला जाये। जो मैं कर रहा हूँ वहीं तो वे करेंगे, इसलिए मन में किसी प्रकार का विचार न करो। इस प्रकार जब तक उसे नींद नहीं आई, देखभाल करते रहे। जब वह शिष्य सो गया तब अशुचि को पोंछकर स्थान को स्वच्छ किया।

यह तो एक सामान्य-सा उदाहरण था गुरुदेव की सेवावृत्ति का। कभी-कभी तो बिना पलक झपके रातभर भी संत-मुनिराजों की सेवा समाधि में तत्पर रहते थे। ऐसी स्थिति में किसी को निर्देश देने के बजाय स्वयं ही वैयावृत्य करने में संलग्न रहते थे।

मौलिक - मैंने कल दादीजी के पैर दबाये थे और उनके कमरे में सफाई की थी।

अच्छा (मौलिक के सिर पर हाथ रखते हुए स्नेह से-) मेरा बेटा भी सेवा भावी बनेगा। और सिर्फ मौलिक ही नहीं सभी को सेवा में तत्पर रहना है। सभी बच्चे-हाँ! हम किसी की सेवा करते हैं और वे दुआएँ देते हैं तो बहुत आनन्द आता है।

नानेश चालीसा.....

* * *

अध्ययनशील

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

क्या नाना गुरु पढ़ाई भी करते थे ?

हाँ। नाना गुरु की आरम्भ से ही अध्ययन में गहरी रुचि रही है। ब्यावर चातुर्मास का प्रसंग है - नाना गुरु को सेवा के संपूर्ण दायित्व का निर्वहन करते हुए लघु सिद्धान्त कौमुदी (एक विशाल ग्रंथ) का अध्ययन करना था। दोनों वृद्ध संतों का एवं अपना संपूर्ण कार्य करते हुए आप अपना अध्ययन भी बराबर करते रहे। आपके अध्यापन का संपूर्ण दायित्व पंडित मुनिश्री जौहरीलालजी महाराज साहब पर था।

सेवा का कार्य करते हुए जब भी अवकाश मिलता, आप अध्ययन में तल्लीन हो जाते। जब आपका लघु सिद्धान्त कौमुदी का अध्ययन 10 गण तक पूर्ण हो गया तो उतने ग्रन्थ की परीक्षा लेने का निश्चय किया गया और परीक्षक पंडित दुग्धनारायणजी शास्त्री को नियुक्त किया गया। यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि परीक्षा, वह चाहे किसी भी विषय की हो मन में एक गंभीर, प्रेरणाप्रद हलचल मचा देती है। नाना गुरु की भी यही स्थिति बनी। जिस दिन परीक्षा होने वाली थी, उसकी पूर्व रात्रि को उन्होंने जागरण करके ऐसे विशाल ग्रन्थ का स्मृति के बल पर दस ही गण का आद्योपान्त साधनिका सहित परावर्तन किया। परिणाम

में उत्तीर्णता प्रथम श्रेणी से प्राप्त कर ली।

सुना आपने - "सारा कार्य करते हुए।"

हाँ ऑण्टीजी! लेकिन उनके पास टाईम कैसे बचता ?

यही बात आपको समझना है कि आपके पास टाईम क्यों नहीं बचता - आप पढ़ाई भी टी.वी. देखते हुए करते हैं, कभी बीच में मोबाइल भी शुरू हो जाता, कभी बातें भी करने लगते।

इन सब कारणों से आपका एक घंटा का कार्य पूर्ण होने में दो घंटा लग जाता और माइंड की स्थिरता भी नहीं रहती। भगवान ने फरमाया - एक समय में एक काम होता है। और आपका प्रयास सभी कार्य एक साथ करने का रहता इसलिए आपके कार्य में गुणवत्ता भी नहीं आती है।

इसलिए हमारा लक्ष्य बने कि हम जो भी कार्य करें एकाग्रता से। आप लोगों की जो दिनचर्या है उसमें प्रतिदिन स्नान करना, उसमें बहुत सारा पानी वेस्ट करना। कपड़े पहनते समय कपड़ों का चयन और उसके बाद दर्पण के सामने आपका कितना समय व्यर्थ चला जाता है।

प्रतिदिन स्नान करना जरूरी नहीं है। स्नान करते समय भी प्रतिदिन साबुन का प्रयोग जरूरी नहीं है। इससे हमारी स्कीन भी खराब होती है और छः काय के जीवों की भी भारी हिंसा होती है।

खाने-पीने का समय फिक्स होना चाहिए। बार-बार थोड़ा -थोड़ा खाने से पेट खराब होता है। एक बार से दूसरी बार खाने में कम से कम 3-4 घंटे का अन्तराल होना चाहिए। जब भी कुछ खायें वह शुद्ध, सात्विक और घर पर बनाया हुआ होना चाहिए।

कुछ बच्चे : हमको ठंड में एक दिन छोड़ के एक दिन स्नान नहीं करने का नियम करवा दो और साबुन भी हम सप्ताह में दो बार ही काम में लेंगे।

बहुत अच्छा! हमारे छोटे-छोटे नियमों से हमारा जीवन व्यवस्थित बनता है।

नानेश चालीसा.....

* * *

नाना गुरु की साहित्यिक कृतियाँ

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

क्या नाना गुरु साहित्य भी लिखते थे ?

हाँ नाना गुरु ने अपने जीवनकाल में अपने अथक प्रयास से अध्यात्म जगत में एक खजाना प्रस्तुत किया है। इस खजाने में जीवन के हर पहलू का समाधान है, जीवन की कई ग्रंथियां सुलझा रखी हैं - जीवन क्या है ? जगत क्या है ? आत्मा क्या है ? जगत् व आत्मा का क्या सम्बन्ध है ? जीवन में उत्क्रांति कैसे हो सकती है ? बंधन क्या है ? मुक्ति क्या है? इन विविध पहलुओं का निरूपण उन्होंने अपने प्रवचन के माध्यम से किया है और श्रोताओं ने उसे लिपिबद्ध किया है। उनके प्रवचन की लगभग 50 पुस्तकें उपलब्ध हैं।

जिणथम्मो नामक ग्रन्थ में जैन दर्शन के आदि मंत्र नवकारमंत्र से लेकर महानिर्वाण तक का सर्वांगपूर्ण विवेचन किया है। हमें यह ग्रंथ जीवन में कम-से-कम एक बार अवश्य पढ़ना चाहिए।

हमारे कषाय हमें इस संसार अटवी में परिभ्रमण करवा रहे हैं और हम जहां हैं, वहां भी इन कषायों के कारण अमृत में जहर घोलने का कार्य कर रहे हैं। इस हेतु कषाय समीक्षण आदि पुस्तकों के माध्यम से हमें ज्ञान मिलता है। आचार्य श्री नानेश (नाना गुरु) की साहित्य रूप में कृतियाँ -

जिणधम्मो	ऐसे जीयें भाग-1
आपका भविष्य आपके हाथ	अनुभूति के क्षण
किंजीवनम्	सच्चा सौंदर्य
कषाय समीक्षण भाग-2	क्रांतिकारी कदम आगे बढ़ते रहें
लक्ष्य भेद	समीक्षण करें मन का

अध्यात्मिक ज्योति
संस्कार क्रांति भाग-2
कुमकुम के पगलिए
बनो अभय तो पाओ जय
पावस प्रवचन
समता दर्शन और व्यवहार (अंग्रेजी)
प्रवचन पीयूष
गुणस्थान स्वरूप और विश्लेषण
देवता दोनों बार हारे
अपने को समझें
दु:ख और सुख
सर्वत्याग की साधना
गहरी पर्त के हस्ताक्षर
नल दमयंती-2
अंतर के प्रतिबिम्ब
कर्मप्रकृति भाग-2
आदर्श भ्राता
वह पांव और ये पांव
बुद्धि कभी हारती नहीं
झोपड़ी की आग महल में
जिणधम्मो-1 (गुजराती)
मुनिधर्म और ध्वनि-वर्धक यंत्र

सर्वमंगल सर्वदा
मन की माला
दृष्टांत सुधा
अंगुली से उपजा डोला
नवनिधान
कर्मप्रकृति भाग-2
एकै साधे सब सधे
समीक्षण धारा
आत्म साक्षात्कार
समीक्षण ध्यान एक मनोविज्ञान
समतादर्शन और व्यवहार
ऐसे जीयें भाग-2
ज्योतिर्मय की ज्योतिधारा
शांति के सोपान
चेतन अपने घर आओ
समता मति गति दृष्टि की
मनुष्यों को देवताओं का नमन
निर्वाण और ज्योति
उभरते प्रसंग
नल दमयंती (प्रथम)
अखण्ड सौभाग्य
निर्ग्रन्थ परंपरा में चैतन्य आ...

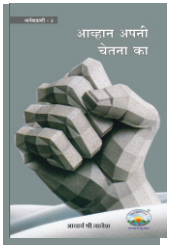

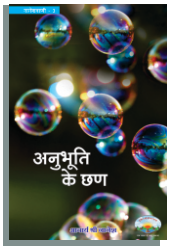

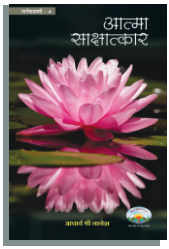

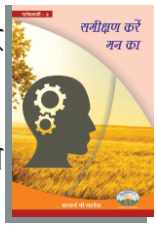

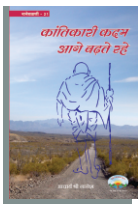

एक रात बीती
धुल गये खून के हाथ
वह खाण्डे की धार चली
अभिमान हाथी का
जिणधम्मो भाग-2 (गुजराती)
जलते जाये जीवन द्वीप
कफन की कड़ी कसौटी
विजय के ऊपर विजय

अंतगढ दशाओं
आह्वान अपनी चेतना का
कषाय समीक्षण भाग-1
परदे के उस पार
संस्कार क्रांति भाग-1
समता निर्झर
ताप और तप

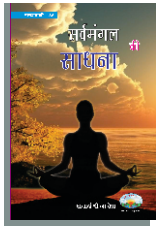

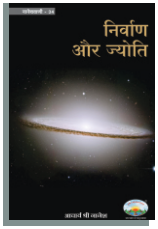

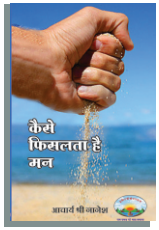

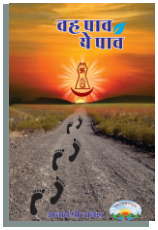

उनका साहित्य जन साहित्य है। उनका लक्ष्य साहित्य रचना नहीं, जन-जन को उद्बोधन देना था। साहित्य निर्माण तो उनकी साधना का मात्र एक पक्ष था और समीक्षण ध्यान योग साधना का दूसरा पक्ष था।

अपने-अपने मान्य धर्म का प्रचार तो सब करते हैं किन्तु आचार्य श्री नानेश ने अन्य धर्मों के सिद्धान्तों को भी गहराई से समझा था। सभी धर्मों में निहित धर्म के शाश्वत तत्वों की उन्होंने पहचान की थी और एक ऐसी समन्वित धर्मदृष्टि का विकास किया था जिसकी परिधि में संपूर्ण धार्मिक-अध्यात्मिक चिंतन समाविष्ट हो जाता है। उनके साहित्य में अनोखी बोधगम्यता थी।

बहन! ये सारी बातें सुनकर लगता है इतना विशाल कार्य क्या एक 60 वर्ष के साधु जीवन में संभव है। हाँ करोड़ पूर्व आदि लम्बी आयुष्य हो तो कोई आश्चर्य का कार्य नहीं है। किन्तु इतनी छोटी आयु में तो नाम है नाना, काम विशाल। 101 प्रतिशत सही है।

हम आपकी बातें सुनते हैं तो विश्वास नहीं होता है कि पंचम आरे के मानव द्वारा यह सब कैसे संभव है ?

आपका आश्चर्य सही है। वे इंसान नहीं फरिश्ता थे।

* * *

जाति-सम्प्रदाय से उपरत

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र.....

रीना बहन! आपकी बातें सुनकर मेरे मन में एक प्रश्न उठा - इतने महान् व्यक्तित्व के धनी नाना गुरु किसी जाति विशेष के ही बनकर रहे क्या ?

आपने बहुत अच्छा प्रश्न किया है। रतलाम चातुर्मास के पश्चात विचरण करते हुए नाना गुरु, श्री सेवंतमुनिजी महाराज साहब, श्री अमरचंदजी महाराज साहब एवं श्री कंवरचन्दजी महाराज साहब आदि ठाणा नागदा पहुँचे। नागदा और उसके आस-पास अछूत समझी जाने वाली बलाई जाति बहुत भारी संख्या में निवास करती है। दिनांक 22 मार्च, 1964 चैत्र शुक्ला दशमी सं. 2021 को गुराड़िया ग्राम में सामाजिक प्रसंग से एकत्र बलाई अबाल-वृद्ध 13 हजार लोगों ने नानागुरु के उद्बोधन से प्रभावित होकर सात कुव्यसन त्याग की प्रतिज्ञा ग्रहण की। 13 हजार लोगों ने स्वयं नाना गुरु से इसी शुभ दिन बलाइयों से धर्मपाल के रूप में नवीन नामकरण प्राप्त किया और उत्तम जीवन जीने की प्रतिज्ञा की।

यह धर्मपाल क्रांति आज शिक्षा, संस्कार, स्वावलंबन और व्यसन मुक्ति का एक कीर्ति स्तंभ बन चुकी है।

वहाँ समय-समय पर विचरण करते हुए संत-सतीयांजी पधारते हैं, उन क्षेत्रों में संस्कार पाठशाला एवं समता-भवन भी हैं। कई धर्मपाल भाईयों को प्रतिक्रमण-सामायिक भी याद हैं और वे समय-समय पर धर्म लाभ लेते हैं।

लेकिन बड़े-बड़े सेठिया लोगों के बीच उनको कहां स्थान मिलता होगा ?

इस सम्बन्ध कल चर्चा करेंगे। आज समय हो गया है।

नानेश चालीसा.....

* * *

जहा पुण्यस्स-तहा तुच्छस्स

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

आचार्य श्री नानेश के जीवन में वीतराग भगवान् की वाणी - "जहापुण्णस्स - तहा तुच्छस्स" चरितार्थ थी।

एक बार का प्रसंग है - बड़े-बड़े सेठ लोग अपने-अपने क्षेत्रों की विनतियां कर रहे थे। नाना गुरु ने फरमाया - आप लोगों की विनतियाँ मैं अपनी झोली में रख लेता हूँ। आगे जैसी स्थिति होगी, सूचित किया जा सकेगा आदि भाव व्यक्त किये तथा आगत संघ प्रमुखों को मध्यान्ह एवं रात्रि प्रतिक्रमण के पश्चात् विचार-विमर्श के लिए समय देने का विचार कर ही रहे थे कि प्रवचन स्थल पर ही श्री सीतारामजी धर्मपाल (बलाई जाति के प्रमुख) पाटे के पीछे आकर खड़े हो गये और आचार्य देव से निवेदन करने लगे - गुरुदेव! आज आपश्री के बड़े-बड़े सेठिया भक्त तो बहुत आये हुए हैं, किन्तु आपश्री ने जो मिशन हाथ में लिया है - अछूत्तोद्धार का, उसका भी आज बहुत बड़ा कार्य हो सकता है। इसके लिए आपश्री को इन बड़े भक्तों को छोड़कर हम छोटे दीन भक्तों के मध्य चलना होगा।

नानागुरु ने मुस्कुराते हुए कहा - क्यों ऐसी क्या बात है ?

आप लोगों के लिए तो मेरे पास पहले समय है, आप क्या कहना चाहते हैं, स्पष्ट करें।

गुरुदेव कल यहां से तीन-चार मील की दूरी पर हमारे समाज के सैकड़ों व्यक्ति एकत्रित होने वाले हैं। इस अवसर पर यदि आपश्री का वहां पदार्पण हो जाए तो हम पर बड़ा उपकार होगा। वहाँ हमारे समाज के कुछ मुख्य अगुआ व्यक्ति भी आने वाले हैं। अत: यदि आज शाम को ही वहां पधार कर रात्रि-विश्राम वहीं करे तो उन लोगों से रात्रि में कुछ चर्चा भी हो सकेगी और इसका प्रभाव

इस संपूर्ण क्षेत्र में अच्छा पड़ेगा। श्री सीतारामजी ने कुछ संकोचपूर्वक विनम्र शब्दों में स्पष्ट किया।

नानागुरु ने उनकी विनती पर विचारात्मक स्वीकृति फरमाते हुए कहा - आप निश्चिंत रहे। मैं विचार करके उचित अवसर देखूंगा। आचार्य श्री ने तत्काल व्याख्यान के प्रसंग पर विशेष कुछ नहीं फरमाते हुए मंगल पाठ सुना दिया। मध्यान्ह में अपने बड़े-बड़े आगन्तुक भक्तों को छोड़कर "जहां पुण्णस्स कत्थइ तहा तुच्छस्स कत्थई" के महावीर संदेश को साकार करते हुए चुपचाप अन्य तीन शिष्यों को साथ लेकर श्री सीतारामजी आदि कुछ धर्मपाल बन्धुओं के साथ नागझिरी (ग्राम) के लिए प्रस्थान कर दिये।

यह प्रसंग सुनकर आपको स्पष्ट हो गया होगा कि उन महापुरुष के मन में बड़ा-छोटा और जाति-पाति का भेद नहीं था। उनकी दृष्टि में प्राणी मात्र के कल्याण की भावना थी।

वे हर व्यक्ति का उत्थान चाहते थे।

नानेश चालीसा.....

जय नानेश - जय रामेश

* * *

अछूतोद्धारक

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

कल अपनी बात छोटे-बड़े और नानागुरु पर चल रही थी। इस बात से उपर अछूतोद्धारक नानागुरु के जीवन का एक प्रसंग है -

वि.सं.2006 जयपुर हिण्डौन मार्ग। करौली के आस-पास छोटा सा गांव, सूर्यास्त का समय, नानागुरु मुनि अवस्था में अन्य संतों के साथ एक पंचायत भवन के निकट पहुंचकर देखते हैं तो एक व्यक्ति बरामदे में बैठा हुआ दिखाई दिया। उससे पूछा - "क्यों भाई! यह भवन ग्राम पंचायत का है या किसी व्यक्ति विशेष का?" उत्तर मिला - ग्राम पंचायत का मकान है और इसकी देखरेख मैं ही करता हूँ।

मुनिश्री ने पुन: प्रश्न किया - क्या हम यहाँ रात्रि विश्राम कर सकते हैं ? आपकी अनुमति हो तो।

"नहीं महाराज मैं आपको अनुमति नहीं दे सकता।" उस व्यक्ति ने संकोच पूर्वक उत्तर दिया।

मुनिश्री ने जिज्ञासा के साथ कहा - "क्यों क्या बात है?

उसने अति संकोच के साथ कहा - "महाराज! मैं हरिजन हूँ।"

तो इससे क्या हुआ ?

आप हरिजन की अनुमति से ठहर सकेंगे क्या ?

"क्यों नहीं भाई! हम लोग जातिवाद को जन्मना नहीं मानते हैं, कर्मणा मानते हैं और उससे भी अधिक छुआछूत में कतई विश्वास नहीं रखते।"

"तो क्या आप मुझे अपने पैर छूने देंगे ?"

वैसे हम पैर छूने को नहीं कहते। लेकिन कोई भी व्यक्ति पैर छू सकता है। इसमें हमें कोई ऐतराज

नहीं है। मैंने पहले ही कहा है कि हम छुआछूत को बिल्कुल नहीं मानते हैं। हम तो इसका विरोध करते हैं। इंसान ही नहीं, संसार के प्रत्येक प्राणी को आत्मवत् मानते हैं। इंसान की दृष्टि से तो आप भी हमारे भाई हैं। प्रभु महावीर ने कहा - जन्म से कोई जाति नहीं होती है। कर्म से ही व्यक्ति ब्राह्मण होता है, कर्म से ही क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र होता है। एक व्यक्ति जन्म से शुद्र कुल में उत्पन्न होकर आचरण से पवित्र है तो वह ब्राह्मण कहला सकता है। इसके विपरीत ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर आचरण एवं कर्म से भ्रष्ट है तो वह ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी नहीं है। जो जैसा करता है, उसी में से उसके होने की कसौटी बनती है। तुम हरिजन नहीं हो, इंसान हो।

वह हरिजन भाई, जो तल्लीनतापूर्वक मुनिश्री की बात सुन रहा था, उठकर सभी मुनियों के चरण-स्पर्श कर भाव विभोर हो जाता है और कहता है - मुनिश्री! मुझे क्षमा करें। आप को इतनी देर खड़े रहने की तकलीफ दी। आप आराम से यहाँ ठहरें। यह पूरा मकान खाली है।

उपस्थित जैनेतर बच्चे और महिला - क्या हम भी जैन बन सकते हैं ?

क्यों नहीं! आपने इस प्रश्न के उत्तर अच्छी तरह सुन लिये हैं।

हाँ। इसीलिये तो हम पूछ रहे हैं।

जिस-जिसकी भी इच्छा हो तैयार हो जाना। हम दिन निश्चित करके आपको बता देंगे। हमारे गुरु महाराज पास के ही शहर में पधार रहे हैं। आप उनके दर्शन करके, उनके सामने अपनी भावना रख देना।

ठीक है। लेकिन रविवार का दिन होगा तो ठीक रहेगा, बच्चों की भी छुट्टी रहेगी।

हाँ बहन रविवार देखकर ही चलेंगे।

नानेश चालीसा.....

* * *

नौ महीने केवल मट्ठा ही

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

मौलिक - आज मेरी मम्मा पाठशाला में नहीं आयेगी। आज मैं आपको बहुत अच्छी बात बताऊंगा, जो मैंने दादी से सुनी है।

आजकल हमारे खाने के समय मम्मी को बहुत परेशान होना पड़ता है और बनाते समय बहुत सोचना पड़ता है क्योंकि हमारे खाने में बहुत नखरे और अलग-अलग पसंद होती है। हमारे कारण हमारी मम्मियों का कितना टाइम वेस्ट होता है और हमारा भी। हम रोज नानागुरु के जीवन प्रसंग सुन रहे हैं तो हमारा लक्ष्य उनके जैसे बनने का होना चाहिए -

नानागुरु के मुनि अवस्था में परिश्रम की अधिकता एवं रूक्ष आहार लेने से आंतों में रुक्षता आ गई, परिणामत: पाचनशक्ति कमजोर हो गई और दस्त लगना प्रारम्भ हो गया। वैद्यराजजी को दिखाया गया। वैद्याराजजी ने कहा - बीमारी पुरानी है, अत: उपचार भी लंबे समय तक चलेगा। खान-पान आदि पथ्य-परहेज में, मेरे निर्देशानुसार चलना पड़ेगा। अन्यथा मैं इसमें हाथ नहीं डालता। तब आचार्य श्रीजी ने कहा - "इसकी चिंता आप न करें। आप कहे तो मैं केवल पानी पर भी रह सकता हूँ।"

तब वैद्यराजजी ने कहा - "जब

तक उपचार चलेगा, आपको केवल मट्ठे पर रहना होगा।" नानागुरु ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। लगभग नौ महीने तक औषधि चली, जिसमें केवल मट्ठा ही लिया। अन्य पदार्थों की तो बात दूर रही, नौ महीने तक पानी की एक बूंद भी ग्रहण नहीं की।

वैद्यराजजी कहने लगे - "महाराज! इतना संयमी मरीज मुझे कभी नहीं मिला। आपने अपने आप पर बहुत नियंत्रण साध लिया है। 'वैद्य भक्तो जितेन्द्रिय' की उक्ति आप पर पूर्णतः घटित होती है।

बच्चे - मौलिक को बहुत-बहुत धन्यवाद। आज मौलिक की बात सुनकर हम सब संकल्प करते हैं कि - हम खाने में कोई फरमाइश नहीं करेंगे, जो बनेगा वह चुपचाप खा लेंगे।

महिलाएं - वाह! रीना बहन ने तो बेटा ऐसा तैयार कर दिया कि माँ को पीछे छोड़ रहा है। जब रीना बहन समझाती हैं तब तो कुछ बच्चे तैयार होते हैं किन्तु आज तो सभी बच्चों ने बहुत कठिन संकल्प किया है।

सभी बच्चों को हमारी तरफ से धन्यवाद। इस प्रसंग पर मैं सभी बच्चों को पुरस्कृत करूंगी और आशा रखूंगी की सभी इस संकल्प का जीवन भर पालन करेंगे। मेरे साथ वाली बहनों से भी मैं निवेदन करूंगी कि बच्चे इतना बड़ा संकल्प कर रहे हैं तो कम-से-कम हम भी इस अवसर पर इतना सा तो संकल्प करें कि सभी चाइनीज डिश-पिज्जा, बरगर, मैगी आदि हम खाने में काम नहीं लेंगे।

कुछ बहनें भी संकल्प करती हैं।

नानेश चालीसा.....

जय नानेश - जय रामेश

* * *

गुरु मेरी भूल हो गई

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

मयंक - आज मौलिक की मम्मी, रीना ऑण्टीजी ने क्लास संभालने का कार्य मुझे सौंपा है। आप सबको पता है, मैं जैन कुल में जन्मा बालक नहीं हूँ, लेकिन मौलिक की मम्मी की प्रेरणा से मैं और मेरे मम्मी-डैडी जैन धर्मानुयायी बने हैं। हमने नानागुरु को नहीं देखा है किन्तु उनके जीवन के घटना-प्रसंग सुनकर ही हमने जीवन बदलने का प्रयास किया है। एक दिन मेरे हाथ से मौलिक का ग्लास टूट गया था तो मौलिक मुझ पर नाराज हो रहा था। मौलिक की मम्मी ने हम दोनों को समझाते हुए नाना गुरु की क्षमा के बारे में एक घटना सुनाई थी -

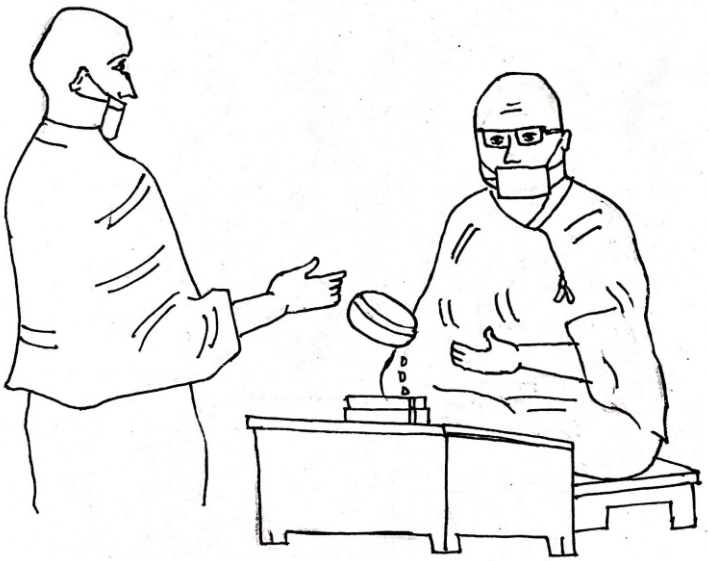

सन् 1987 में इंदौर वर्षावास के अन्तर्गत एक दिन नाना गुरु की सन्निधि में संत एवं महासतियांजी महाराज साहब भगवती सूत्र पर (एक शास्त्र) नया लिखा हस्तलिखित विवेचन मनन कर रहे थे। तभी एक लघु मुनि गुरुदेव के लिए धोवन पानी लेकर आए। गुरुदेव पात्र पकड़ते उससे पूर्व ही मुनि के हाथ

से पात्र छूट गया और हस्तलिखित कागज भीग गया। कई जगह से तो शब्द ही मिट गये। ऐसी विषम स्थिति में भी गुरुदेव ने सेवाभावी मुनि से यही कहा - "मुझसे भूल हो गई, कितना अच्छा होता अगर मैं शीघ्र पात्र पकड़ लेता। तुम तो सेवा करते हो, मैं भूल करता हूँ।"

सभी का चिंतन चल पड़ा - ऐसी दुर्लभ वस्तु का नुकसान हो गया फिर भी धन्य है ऐसी आत्मा को, जिन्होंने डाँटना तो बहुत दूर बल्कि दूसरे की भूल को भी स्वयं के सिर ओढ़ लिया।

हम तो छोटी-छोटी चीजें जो थोड़े से रुपयों में बाजार से खरीदी जा सकती हैं उसके भी इधर-उधर होने पर एक-दूसरे पर बिगड़ जाते हैं और अपने मधुर सम्बन्धों को धूमिल कर देते हैं।

बहनें - वाह रीना बहन! तुमने तो कमाल कर दिया, तुम्हारी पाठशाला वास्तव में संस्कार पाठशाला है। इन छोटे-छोटे बच्चों के जीवन की यह कला, भविष्य में बहुत अच्छे नागरिक के रूप में उभरेगी।

धन्यवाद मयंक। आपने बहुत अच्छी बात बताई, साथ ही आप और आपके परिवार के जीवन परिवर्तन के लिए भी धन्यवाद।

बच्चे - मयंक की बात पर भी हम सब संकल्प करते हैं कि छोटी-छोटी गलती होने पर हम एक-दूसरे से झगड़ा नहीं करेंगे। हम कोशिश करेंगे कि हमारे साथियों द्वारा बड़ी से बड़ी गलती होने पर भी हम उसे क्षमा करें।

नानेश चालीसा.....

जय नानेश - जय रामेश

* * *

मर्यादाओं के रक्षक

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

हमने तो सोचा था - रीना बहन आज भी नहीं पहुँच पायेंगी, क्योंकि आज तो आपकी सहेली के यहां खास कार्यक्रम था।

(रीना - बीच में बोलते हुए-)

आपका अनुमान बिल्कुल सही है, लेकिन आपको पता होगा वह कार्यक्रम "फाईव स्टार होटल" में हैं। आपने उस होटल को देखा होगा। वह वेज और नॉनवेज दोनों है।

उससे आपको क्या फर्क पड़ता है, उसका नॉनवेज वाला हिस्सा अलग है।

नॉनवेज वाला हिस्सा दिखने में भले अलग है, लेकिन वहां बनने वाले भोजन के बर्तन तो अलग नहीं हैं, चाकू, मिक्सर आदि सभी साधन एक ही हैं और मैंने तो सुना है रसोईया भी एक ही है। ऐसी स्थिति में शुद्ध शाकाहारी भोजन करने वाला उस होटल का भोजन कैसे कर सकता है ? स्थान, व्यक्ति, सामग्री आदि सभी का प्रभाव पड़ता है और जिस स्थान पर मूक पशुओं की दर्दनाक आह गूंजती रहती है ऐसे स्थान पर बैठकर भोजन करने से मन कभी शुद्ध नहीं रह सकता है इसलिए मैं वहां नहीं गई।

दूसरी बात यह है कि उस होटल में अन्दर जाने के लिए लगभग 50-60 कदम हरी-हरी घास पर पैर रखकर चलना पड़ता है।

हरी घास पर कदम रखकर चलना तो बहुत अच्छी बात है। आजकल तो डॉक्टर कहते हैं - हरी घास पर घूमने से आँखों की ज्योति ठीक रहती है।

बस करो बहन। डॉ. की बात अलग है लेकिन सोचिये जरा किसी मूक प्राणी को कष्ट देने वाला क्या कभी सुख प्राप्त कर सकता है, यह सब मन का भ्रम है कि हरी घास पर चलना और कच्चा

सलाद खाकर अपने आपको स्वस्थ और शक्तिशाली समझना। कल्पना करो कि - आपकी अंगुली पर हल्का-सा चीरा लग जाए और उस पर कोई मिर्च मसाला डाल दे तो कैसा लगेगा ?

एक बच्चा - मिर्च-मसाला लगाना दूर रहा, मेरी अंगुली में हल्की सी खरोंच आ गई थी उससे मुझे खाना खाने में भी मुश्किल आती है।

बिल्कुल सही कहा आपने। हर कष्ट को और हर व्यवहार को व्यक्ति पहले अपने साथ करके देखे तो उसे पता चले कि कैसा लगता है ?

बच्चा - लेकिन घास तो निर्जीव है।

यही तो हमारी अज्ञान अवस्था है, हम पहले जीव-अजीव को जानें - (जीव-अजीव का विस्तृत विवेचन समझाने के बाद)

क्या पांच स्थावर को भी कष्ट होता है ? उनको तो कुछ महसूस नहीं होता है ?

भगवान ने पांच स्थावर के कष्ट के लिए फरमाया है - जैसे किसी वृद्ध व्यक्ति के मुंह और नाक, कान, आंखें कपड़े से बांध दी जाए और उस पर कोई हथौड़े से प्रहार करे तो उसको जैसा कष्ट होता है, वैसा कष्ट वनस्पति आदि पांच स्थावर को स्पर्श मात्र से होता है। उस पर चलने, बैठने और चीरा लगाकर नमक-मिर्च डालने पर तो कितना कष्ट होता होगा ? लेकिन जैसे वह वृद्ध व्यक्त नहीं कर सकता और नहीं विरोध कर सकता है मजबूरी में चुपचाप सहता है। वैसे ही वे बेचारे जीव हमारे द्वारा दिये जाने वाले कष्ट को सहते हैं। नाना गुरु की इन छोटे जीवों के प्रति अनुकंपा कैसी थी सुनो -

एक बार का प्रसंग है - गुरुदेव विहार करते हुए रास्ते में चल रहे थे। गुरुदेव को प्यास लगी। साधु जीवन की मर्यादा है कि खड़े-खड़े धोवन पानी नहीं पीना। अगर एक बूंद भी ऊपर से गिर जाय तो एक उपवास का प्रायश्चित आता है।

क्यों ?

ऊपर से कोई भी वस्तु गिरती है तो बीच में रहे हुए सूक्ष्म जीव तथा वायुकाय के जीव, जिसे विज्ञान भी मानता है ठसाठस भरे हुए हैं, उनको कष्ट पहुँचता है।

धोवन पानी बैठकर पीने का स्थान 1-2 कि.मी. तक भी नहीं आया कारण की खेत की पतली-सी पगड़ंडी पर चल रहे थे। पैर रखने जितना ही स्थान था; बैठने पर हरी घास से संघट्टे की (स्पर्श की) संभावना थी। ऐसी स्थिति में संत फरमाने लगे - "भगवन्! आप खड़े-खड़े ही धोवन आरोग

लें, कब तक प्यासे विहार करेंगे।" नानागुरु का चिंतन चल रहा था - "आज मैं परिस्थितियों से पीऊंगा, कल मुझे देखकर कोई बिना परिस्थिति भी पी सकता है। मेरे द्वारा मर्यादा भंग होना उचित नहीं है, अनुशास्ता ही अनुशासन तोड़े तो अनुशासितों का तो कहना ही क्या ?" ऐसी थी नानागुरु की संयमनिष्ठा और एकेन्द्रिय जीवों के प्रति करूणा।

एक बार विहार करते हुए गुरुदेव की राह में हरी घास आ गई। गुरुदेव ने कई कि.मी. का चक्कर लेकर उस ग्राम में पहुंचना मंजूर किया किन्तु एक कदम भी हरी घास पर नहीं रखा।

कभी किसी वस्त्र का एक छोर भी गुरुदेव को हिलता हुआ दिख जाता तो वे उसे भी उठाकर सही तरीके से रख देते ताकि वायुकाय की अयतना न हो। एकेन्द्रिय जीवों के प्रति जिसके दिल में ऐसा हमदर्दी का दरिया बहता हो वे नानागुरु ध्वनिवर्धक यंत्र का प्रयोग कैसे कर सकते हैं। घाटकोपर चातुर्मास में संवत्सरी पर सात स्थानों पर प्रवचन देना मंजूर कर लिया पर ध्वनि वर्धक यंत्र का प्रयोग नहीं किया। उन्हें महाव्रतों के साथ समझौता पसंद नहीं था। उसी घाटकोपर में संघ अध्यक्ष श्री वज्जूभाई ने बड़े आह्लाद भाव से कहा था - "आचार्य महाराज मर्यादा मांमक्कम छे।"

आज बहुत देर हो गई है लेकिन इतना सुनने पर हमको भी कुछ चिंतन करना होगा -

बच्चे एवं बहनें - हम हरी घास पर जान बूझकर पैर नहीं रखेंगे और कच्चा सलाद नहीं खायेंगे।

धन्यवाद।

नानेश चालीसा.....

(जाते हुए एक बहन)

आपने दो दिन छुट्टी मनाई किन्तु आपके पुरुषार्थ से हमारे छोटे-छोटे मास्टर तैयार हो गये। मौलिक और मयंक ने आपकी अनुपस्थिति में बहुत अच्छी घटनायें सुनाई और उससे प्रभावित होकर हमने संकल्प किये।

रीना बहन - यह तो सब गुरु महाराज की कृपा है उनका व्यक्तित्व ही ऐसा था। मैं तो मात्र निमित्त हूँ।

आपने निमित्त बनकर बहुत अच्छा कार्य शुरू किया है।

नानेश चालीसा.....

जय नानेश - जय रामेश

* * *

प्रभुता में लघुता

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

एक बहन - नाना गुरु के इतने शिष्य और भक्त थे, उनको कुछ काम भी नहीं करना पड़ता होगा।

इतने दिन हो गये आपको नाना गुरु के बारे में सुनते हुए लेकिन आपने अभी तक नाना गुरु को समझा नहीं है।

नानागुरु के जीवन में प्रभुता में लघुता थी। गुरुदेव प्रवचन, साधु जीवन की मर्यादाओं का पालन, दिनचर्या, अध्ययन और अध्यापन के साथ-साथ मुमुक्षु आत्माओं को भी विशेष समय देते थे। 21 दीक्षा, 25 दीक्षा आदि एक साथ एक आचार्य की नेश्राय में होना इतिहास में नया कीर्तिमान ही था। इतनी प्रभुता प्राप्त होने के पश्चात् भी उनके जीवन में लघुता ही परिलक्षित होती थी। वे किसी भी साधु-साध्वी को शिष्य-शिष्या के रूप में नहीं मानते थे। यही फरमाया करते थे कि - "आप तो मेरे भाई-बहिन हो।" कितनी लघुता विनम्रता ?

बोटाद (काठियावाड़) विचरण का प्रसंग है। लिम्बड़ी संप्रदाय के एक संत श्री उत्तराध्ययन सूत्र के 32वें अध्ययन की एक गाथा "कप्पं न इच्छेज्ज सहाय लिच्छु" के अर्थ को समझना चाहते थे। आचार्य श्री के पास पहुँच उक्त गाथा के अर्थ को समझाने की भावना व्यक्त की। आचार्य श्री ने फरमाया - यह गाथा उस भिक्षु से सम्बन्धित है जो इन्द्रिय विषयों का लोलुपी है, जो वासनाओं के शिकंजे में है, ऐसा साधु किसी भी कल्प मर्यादा की इच्छा नहीं करता। जितनी भी मर्यादाएँ हैं, वे उसे बंधन स्वरूप लगती हैं, वह उनमें बंधन नहीं चाहता। इसलिए वह कल्प नहीं चाहता। काफी विस्तार से जब इस गाथा के पूर्वापर सम्बन्ध को सामने रखकर समझाया तो संत बड़े प्रभावित हुए और गुरुदेव की गरिमा की प्रशंसा करने लगे। कहने लगे कईयों से मैंने यह जानना चाहा पर पूर्ण संतुष्टि

नहीं हुई। आज मैं पूर्ण संतुष्ट हो गया। नानागुरु की ज्ञान की गहराई एवं समझाने की शैली ऐसी थी। फिर भी अहंकार नहीं।

एक बार कुछ नए जिज्ञासु युवक उनके पास आए और उनसे कहने लगे - हमें आचार्य श्री नानालालजी महाराज साहब के दर्शन करने हैं। उनका नाम तो बहुत सुना है, अब साक्षात्कार करना है। वे कहां विराज रहे हैं ?

नानागुरु ने लघुता एवं विनम्रता से कहा - "मैं ही नाना हूँ।" युवक देखते रह गए। अरे! इतने विशाल संघ के आचार्य होते हुए भी ये स्वयं को नाना कह रहे हैं। जिस संघ का नायक इतना विनम्र है, उस संघ का विकास तो निश्चित है।

उन्होंने मान को लाघवना से पराजित कर दिया था। वे सागर के समान गंभीर थे। उनके जीवन में गहराई थी। इतने बड़े-बड़े और विशाल कार्य करते हुए भी उन्हें यही लगता था मैं कुछ नहीं करता हूँ। उनकी कब रात बीत जाती है, कब दिन निकल आता है, यह पता ही नहीं चलता। संयमी जीवन में प्रत्येक क्षण जागृत रहकर गुरुदेव ने सबको जागृत रहने की प्रेरणा दी।

नानेश चालीसा.....

* * *

संयम की जागरूकता

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

कल नानागुरु की जागृत रहने की बात चल रही थी। वे स्वयं भी जागृत रहते थे एवं दूसरों को भी जागृत रहने की प्रेरणा देते थे। इस सम्बन्ध में एक प्रसंग है -

नागदा से आगे कानवन से विहार के दिन प्रात:काल सेवाभावी तपस्वी मुनि श्री अमरचन्दजी महाराज साहब किसी गृहस्थ के यहां से सिलाई हेतु एक सूई याचना करके लाए थे। कुछ असावधानी के कारण सूई धर्म स्थान में ही रह गई गृहस्थ को देना भूल गये। वहाँ से विहार हो गया। लगभग दो मील चले जाने के पश्चात् मुनिश्री को स्मरण हुआ कि मैं सूई वहीं भूल आया हूँ। मुनिराज ने तुरन्त नानागुरु से निवेदन किया कि - भगवन् सूई जो सुबह लाया था धर्म स्थान में ही रह गई। यथास्थान लौटाना भूल गया।

नानागुरु ने संयमीय मर्यादाओं की सजगता के प्रति सचेत करते हुए कहा - "एक भाई के साथ जाकर तुम स्वयं यथा स्थान सूई लौटा कर आओ।"

विहार में साथ चलने वाले श्रावक बंधुओं ने कहा, "आचार्य देव, एक सूई के लिए मुनिश्री को चार मील का चक्कर देना अच्छा नहीं होगा, हम वापस जायेंगे तो सूई ढूंढकर पहुंचा देंगे।"

आचार्य श्री ने मधुर मुस्कान के साथ कहा - "आपकी भावना प्रशस्त है किन्तु हमारी संयमीय मर्यादा कहती है कि हम अपना कार्य स्वयं करें। आज वह छोटा-सा कार्य आपसे करवायेंगे तो कल इससे बड़ा करवाने लगेंगे। इस प्रकार साधना में शिथिलता का प्रवेश होता है, दूसरी बात स्वयं जाकर देने में आगे के लिए मुनिजी को भी सूक्ष्मतम प्रवृत्ति में सजगता एवं सावधानी रहेगी। विनयमूर्ति मुनिश्री तुरन्त लौट गये और सूई यथास्थान पहुंचाकर पुन: श्री चरणों में पहुंचे।

रीना बहन! हमने तो देखा आपके जैन साधु-संतों के साथ सामान उठाने वाले भाई भी रहते है

और गाड़ियां भी उनका सामान लेकर चलती हैं।

आपकी बात किसी अपेक्षा से सही है। जैन साधु-साध्वियों में भी कई अलग-अलग मत वाले हैं। लेकिन जो नानागुरु के साधु-साध्वी हैं वे अपना सामान स्वयं उठाते हैं और अपना सारा कार्य अपने हाथों से करते हैं।

क्या उनके यहाँ खाना बनाने वाली, कपड़े धोने, बर्तन साफ करने आदि काम वाली बाई नहीं रहती है ?

नहीं। किसी के यहां भी काम वाली बाई नहीं रहती है, वे खाना स्वयं नहीं बनाते हैं और न ही अपने लिए दूसरों से बनवाते हैं। शुद्ध शाकाहारी घरों से थोड़ा-थोड़ा लेकर आते हैं जिससे उनको भी पुनः नहीं बनाना पड़े। जैसे आपने अपने परिवार के लिए चार सदस्य का खाना बनाया है तो उसमें एक-दो रोटी तो ज्यादा बन ही जाती है, बस उतनी ही कई घरों से आवश्यकतानुसार लाकर अपनी पूर्ति कर लेते हैं। वे किसी भी कार्य के लिए दूसरों को कष्ट नहीं देते। पानी भी नल, कुएं या मटके का शुद्ध पानी नहीं लेते, राख से बर्तन साफ करके धोते हैं उस पानी को हम एकत्रित करके रख देते हैं वही पानी वे पीते हैं।

(आश्चर्य से) क्या बात कर रही हो रीना बहन! जानवर भी ऐसा पानी नहीं पीते।

ऐसी बात नहीं है। वह पानी कुछ देर रखने पर राख नीचे जम जाती है, पानी फिल्टर जैसा शुद्ध और किटाणु रहित हो जाता है। इससे पानी के जीव भी उनके निमित्त से नहीं मरते हैं।

हम बर्तन तो साफ करते ही हैं, अतः वह पानी आवश्यकतानुसार स्वयं अपने हाथों से ले जाते हैं।

दक्षिणा तो लेते ही होंगे ?

दक्षिणा तो क्या, वे अपने पास एक पैसा भी नहीं रखते, साध्वियाँ कुल 96 हाथ कपड़ा और साधु 72 हाथ कपड़ा रखते हैं, उनके पास चार चार लकड़ी से बने पात्र होते हैं और कुछ कापी किताबें। इसके अलावा कोई परिग्रह नहीं। रात में तो भोजन पानी भी बिल्कुल नहीं रखते। नंगे पैर चलते हैं।

गर्मी में तो प्यास लग ही जाती है।

चाहे भूख लगे या प्यास, सूर्यास्त से सूर्योदय तक वे कुछ भी खाते-पीते नहीं हैं, चाहे प्राण भी

चले जाये।

वाह बहन! धन्य हैं तुम्हारे साधु-साध्वी को। मैंने यह भी देखा है कि वे लाईट, पंखा आदि कुछ भी काम में नहीं लेते हैं।

हाँ। वर्ष में दो बार सिर के बाल हाथ से निकालते हैं।

क्या.....

हाँ बहन। मैं तुम्हें बिल्कुल सही बता रही हूँ।

बहुत कठिन व्रत है, तुम्हारे गुरु का। इतने कठिन नियमों का पालन करते हैं तभी तो उनके नाम में इतनी शक्ति होती है। त्याग से ही मोक्ष मिलता है।

धन्य है ऐसे गुरु को। मैंने तो मेरा और मेरे परिवार का पक्का मन बना लिया है हम उन्हें ही गुरु बनायेंगे। आज की बातें सुनकर तो मेरा हृदय श्रद्धान्वित हो गया। धन्य है, धन्य है ऐसे महात्मा को।

नानेश चालीसा.....

कुछ बच्चे आपस में चर्चा करके - ऑण्टीजी! हम भी आज संकल्प करते हैं मम्मी को किसी भी कार्य के लिए आदेश नहीं देंगे। हमसे होने लायक कार्य हम स्वयं करेंगे।

बहुत अच्छा। धन्यवाद।

एक बात आप सबको बतानी है - जैसा कि आप सबको विदित है - कल हमारी पाठशाला का स्थापना दिवस है, सभी बच्चों एवं उपस्थित माताओं एवं बहनों आप सभी को अपना विचार व्यक्त करना है। विषय रहेगा - इस पाठशाला में आने के बाद आपने क्या पाया, आपके जीवन में क्या परिवर्तन हुआ और अपने जीवन भर के लिए क्या-क्या संकल्प किये हैं। सभी को बोलना अनिवार्य है। जो नहीं आये हैं उनको भी बता देना।

* * *

क्या पाया

(रीना बहन ने पाठशाला को व्यवस्थित किया तथा परिवारजनों को भी पाठशाला के स्थापना दिवस के कार्यक्रम से अवगत कराया। श्वसुरजी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा - बहू तुम्हारे कार्यक्रम के लिए कुछ भी सामग्री, सहयोग की आवश्यकता हो तो कह देना। मैं अभी नौकर को भी भेज दूंगा। तुम सब खड़े रहकर कार्य करवा लेना और तुम्हारा कार्यक्रम पूर्ण होने पर सबको कह देना - इस संडे पाठशाला की तरफ से बस आचार्य श्री रामलालजी महाराज साहब के दर्शन के लिए जायेगी। बच्चे-बड़े जो भी जाना चाहें अपना नाम लिखा देना।)

जय जिनेन्द्र!

जय जिनेन्द्र.....

(सभी निर्धारित स्थान पर बैठ गये। सभी के चेहरे पर प्रसन्नता दिख रही थी। कार्यक्रम शुरू करते हुए)

रीना बहन - आप सभी के चेहरे पर उत्साह एवं खुशी देखकर में भी प्रसन्न हूँ। आज के कार्यक्रम को प्रारम्भ करते हुए हम सबसे पहले नानेश चालीसा करेंगे.....

अब मैं सर्वप्रथम इस कार्यक्रम के लिए आमंत्रित करती हूँ मौलिक को जिसके कारण यह पाठशाला प्रारम्भ हुई है। एक बात का और ध्यान रखना है कि ताली कोई नहीं बजायेगा। सभी के बोलने के बाद हम हर्ष-हर्ष-जय-जय बोलेंगे। ठीक है।

मौलिक जैन-इस पाठशाला के कारण आप सबका मेरे घर आना होता है, इससे मुझे बहुत खुशी होती है और उससे भी ज्यादा खुशी मुझे इस बात की होती है कि यहाँ आने वाले सभी मेरे दोस्तों ने नाना गुरु के जीवन प्रसंग सुनकर सप्त कुव्यसन का त्याग किया है और उस त्याग का पूर्णरूप से सभी पालन कर रहे हैं। इस बात के लिए मैं आप सभी का बहुत-बहुत आभारी हूँ और साथ ही मेरी मम्मा का भी। सुना था - "माँ बच्चों की प्रथम पाठशाला होती है।" मेरी मम्मा ने कर दिखाया। वो कितनी भी व्यस्त हो तो भी मेरी जिज्ञासा को दबाती नहीं हैं, उसका समाधान करती हैं

और मेरी बुरी आदत को सुधारने के लिए नानागुरु के जीवन प्रसंग को सुनाती हैं। मेरी मम्मा ने ही मेरे रोम-रोम में यह प्रेरणा भरी है कि मुझे नाना गुरु जैसा बनना है। अपना सारा कार्य करते हुए हम सबको इतना समय देती हैं इसके लिए मैं अपनी मम्मा का उपकार कभी नहीं भुलूंगा। जय नानेश। हर्ष-हर्ष-जय-जय। अब आपके सामने मयंक अपनी प्रस्तुति देने आ रहा है -

जय जिनेन्द्र! मुझ में और मेरे परिवार में आज जो कुछ आप परिवर्तन देख रहे हैं, वह सब मौलिक और मौलिक की मम्मी की देन है। जिन्होंने हमारे सामने एक महान संत नाना गुरु के जीवन प्रसंग के माध्यम से हमको जैन धर्म समझाया तथा हमको मिथ्यात्व से बाहर किया है। आज मैं आप सबके सामने इनसे एक उपकार की और अपेक्षा रखता हूँ कि हमें उन गुरु के अवश्य दर्शन करवायें जिन्हें नानागुरु ने अपने अनुभव से चयन कर अपना उत्तराधिकारी बनाया। मैं उन्हें ही अपना गुरु बनाऊंगा। आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद। जय नानेश।

हर्ष-हर्ष-जय-जय। अब आपके सामने जैनिश अपनी प्रस्तुति देने आ रहा है -

जय जिनेन्द्र! मैंने जैन परिवार में जन्म लिया है लेकिन जैनत्व को मैं इस पाठशाला में आकर ही समझा हूँ। मेरी मम्मा ने नवकार मंत्र आदि सिखाये लेकिन मेरी मम्मा एक प्रोफेशनल लेडी हैं। उनके पास टाईम नहीं है। मैं आज उपस्थित मेरे मम्मी-डैडी के सामने ही कह रहा हूँ - मुझे मेरी मेड (आया), टी.वी., मोबाईल से जितने संस्कार मिले थे उसमें ही मैं अपने को ढाल रहा था, मैं अभी बच्चा हूँ विशेष नहीं समझता हूँ। लेकिन मुझे इस पाठशाला से एक मानव बनकर जीने का तरीका मिला है और एक महान गुरु के जीवन के घटना-प्रसंग सुनकर अपने जीवन में उतारने का संकल्प मेरे मन में जगा है। मैंने भी आज तक रामगुरु के दर्शन नहीं किये। नाम सुना है। मैं भी चाहता हूँ कि मेरे मम्मी-डैडी भी चलकर ऐसे गुरु के दर्शन करें और अपने जीवन का कुछ समय अपने और अपने परिवार के लिए निकालें। जय नानेश।

हर्ष-हर्ष-जय-जय। अब आपके सामने महावीर अपनी प्रस्तुति देने आ रहा है -

महावीर - मैं देशवासी (मंदिर मार्गी) परिवार का बच्चा हूँ लेकिन मैंने इस पाठशाला में आकर अहिंसात्मक धर्म के बारे में सुना है। एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीवों के बारे में जाना है। मैंने जीवन के लिए संकल्प किया है - मैं धर्म के नाम पर ऐसा कोई कार्य नहीं करूंगा, जिससे किसी जीव की हिंसा हो। मैंने जीवन में यह भी संकल्प किया है कि - मैं जीवन में गुरु उन्हीं को बनाऊंगा जो पांच महाव्रतों का पालन करते हों एवं भगवान् महावीर की आज्ञा का आचरण करते हों। साथ ही नानागुरु

के जीवन-प्रसंग सुनकर मैंने कई संकल्प लिए हैं उससे मेरे जीवन में जो परिवर्तन आया उसके लिए मैं ऑण्टी का आभारी हूँ। जय नानेश.....

हर्ष-हर्ष-जय-जय। (इस प्रकार पाठशाला के सभी बच्चों ने अपनी अभिव्यक्ति दी। अब महिलाओं का क्रम)

बच्चों ने आप सभी के सामने अपने भाव व्यक्त किये अब महिलाओं के क्रम में मैं सर्वप्रथम मयंक की मम्मी को आमंत्रित करती हूँ जिन्होंने अन्य महिलाओं को यहाँ लाने में अथक पुरूषार्थ किया है। मयंक की मम्मी यहां आयें और अपने भाव रखें -

जय जिनेन्द्र! सबसे पहले मैं अपने भाग्य का धन्यवाद दूंगी कि मुझे ऐसे पड़ोसी का संयोग मिला। आप सब जानते हो कि हम पंजाबी समाज से हैं। बच्चों के माध्यम से हमारा रीना बहन तक पहुँचना हुआ। मेरा बच्चा मयंक और रीना बहन का बच्चा मौलिक दोनों एक ही स्कूल और एक ही क्लास में पढ़ते हैं। मैं एक दिन रीना बहन के पास मौलिक की शिकायत करने आई थी। लेकिन दोनों सास-बहू के विचार सुनकर मैं ही बदल गई और अब तो मेरा पूरा परिवार ही जैन धर्मानुयायी बन गया। हमने नानागुरु को देखा नहीं लेकिन उनके जीवन वृत्तान्त को सुनकर हमारे मन में उनके प्रति इतनी श्रद्धा जागृत हो गई कि उनका नाम लेने से ही हमारे संकट दूर हो जाते हैं। हमारी हार्दिक तमन्ना है कि हम भी उनके पट्टधर आचार्य श्री रामलालजी महाराज साहब के दर्शन करें। उनके मुखारविन्द से गुरु मंत्र लेकर जीवन को आगे बढ़ायें। रीना बहन की यह पाठशाला, पाठशाला नहीं संस्कार शाला है जो आज के युग की सर्वप्रथम आवश्यकता है। हम सब इनके हृदय से आभारी हैं।

एक बात और मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगी रीना बहन प्रति रविवार को ध्यान करवाती हैं आप उसमें भी आने का प्रयास करें। ध्यान भी इस युग में स्वस्थ और प्रसन्न तथा तनावमुक्त रहने की एक अचूक औषधि है। मैं रीना बहन की प्रेरणा से दाँता गाँव भी गई। वहाँ ध्यान शिविर लगता है मैंने वह भी अटेंड किया। मुझे अवर्णनीय शांति मिली। वहाँ से आने के बाद मेरा तो स्वभाव ही बदल गया। मैं आप सबसे भी कहूंगी कि एक बार अवश्य दाँता गाँव का ध्यान शिविर अटेंड करना। जय नानेश।

हर्ष-हर्ष-जय-जय। अब आपके सामने अपने भाव व्यक्त करने आ रही हैं अविना बहन -

जय जिनेन्द्र! मैं जैनिश की मम्मी हूँ। मेरे बारे में आप जैनिश से सुन ही चुके हो। मैं स्वीकार करती हूँ कि एक माँ जो बच्चे की प्रारम्भिक पाठशाला होती है मैं नहीं बन सकी। यह मेरी बहुत बड़ी

कमी है। इस मामले में रीना बहन का जीवन प्रेरणास्पद है जो एक सम्मिलित परिवार में रहकर अपने कर्त्तव्यों को पूर्ण करके भी इतना समय हम लोगों को देती हैं। रीना बहन ने नाना गुरु के माध्यम से तथा धर्म सम्बन्धी तात्विक बातें बताकर हमारे और बच्चों के जीवन को बदल दिया है। मैं जैनकुल में जन्म लेकर भी धर्म स्थान में बचपन से ही नहीं जा सकी। इसमें किसी और का दोष नहीं है। मेरा ही दोष है क्योंकि मैंने इसका महत्व नहीं समझा। रीना बहन के यहाँ आकर मैंने महसूस किया कि धर्म बिना जीवन अधूरा है। मेरे बच्चे और मेरे जीवन को संस्कारित करने में आपकी पाठशाला की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हम चाहते हैं कि इनका आगे भी ऐसा मार्गदर्शन मिले। इन्होंने एक ऐसे गुरु की पहचान करवाई जो इस कलयुग में कल्पना से परे हैं, जैनिश के पापा मुझे कल ही कह रहे थे - इस बार संडे हम आचार्य श्री रामलालजी महाराज साहब के दर्शन के लिए चलेंगे। मैंने आपका बहुत समय ले लिया माफ करना। जय नानेश।

इस तरह बहनों ने भी अपने-अपने विचार रखे। अंत में रीना बहन - जय जिनेन्द्र! आप सब ने यहाँ पधारकर इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई और अपना अमूल्य समय दिया बहुत-बहुत धन्यवाद। आप सबके विचार सुनकर, मेरा हृदय संतुष्ट हुआ, लेकिन इस बात के लिए नहीं कि आपने मेरी प्रशंसा की, इस बात के लिए कि आप सबके मन में एक सच्चे देव, गुरु और धर्म के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई। मैंने अपने छोटे से प्रयास और मेरे श्वसुरजी की भावनाओं से जो पाठशाला का कार्यक्रम शुरू किया उसमें आप सबकी उपस्थिति और आपके बच्चों की उपस्थिति ही मेरी प्रेरणा स्रोत रही। मैंने आपको और आपके बच्चों को जैनधर्म की प्राथमिक जानकारी के साथ जिन महान आत्मा का जीवन प्रसंग सुनाने का प्रयास किया वह सागर में से एक बूंद निकालने के समान है। मैंने उन महात्मा के बारे में आपको जो कुछ सुनाया वह सिर्फ बाहर की बातें थीं। मैंने उनके बाह्य जीवन को ही देखा है। लेकिन यह तो स्पष्ट है कि किसी भी व्यक्ति की बाह्य साधना इंसान को इतनी ऊपर नहीं पहुंचा सकती है। ऊपर उठने के लिए आंतरिक साधना का विशेष महत्व है। प्रारम्भ में वे भी हमारी तरह कषाय-क्रोध, मान, माया, लोभ, राग-द्वेष सभी से ग्रसित थे। उन्होंने अपने जीवन में इन सबको हटाने के लिए अथक प्रयास किया - उन्होंने जीवन के हर प्रसंग पर अपने जीवन को बदलने का प्रयास किया इसके लिए शुरुआत चिंतन से हुई। चिंतन की गहराई बढ़ती गई और रत्न मिलते गये। दृढ़ संकल्प के साथ वे समता से हर समस्या का समाधान खोजने के लिए जूझते रहे और गहराई में पहुंच कर ऐसा समाधान खोजते कि वह अकाट्य होता। उनका चिंतन रहता मेरे द्वारा किसी प्रकार से

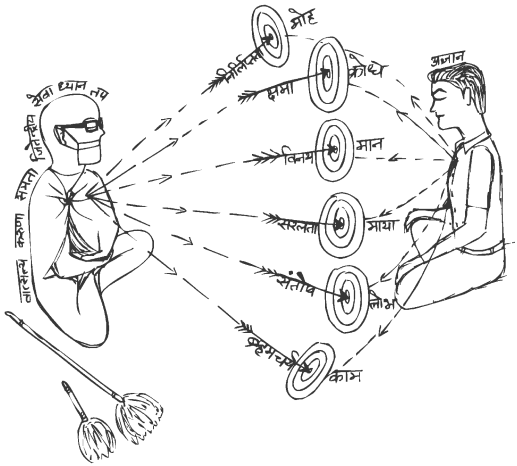

किसी भी जीव को कष्ट न पहुँचे। मैं कैसे प्रवृत्ति करूं, जिससे तीर्थंकर भगवान् की आज्ञा का भी उल्लंघन न हो और मानवोचित प्रवृति बने। कर्म को भी क्षय करना और नये कर्म का भी बंध न हो। इसके लिए उन्होंने एक सिद्धान्त अपनाया सहना-सहना सब कुछ सहना.... और भीतर में बैठे हुए कषायों पर दृढ़ प्रहार करके दुनिया के सामने समीक्षण ध्यान प्रस्तुत कर दिया। जो सिर्फ भारत में ही नहीं विदेशों में भी अपनाया गया।

इन सब बातों से हमें प्रेरणा लेना है कि जीवन में सब कुछ इंसान प्राप्त कर सकता है - युद्ध से। कौन-से युद्ध से ? हमारे भीतर रहे हुए कषाय और आठ कर्म रूपी शत्रु से युद्ध करके। किसी बाह्य शस्त्र से नहीं बल्कि स्वाध्याय, ध्यान, तप और महाव्रत रूपी तोपों द्वारा यह सबको पराजित कर सकता है। ये शत्रु सामान्य नहीं हैं बहुत शक्तिशाली हैं। इनको पराजित करने के लिए स्वयं को स्वयं से युद्ध करना है। ऐसा ही युद्ध नाना गुरु ने किया। इस युद्ध को करने वाले के भीतर ऐसी शक्ति जागृत हो जाती है कि इंसान तो क्या देवता भी उनके सामने नतमस्तक हो जाते हैं।

हम भी दृढ़ संकल्पित होकर जीवन को सही दिशा में आगे बढ़ायेंगे तो एक दिन अवश्य ही आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा स्वरूप को प्राप्त करेंगे।

अभी तक आप लोगों ने जितनी श्रद्धा और रुचि से इस पाठशाला में बताये गये आयामों को दृढ़ संकल्प से अपनाकर आचरण में उतारे हैं वैसे ही आगे भी स्वयं नियमित आयें, बच्चों को भी भेजें और अन्य व्यक्तियों को भी यहां आने के लिए प्रेरित करेंगे तो अवश्य हम हमारी भारतीय संस्कृति को जीवित रखकर एवं शांतिमय जीवन जीकर स्व-पर कल्याण कर आगे बढ़ेंगे। इन्हीं शुभ भावों के साथ जय नानेश।

एक आवश्यक सूचना : कल प्रात:काल 6 बजे अपने घर के सामने बस तैयार रहेगी, जिसको भी गुरुदेव के दर्शनार्थ चलने की भावना हो छोटे-बड़े सब समय पर उपस्थित हो जावें।

* * *